सूरतुल अहक़ाफ़-४६

سُورَةُ الأَحْقَافِ

सूर: अहकाफ़ मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पैंतीस आयतें एवं चार रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

حمٓ ①

(१) हा॰मीम॰ ।[1]

تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ②

(२) इस किताब का अवतरित होना अल्लाह शक्तिशाली हिक्मत वाले की ओर से है।

مَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُعْرِضُونَ ③

(३) हमने आकाशों तथा धरती एवं उन दोनों के मध्य की समस्त वस्तुओं को सर्वोचित व्यवस्था के साथ ही एक निर्धारित समय के लिए बनाया है,[2] तथा काफ़िर लोग जिस वस्तु से डराये जाते हैं मुख मोड़ लेते हैं।[3]

قُلْ أَرَأَيْتُم مَّا تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا

(४) (आप) कह दीजिए कि भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो,

---

[1]यह सूरह के आरम्भिक अक्षर उन मुतशाबिहात (अनुरूपों) में से हैं जिनका ज्ञान मात्र अल्लाह को है इसलिए उनके अर्थ तथा भावार्थ में पड़ने की आवश्यकता नहीं। फिर भी उनके दो लाभ कुछ भाष्यकारों ने वर्णन किये है जिन्हें हम सूर: ३१ के आरम्भ में वर्णन कर चुके हैं।

[2]अर्थात आकाश एवं धरती की रचना का एक विशेष उद्देश्य भी है तथा वह है इंसान की परीक्षा। दूसरा, उसके लिए एक समय भी निश्चित है। जब वह वचन का समय आ जायेगा तो आकाश तथा धरती की यह सारी व्यवस्था बिखर जायेगी। न आकाश यह आकाश होगा, न धरती यह धरती होगी। ﴿يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَاوَاتُ﴾
(सूर: इब्राहीम-४८)

[3]अर्थात ईमान न लाने की दशा में उन्हें पुर्नजीवन, हिसाब तथा प्रतिकार से जो डराया जाता है तो वे उस पर ध्यान ही नहीं देते, न उस पर विश्वास करते हैं, न परलोक की यातना से बचने की तैयारी करते हैं।

مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ائْتُونِي بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ أَوْ أَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ④

मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा भाग बनाया है अथवा आकाशों में कौन-सा उनका भाग है ?[1] यदि तुम सच्चे हो तो इस से पूर्व ही की कोई किताब अथवा कोई ज्ञान ही जो उद्धृत किया जाता हो, मेरे पास लाओ ।[2]

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُونَ ⑤

(५) तथा उससे बढ़कर अधिक पथभ्रष्ट अन्य कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है, जो क़यामत तक उसकी प्रार्थना न स्वीकार कर सकें बल्कि उनके पुकारने से केवल अनभिज्ञ हों ।[3]

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَآءً وَّكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِينَ ⑥

(६) तथा जब लोगों को एकत्र किया जायेगा तो ये उनके शत्रु हो जायेंगे तथा उनकी पूजा से साफ़ इंकार कर देंगे ।[4]

---

1 أَرَأَيْتُم का अर्थ أَخْبِرُونِي अथवा أَرُونِي है अर्थात अल्लाह के सिवा जिन मूर्तियों अथवा व्यक्तियों की पूजा तुम करते हो मुझे दिखाओ अथवा बतलाओ कि उन्होंने धरती तथा आकाश की रचना में क्या भाग लिया है ? अभिप्राय यह है कि जब आकाश तथा धरती की रचना में उनका कोई भाग नहीं है । बल्कि पूर्ण रूप से उन सबका विधाता मात्र एक अल्लाह है तो फिर तुम उन असत्य पूज्यों को अल्लाह की पूजा में साझा क्यों बनाते हो ।

2 किसी ईशदूत पर अवतरित किताब अथवा किसी धार्मिक उद्धरण में यह बात लिखी हो तो लाकर दिखाओ ताकि तुम्हारी सच्चाई सिद्ध हो सके । कुछ ने (أَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ) का अर्थ ज्ञान पर आधारित खुला प्रमाण किया है । इस स्थिति में किताब से तात्पर्य धार्मिक प्रमाण तथा أثارة مِن عِلم से अभिप्राय बौद्धिक तर्क होगा । अर्थात कोई धार्मिक एवं बौद्धिक प्रमाण प्रस्तुत करो । उसका प्रथम अर्थ أثر (असर) से लिया गया है अथवा بَقِيَّةٌ مِنْ عِلم पहले अम्बिया की शिक्षाओं का शेष भाग जो विश्वासनीय सूत्रों से उद्धृत होता आया हो, उसमें यह बात हो ।

3 अर्थात यही सबसे बड़े पथभ्रष्ट हैं जो पत्थर की मूर्तियों अथवा मृत व्यक्तियों को सहायतार्थ पुकारते हैं, जो क़यामत तक उत्तर देने में असमर्थ हैं तथा असमर्थ ही नहीं अपितु पूर्णरूपेण अनभिज्ञ हैं ।

4 यह विषय पवित्र क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णित है, जैसे *सूरः यूनुस-२९०, सूरः*

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ قَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧﴾

(७) तथा उन्हें जब हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो नास्तिक लोग सत्य बात[1] को जब कि उनके पास आ चुकी, कह देते हैं कि यह तो खुला जादू है।

أَمْ يَقُولُونَ ٱفْتَرَىٰهُ ۖ قُلْ إِنِ ٱفْتَرَيْتُهُۥ فَلَا تَمْلِكُونَ لِى مِنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِۦ

(८) क्या वे कहते हैं कि उसे तो उसने स्वयं बना लिया है। (आप) कह दीजिए कि यदि मैं ही उसे बना लाया हूँ तो तुम मेरे लिए अल्लाह की ओर से किसी वस्तु का अधिकार नहीं रखते ।[2] तुम इस क़ुरआन के विषय में

मरियम-८१,८२, सूर: *अल-अनकबूत-२५* आदि आयतें। संसार में इन उपास्यों के दो प्रकार हैं। एक तो निर्जीव पत्थर, पेड़-पौधे तथा सूर्य, चाँद आदि हैं। अल्लाह उनको जीवन तथा बोलने की शक्ति प्रदान करेगा तथा हमें यह वस्तुयें बोलकर बतलायेंगी कि हमें कदापि इसका ज्ञान नहीं कि यह हमारी इबादत करते तथा तेरे ईश्वरत्व में साझी बनाते थे। कुछ कहते हैं कि बोलकर नही उनकी स्थिति अपनी भावना व्यक्त करेगी والله أعلم। उपास्यों का दूसरा प्रकार वह है, जिसमें अम्बिया, फ़रिश्ते तथा धर्मात्मा हैं, जैसे माननीय ईसा तथा उज़ैर तथा अल्लाह के अन्य पुनीत बंदे। यह अल्लाह के सदन में उसी प्रकार उत्तर देंगे जैसे ईसा (अलैहिस्सलाम) का उत्तर क़ुरआन में उल्लेख है। इसके अलावा शैतान भी इंकार करेगा। जैसे क़ुरआन में उनका कथन उल्लेख किया गया है।

﴿ تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوٓا۟ إِيَّانَا يَعْبُدُونَ ﴾

"हम तेरे समक्ष अपने पुजारियों से बिलगाव व्यक्त करते हैं, यह हमारी उपासना नहीं करते थे।" *(अल-क़सस-६३)*

[1]इस सत्य से अभिप्राय, जो उनके पास आया, पवित्र क़ुरआन है। इसके चमत्कार तथा प्रभावशक्ति को देखकर वह इसे जादू कहते। फिर उससे भी हटकर अथवा उससे भी बात न बनती तो कहते कि यह तो मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपना गढ़ा हुआ कथन है।

[2]अर्थात यदि तुम्हारी यह बात सही हो कि मैं अल्लाह का बनाया हुआ रसूल नहीं हूँ तथा यह कथन भी मेरा गढ़ा हुआ है, फिर तो वस्तुत: मैं बड़ा अपराधी हूँ। अल्लाह मुझे इतने बड़े झूठ पर पकड़े बिना नहीं छोड़ेगा। तथा यदि ऐसी कोई पकड़ हुई तो फिर समझ लेना कि मैं झूठा हूँ तथा मेरी कोई सहायता भी मत करना। बल्कि ऐसी दशा में मुझे अल्लाह की पकड़ से बचाने का तुम्हें कोई अधिकार ही नहीं होगा। इसी विषय को दूसरे

شَهِيدًۢا بَيْنِى وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

जो कुछ कह सुन रहे हो, उसे अल्लाह भली-भाँति जानता है ।[1] मेरे एवं तुम्हारे मध्य साक्षी के लिए वही पर्याप्त है ।[2] तथा वह क्षमा करने वाला अत्यन्त दयालु है ।[3]

قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ أَدْرِى مَا يُفْعَلُ بِى

(९) (आप) कह दीजिए कि मैं कोई पूर्णतः नया पैग़म्बर तो नहीं[4] तथा न मुझे यह ज्ञात है कि मेरे साथ तथा तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा ।[5]

स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

﴿وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ ۝ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝ فَمَا مِنكُم مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ﴾

"तथा यदि यह हम पर कोई बात गढ़ लेता, तो अवश्य हम इसका दाहिना हाथ पकड़ लेते, फिर उसके हृदय की नस काट देते, फिर तुममें से कोई भी मुझे इससे रोकने वाला न होता ।" (*अल-हाक्क़:* ४४-४७)

[1]अर्थात जिस रूप से भी तुम क़ुरआन को झुठलाते हो, कभी उसे जादू, कभी ज्योतिष तथा कभी स्वयंकृत कहते हो, अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है । अर्थात वह तुम्हारी इन निन्दनीय गतिविधियों का प्रतिकार (बदला) देगा ।

[2]वह इस बात की गवाही के लिए पर्याप्त है कि यह पवित्र क़ुरआन उसी की ओर से अवतरित हुआ है तथा वही तुम्हारे झुठलाने तथा विरोध का भी साक्षी है । इस में भी इनके लिए कड़ी चेतावनी है ।

[3]उसके लिए जो तौबा (क्षमा-याचना) कर ले, ईमान ले आये तथा क़ुरआन को सत्य ईशवाणी मान ले । अभिप्राय यह है कि अभी समय है कि तौबा करके अल्लाह की क्षमा तथा दया के पात्र बन जाओ ।

[4]अर्थात प्रथम एवं अनोखा रसूल तो नहीं हूँ अपितु मुझसे पहले भी अनेक रसूल आ चुके हैं ।

[5]अर्थात संसार में । मैं मक्का नगर ही में रहूँगा अथवा यहाँ से निकलने पर बाध्य होना पड़ेगा, मुझे स्वाभाविक मौत आयेगी अथवा तुम्हारे हाथों मेरी हत्या होगी, तुम जल्द ही दण्ड पाओगे अथवा तुम्हें लम्बा अवसर दिया जायेगा, इन सब बातों का ज्ञान केवल अल्लाह को है । मुझे पता नहीं कि कल मेरे साथ तथा तुम्हारे साथ क्या होगा ? फिर भी आख़िरत (परलोक) के विषय में निश्चित ज्ञान है कि ईमानवाले स्वर्ग (जन्नत) में तथा काफ़िर नरक (जहन्नम) में जायेंगे । तथा हदीस में जो आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि

وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝

मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर प्रकाशना की जाती है तथा मैं तो केवल स्पष्ट रूप से सावधान कर देने वाला हूँ।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَكَفَرْتُم بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

(१०) (आप) कह दीजिए कि यदि यह (क़ुरआन) अल्लाह ही की ओर से हो तथा तुमने उसे न माना हो तथा इस्राईल की संतान का एक गवाह उस जैसी की गवाही भी दे चुका हो तथा वह ईमान भी ला चुका हो और तुमने उद्दण्डता की हो ।[1] तो नि:संदेह अल्लाह (तआला) अत्याचारी

वसल्लम ने किसी सहाबी के निधन पर जब उसके विषय में अच्छा विचार व्यक्त किया गया तो फ़रमाया,

«وَاللهِ مَا أَدْرِي - وَأَنَا رَسُولُ اللهِ - مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ».

"अल्लाह की सौगन्ध ! मुझे अल्लाह का रसूल होकर भी ज्ञान नहीं कि क़यामत को मेरे तथा तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा ?" (सहीह बुख़ारी मनाकिबुल अंसार)

इससे एक निश्चित व्यक्ति के निश्चित परिणाम का इंकार है, परन्तु यह कि उसके विषय में भी धार्मिक सूत्र मौजूद हो, जैसे अशरह मुबश्शरह (दस सहाबी जिन्हें संसार में ही स्वर्ग की शुभसूचना नबी के द्वारा सुना दी गई) तथा बद्र के सहाबा आदि (जिन्होंने बद्र के रण में भाग लिया)

[1]इस इस्राईली संतान के गवाह से कौन तात्पर्य है ? कुछ कहते हैं कि यह सामान्य है। इस्राईल की संतान में से जो भी ईमान लाये वह इसका चरितार्थ है। कुछ कहते हैं कि मक्का का कोई इस्राईली निवासी अभिप्राय है, क्योंकि यह सूर: मक्का में अवतरित हुई। कुछ के निकट इससे अभिप्राय अब्दुल्लाह पुत्र सलाम हैं, तथा वह इस आयत को मदनी (मदीने में अवतरित) कहते हैं। सहीहैन की हदीस से भी इसे समर्थन प्राप्त होता है। (सहीह बुख़ारी, मनाक़िबिल अंसार, बाब मानकिबि अब्दुल्लाह बिन सलाम) इसीलिए इमाम शौकानी ने इसी विचार को अधिमान दिया है على مثله (इसी जैसी किताब की गवाही) का अर्थ है तौरात की गवाही, जो क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने को अनिवार्य बनाती है, क्योंकि क़ुरआन भी एकेश्वरवाद एवं पुर्नजन्म के प्रमाण में तौरात ही के समान है। अभिप्राय यह है कि अहले किताब (ग्रन्थधारियों) की गवाही तथा उनके ईमान लाने के पश्चात इस क़ुरआन के अल्लाह की ओर से अवतरित होने में कोई संदेह नहीं रह जाता है। इसलिए अब तुम्हारे इंकार तथा अहंकार का कोई औचित्य नहीं है। तुम्हें अपने इस नीति (व्यवहार) का परिणाम सोच लेना चाहिए।

गुट को मार्ग नहीं दिखाता ।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَٰذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾

(११) तथा काफ़िरों ने ईमानदारों के विषय में कहा कि यदि यह (धर्म) उत्तम होता तो यह लोग उसकी ओर हमसे पहल न कर पाते तथा चूँकि उन्होंने क़ुरआन से मागदर्शन नहीं पाया तो यह कह देंगे कि यह प्राचीन झूठ है ।[1]

وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَٰذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾

(१२) तथा इससे पूर्व मूसा की किताब मार्गदर्शिका एवं दया थी, तथा यह किताब है पुष्टि करने वाली अरबी भाषा में ताकि अत्याचारियों को डराये तथा सदाचारियों के लिए शुभ सूचना हो ।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٣﴾

(१३) नि:संदेह जिन लोगो ने कहा कि हमारा प्रभु अल्लाह है फिर उस पर दृढ़ रहे तो उन पर न तो कोई भय होगा तथा न वे शोक ग्रस्त होंगे ।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤﴾

(१४) यह तो स्वर्ग में जाने वाले लोग हैं जो सदैव उसी में रहेंगे उन कर्मों के बदले जो वे किया करते थे ।

---

[1]मक्का के काफ़िर बिलाल, अम्मार, सुहैब तथा ख़ब्बाब रज़िअल्लाहु अन्हुम जैसे निर्धन मुसलमानों को देखकर, जिन्हें इस्लाम में अग्रसर होने का सौभाग्य प्राप्त था, कहते थे कि यह धर्म अच्छा होता तो हम जैसे मान-मर्यादा के लोग इसे पहले स्वीकार करते न कि यह लोग, अर्थात उन्होंने स्वयं से यह मान लिया कि अल्लाह के हाँ उनका उच्च पद है । अत: यह धर्म यदि सच्चा होता तो अल्लाह इसे स्वीकार करने में हमें पीछे न छोड़ता, तथा हमने इसे नहीं माना तो फिर इसका अर्थ यह है कि यह पुराना झूठ है । अर्थात क़ुरआन को उन्होंने पुराना झूठ कहा जैसे वे इसे पूर्वजों की कल्पित कथा कहते थे, जब कि सांसारिक धन-सम्पति में अधिक होना अल्लाह के निकट प्रिय होने का प्रमाण नहीं (जैसे उन्हें भ्रम हुआ अथवा शैतान ने भ्रम में डाला) अल्लाह के निकट स्वीकार्य होने के लिए ईमान तथा शुद्धता की आवश्यकता है । तथा इस ईमान तथा शुद्धता की सम्पति जिसे चाहता है देता है । जैसे परीक्षा के लिए धन-सम्पत्ति जिसे चाहता है देता है ।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي

(१५) तथा हमने मनुष्य को अपने माता-पिता के साथ सदव्यवहार करने का आदेश दिया है। उसकी माता ने उसे दुख झेलकर गर्भ में रखा तथा दुख सहन करके उसे जन्म दिया।[1] उसके गर्भ धारण तथा उसके दूध छुड़ाने की अवधि तीस महीने की है,[2] यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी व्यस्कता को तथा चालीस वर्ष की आयु को पहुँचा[3] तो कहने लगा, हे मेरे प्रभु ! मुझे संमति दे[4] कि मैं तेरे उस उपकार की

---

[1]इस दुख तथा कष्ट की चर्चा करके माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने पर विशेष बल दिया है। जिससे यह भी विदित होता है कि माता इस सदव्यवहार के आदेश में पिता से प्रथम है। क्योंकि नौ मास तक लगातार गर्भ की तकलीफ और फिर प्रसव का दुख मात्र माँ ही झेलती है। ऐसे ही दूध पिलाने की पीड़ा भी अकेले माँ ही सहन करती है, बाप इस में भाग नहीं लेता। इसीलिए हदीस में भी माँ के साथ अच्छे व्यवहार को प्रधानता दी गई है तथा बाप का पद उसके पश्चात बताया गया है। एक सहाबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा, 'मेरे अच्छे व्यवहार का सर्वाधिक पात्र कौन है ?' आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : 'तुम्हारी माँ।' उसने फिर यही पूछा, 'आप ने यही उत्तर दिया।' तीसरी बार भी यही उत्तर दिया। चौथे चरण में प्रश्न करने पर आप ने फ़रमाया : 'तुम्हारा बाप।' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे व स्सिला प्रथम अध्याय)

[2]فِصَال (फिसाल) का अर्थ दूध छुड़ाना है। इससे कुछ सहाबा ने यह प्रमाणित किया है कि कम से कम गर्भ की अवधि छ: महीने है, अर्थात यदि छ: महीने के पश्चात किसी औरत को बच्चा पैदा हो जाये तो वह बच्चा सही है, अवैध नहीं, इसलिए कि क़ुरआन ने दूध पिलाने की अवधि दो वर्ष (चौबीस महीने) बताई है (*सूर: लुक़मान-१४, सूर: बक़र: २३३*) इस हिसाब से गर्भ की अवधि मात्र छ: महीने ही शेष रह जाती है।

[3]पूरी व्यस्कता (أَشُدَّهُ) की आयु से अभिप्राय युवा अवस्था है। कुछ ने उसे १८ वर्ष से अर्थ लगाया है, यहाँ तक कि फिर बढ़ते-बढ़ते चालीस वर्ष की आयु को पहुँच गया। यह मानसिक शक्ति के पूर्ण होने की आयु है। अत: व्याख्याकारों का विचार है कि प्रत्येक नबी को चालीस वर्ष की आयु के पश्चात ही नबूअत (दूतत्व) से सम्मानित किया गया। (फ़तहुल क़दीर)

[4]أَوْزِعْنِي यह أَلْهِمْنِي के अर्थ में है, अर्थात मुझे सन्मति प्रदान कर। इससे तर्क देते हुए विद्वानों ने कहा है कि इस आयु के पश्चात इंसान को यह दुआ प्रायत: पढ़ते रहना

فِي ذُرِّيَّتِيٓ ۖ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

कृतज्ञता व्यक्त कर सकूँ जो तूने मुझ पर तथा मेरे माता-पिता पर उपकार किया है तथा यह कि मैं ऐसे पुण्य के कार्य करूँ जिनसे तू प्रसन्न हो जाये तथा तू मेरी संतान भी सदाचारी बना। मैं तेरी ओर ध्यान करता हूँ तथा मैं मुसलमानों में से हूँ।

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّـَٔاتِهِمْ فِيٓ أَصْحَٰبِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

(१६) यही वे लोग हैं जिनके पुण्य के कार्य हम स्वीकार कर लेते हैं तथा जिनके बुरे कार्यों को क्षमा कर देते हैं, (ये) स्वर्ग में जाने वाले लोगों में हैं। इस सत्य वचन के अनुसार जो उनसे किया जाता था।

وَالَّذِي قَالَ لِوَٰلِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَآ أَتَعِدَانِنِيٓ أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ ءَامِنْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَيَقُولُ مَا هَٰذَآ إِلَّآ أَسَٰطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

(१७) तथा जिसने अपने माता-पिता से कहा कि उफ़ है तुम दोनों पर (तुमसे मैं तंग हो गया)[1] तुम मुझसे यही कहते रहोगे कि (मैं मरने के पश्चात पुनः) जीवित किया जाऊँगा, मुझसे पूर्व भी युग समुदाय गुज़र चुके हैं।[2] वह दोनों अल्लाह के दरबार में विनती करते हैं (तथा कहते हैं) कि तुझे ख़राबी हो, तू ईमानदार

चाहिए, अर्थात رَبِّ أَوْزِعْنِي से مِنَ الْمُسْلِمِينَ तक।

[1]उपरोक्त आयत में नेक संतान (सपूत) की चर्चा की गई थी, जो माँ-बाप के साथ सद्व्यवहार करती है तथा उनके लिए भलाई की प्रार्थना भी। अब उनके विपरीत हतभागी एवम् अवज्ञाकारी संतान की चर्चा की जा रही है जो माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार से पेश आती है। أُفٍّ لَّكُمَا धुत है तुम दोनों पर। 'उफ़्फ़' أُفٍّ शब्द घृणा व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होता है। अर्थात अवज्ञाकारी संतान माँ-बाप के हितोपदेशों पर अथवा ईमान तथा सत्कर्म के आमंत्रण पर घृणा तथा कड़ा क्रोध दिखाती है, जिसकी संतान को कदापि अनुमति नहीं। यह आयत सामान्य है, सभी अवज्ञाकारी संतान इसकी चरितार्थ है।

[2]अभिप्राय यह है कि वह पुनः जीवित होकर जगत में नहीं आये, जबकि पुर्नजीवन का अभिप्राय क़यामत के दिन जीवित होना है जिसके पश्चात हिसाब होगा।

बन जा, नि:संदेह अल्लाह का वादा सत्य है। वह उत्तर देता है कि ये तो केवल पूर्वकालीन लोगों की कथायें हैं।[1]

أُولَٰٓئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِىٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَٰسِرِينَ ﴿١٨﴾

(१८) (यही) वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (के प्रकोप) का वा दा सत्य हो गया [2] उन जिन्नों तथा मनुष्यों के गिरोहों के साथ जो उनसे पूर्व गुज़र चुके हैं।[3] यह निश्चित रूप से क्षतिग्रस्त थे।

وَلِكُلٍّ دَرَجَٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَٰلَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾

(१९) तथा प्रत्येक को अपने-अपने कर्मों के अनुसार पद मिलेंगे[4] ताकि उन्हें उनके कर्मों के पूर्ण बदले दे तथा वे अत्याचार न किये जायेंगे।[5]

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا

(२०) तथा जिस दिन काफ़िर नरक के किनारे लाये जायेंगे [6] (कहा जायेगा) कि तुमने अपने

---

[1]माँ-बाप मुसलमान हों तथा संतान काफ़िर तो वहाँ संतान तथा माँ-बाप के बीच इसी प्रकार वाद-विवाद होता है, जिसका एक उदाहरण आयत में दिया गया है।

[2]जो पहले ही अल्लाह के ज्ञान में था, अथवा शैतान के उत्तर में जो अल्लाह ने फ़रमाया था :

﴿لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ﴾

"मैं तुमसे तथा तुम्हारे सब अनुयायियों से नरक को भर दूँगा।" (सूर: *साद*-८५)

[3]अर्थात यह भी उन काफ़िरों में सम्मिलित हो गये जो जिन्नों तथा इंसानों में से क़यामत के दिन क्षतिग्रस्त होंगे।

[4]मोमिन तथा काफ़िर दोनों का उनके कर्मों के अनुसार अल्लाह के सदन में स्थान होगा। मोमिन उच्च पदों से सम्मानित होंगे तथा काफ़िर नरक की सबसे नीची श्रेणी में होंगे।

[5]पापी को उसके पाप से अधिक दण्ड नहीं दिया जायेगा तथा सदाचारियों के प्रत्युपकार में कमी नहीं होगी, वरन् प्रत्येक को भलाई अथवा बुराई में से वही मिलेगा जिसका वह पात्र होगा।

[6]अर्थात उस समय को याद करो जब काफ़िरों की आँखों के आवरण हटाये जायेंगे तथा वे नरक की अग्नि देख रहे होंगे अथवा उसके समीप होंगे। कुछ ने يُعْرَضُونَ का अर्थ

عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾

पुण्य संसार के जीवन में ही नष्ट कर दिये[1] तथा उनसे लाभ उठा चुके, तो आज तुम्हें अपमान की यातना का दण्ड दिया जायेगा इस कारण कि तुम धरती पर अहंकार करते थे तथा इस कारण भी कि तुम आज्ञा का पालन नहीं करते थे ।[2]

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ

(२१) तथा आद के भाई को याद करो जबकि उसने अपने समुदाय वालों को अहक़ाफ़ में (रेत के टीले पर) डराया[3] तथा नि:संदेह

يُعَذَّبُونَ (यातना दिये जायेंगे) किया है तथा कुछ कहते हैं कि वाक्य में परिवर्तन है । अभिप्राय है जब आग उन पर प्रस्तुत की जायेगी تُعْرَضُ النَّارُ عَلَيْهِمْ (फ़तहुल क़दीर)

[1] طَيِّبَاتٌ (तय्येबात) से अभिप्राय वह वरदान हैं जो इंसान रूचि से खाते पीते, प्रयोग करते तथा स्वाद एवं आनंद प्रतीत करते हैं । किन्तु परलोक के चिन्तन के साथ उनका प्रयोग हो तो बात और है, जैसे मोमिन (ईमानदार) करता है, वह उसके साथ अल्लाह की आज्ञा पालन करके अल्लाह की कृतज्ञता की भी व्यवस्था करता है । परन्तु परलोक के चिन्तन से अलग होकर उनका प्रयोग इंसान को उद्दण्ड तथा विद्रोही बना देता है, जैसे काफ़िर करता है तथा यूँ वह अल्लाह की अवज्ञा तथा कृतघ्नता करता है । अत: मोमिन को उसकी कृतज्ञता तथा अनुपालन के कारण यह वरदान बल्कि उनसे अति उत्तम वरदान परलोक में फिर मिल जायेंगे, जबकि काफ़िरों से वही कुछ कहा जायेगा जो आयत में चर्चित है ।﴿أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ﴾ का अन्य अनुवाद है 'दुनिया के जीवन में तुमने अपने आनंद ले लिए तथा खूब लाभ प्राप्त कर लिया ।'

[2] उनकी यातना के दो कारण बताये हैं । एक अनृत अभिमान, जिसके आधार पर सत्य के अनुसरण से इंसान भागता है । दूसरा फ़िस्क़, निर्भय होकर कुकर्म करना । यह दोनों बातें सभी काफ़िरों में साझा होती हैं । ईमानवालों को इन दोनों बातों से अपना दामन बचाना चाहिए ।

टिप्पणी : कुछ सहाबा के बारे में आता है कि उनके सामने उत्तम आहार आदि आता तो यह आयत उन्हें याद आ जाती तथा वह इस भय से उसे त्याग देते कि कहीं आख़िरत में हमें भी यह न कह दिया जाये कि अपना आनंद तुमने संसार में ले लिया । यह उनकी वह स्थिति है जो अपार संयम तथा सदाचार को प्रदर्शित करती है । इसका यह अर्थ नहीं कि वे अच्छी चीज़ों के प्रयोग को उचित (वैध) नहीं समझते थे ।

[3] أَحْقَافٌ (अहक़ाफ़) حِقْفٌ (हिक्फ़) का बहुवचन है अर्थात रेत का ऊंचा लम्बा टीला ।

بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِۦٓ أَلَّا تَعْبُدُوٓا۟ إِلَّا ٱللَّهَ إِنِّىٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾

उससे पूर्व भी डराने वाले गुज़र चुके हैं तथा उसके पश्चात भी कि तुम अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त अन्य की इबादत न करो। नि:संदेह मैं तुम पर बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।[1]

قَالُوٓا۟ أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ ءَالِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿٢٢﴾

(२२) समुदाय ने उत्तर दिया कि क्या आप हमारे पास इसलिए आये हैं कि हमें अपने देवताओं (की पूजा) से रोक दें।[2] तो यदि आप सच्चे हैं तो जिन प्रकोपों का आप वादा करते हैं उन्हें हम पर ला डालें।

قَالَ إِنَّمَا ٱلْعِلْمُ عِندَ ٱللَّهِ وَأُبَلِّغُكُم مَّآ أُرْسِلْتُ بِهِۦ وَلَٰكِنِّىٓ أَرَىٰكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ﴿٢٣﴾

(२३) (आदरणीय हूद ने) कहा कि (इसका) ज्ञान तो अल्लाह ही के पास है, मैं तो जो संदेश देकर भेजा गया था वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ[3] परन्तु मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग मूर्खता कर रहे हो।[4]

कुछ ने इसका अर्थ पहाड़ तथा गुफ़ा किया है। यह ईशदूत हूद (अलैहिस्सलाम) कि जाति, प्रथम आद के क्षेत्र का नाम है जो हज़्रमूत (यमन) के निकट था। मक्का के काफ़िरों के झुठलाने के कारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सांत्वना के लिए विगत अम्बिया की घटनाओं की चर्चा की जा रही है।

[1] يوم عظيم (बड़े दिन) से अभिप्राय क़यामत का दिन है, जिसे उसकी भयानकता के कारण उचित रूप से बड़ा दिवस कहा गया है।

[2] لِتَأْفِكَنَا ، لِتَصْرِفَنَا अथवा لِتَمْنَعَنَا अथवा لِتُزِيلَنَا सभी पर्यायवाची हैं। ताकि तू हमारे उपास्यों की उपासना से रोक दे, फेर दे, हटा दे।

[3] अर्थात प्रकोप कब आयेगा? अथवा संसार में नहीं आयेगा अपितु आख़िरत में तुम्हें दण्ड दिया जायेगा, उसका ज्ञान मात्र अल्लाह को है। वही अपनी इच्छानुसार निर्णय करता है। मेरा काम तो मात्र सन्देश पहुँचाना है।

[4] कि एक तो कुफ़्र पर दुराग्रह कर रहे हो। दूसरे, मुझसे ऐसी वस्तु की माँग कर रहे हो जो मेरे अधिकार में नहीं है।

(२४) फिर जब उन्होंने प्रकोप को मेघ के रूप में देखा अपने मैदानों की ओर आते हुए तो कहने लगे कि यह मेघ हम पर बरसने वाला है,[1] (नहीं) बल्कि वास्तव में यह मेघ वह (प्रकोप) है जिसकी तुम शीघ्रता मचा रहे थे,[2] वायु है जिसमें कष्टदायी यातनायें हैं ।[3]

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَتِهِمْ قَالُوا هَٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۚ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُم بِهِ ۖ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٤﴾

(२५) जो अपने प्रभु के आदेश से प्रत्येक वस्तु को ध्वस्त कर देगी, तो वे ऐसे हो गये कि उनके घरों के अतिरिक्त कुछ दिखाई न

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا لَا يُرَىٰ إِلَّا مَسَاكِنُهُمْ ۚ

---

[1]दीर्घकाल से उनके यहाँ वर्षा नहीं हुई थी । उमड़ते बादल देखकर वह प्रसन्न हुए कि अब वर्षा होगी । बादल को عَارِض (आरिज़) इसलिए कहते हैं कि बादल आकाश की चौड़ाई में प्रकट होता है ।

[2]यह ईशदूत हूद अलैहिस्सलाम ने उनसे कहा कि यह केवल बादल नहीं है जैसे तुम समझ रहे हो । अपितु यह वह प्रकोप है जिसके शीघ्र लाने की तुम माँग कर रहे थे ।

[3]अर्थात वह वायु जिससे उस जाति का विनाश हुआ, उन बादलों से ही उठी तथा निकली तथा अल्लाह की इच्छा से उनको और उनकी प्रत्येक वस्तु को ध्वस्त कर गई । इसीलिए हदीस में आता है, आदरणीया आएशा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि लोग तो बादल देखकर प्रसन्न होते हैं कि वर्षा होगी, किन्तु इसके विपरीत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुख पर व्याकुलता के चिन्ह दिखाई देते हैं । आप ने फ़रमाया कि आएशा (रज़ी अल्लाह अन्हा) इस बात का क्या विश्वास कि इस बादल में प्रकोप नहीं होगा, जबकि एक जाति वायु के प्रकोप से ही ध्वस्त कर दी गई । उस जाति ने भी बादल को देखकर कहा था, "यह बादल है जो हम पर जल बरसायेगा" । (बुख़ारी तफ़सीर सूरतिल अहक़ाफ़, मुस्लिम-किताबु सलातिल इस्तिस्क़ा) एक अन्य हदीस में है कि जब प्रचण्ड वायु चलती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह दुआ पढ़ते ।

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا، وَخَيْرَ مَا فِيهَا، وخَيْرَ ما أُرْسِلَتْ بِهِ، وأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا، وشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ».

तथा जब आकाश पर बादल घने हो जाते तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रंग बदल जाता तथा भय की एक अवस्था आप पर छा जाती, जिससे आप व्याकुल रहते, कभी बाहर निकलते, कभी भीतर जाते, कभी आगे होते, कभी पीछे । फिर जब वर्षा हो जाती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चैन की साँस लेते । (सहीह मुस्लिम, उपरोक्त बाब)

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾

देता था ।[1] पापियों के गिरोह को हम इसी प्रकार दण्ड देते हैं ।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾

(२६) तथा निश्चित रूप से हमने (आद के समुदाय) को वह शक्ति प्रदान की थी जो तुम्हें दिया ही नहीं, तथा हमने उन्हें कान, आँखें एवं दिल भी प्रदान कर रखे थे । परन्तु उनके कानों, आँखों एवं दिलों ने उन्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचाया [2] जबकि वह अल्लाह (तआला) की आयतों का इंकार करने लगे तथा जिस बात का वे उपहास उड़ाया करते थे, वही उन पर उलट पड़ी ।[3]

وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा नि:संदेह हमने तुम्हारे निकटवर्ती (क्षेत्र की) बस्तियाँ ध्वस्त कर दीं [4] तथा (नाना प्रकार की) हमने निशानियाँ वर्णन कर दीं ताकि वे वापस आ जायें ।[5]

---

[1]अर्थात مساكين (घर वाले) सब ध्वस्त हो गये तथा मात्र घर शिक्षाप्रद चिन्ह के रूप में शेष रह गये ।

[2]यह मक्कावासियों को संबोधित करके कहा जा रहा है कि तुम क्या हो ? तुमसे पहली जातियाँ जिन्हें हमने ध्वस्त किया, शक्ति एवं बल मान-मर्यादा में तुमसे कहीं अधिक थीं, किन्तु जब उन्होंने अल्लाह की प्रदान की गई योग्यताओं (कान, आँख तथा दिल) को सत्य सुनने, देखने तथा समझने के लिए प्रयोग नहीं किया तो अन्तत: हमने उन्हें ध्वस्त कर दिया तथा यह वस्तुयें उनके कुछ काम न आ सकीं ।

[3]अर्थात जिस प्रकोप को वह अनहोनी समझ कर उपहास स्वरूप कह रहे थे कि लाओ अपना प्रकोप जिससे तुम हमको डराते हो । वह प्रकोप आया एवं उनको ऐसा घेरा कि फिर उससे निकल न सके ।

[4]समीपवर्ती से आद, समूद तथा लूत की वह बस्तियाँ अभिप्राय हैं जो हिजाज़ के समीप ही थीं तथा यमन, शाम तथा फ़िलिस्तीन की ओर आते जाते उनसे उनका गुज़र होता था ।

[5]अर्थात हमने विभिन्न ढंग से तथा विभिन्न प्रमाण उनके समक्ष प्रस्तुत किये कि हो सकता है वह क्षमा-याचना कर लें किन्तु वह टस से मस नहीं हुए ।

(२८) तो अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के लिए उन्होंने जिन-जिनको देवता बना रखा था उन्होंने उनकी सहायता क्यों न की बल्कि वह तो उनसे खोये गये, (बल्कि वास्तव में) यह उनका मात्र झूठ तथा (पूर्णत:) आरोप था।[1]

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۖ بَلْ ضَلُّوا عَنْهُمْ ۚ وَذَٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٨﴾

(२९) तथा याद करो, जबकि हमने जिनों के एक गिरोह को तुम्हारी ओर फेर दिया कि वे क़ुरआन सुनें, तो जब वे नबी के पास पहुँच गये तो (एक-दूसरे) से कहने लगे कि शान्त हो जाओ,[2] फिर जब पाठ पूरा हो

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِم مُّنذِرِينَ ﴿٢٩﴾

---

[1]अर्थात जिन उपास्यों को वह अल्लाह की निकटता का साधन समझते थे उन्होंने उनकी कोई सहायता नहीं की, अपितु इस अवसर पर वह आये ही नहीं तथा वह गुम रहे। इससे भी विदित हुआ कि मक्का के मुशरिकीन मूर्तियों को ईश्वर नहीं मानते थे, अपितु उन्हें अल्लाह के सदन में निकटता का माध्यम समझते थे। अल्लाह ने इस माध्यम को यहाँ झूठ तथा आरोप कहकर बता दिया कि यह अवैध तथा निषेधित (नाजायेज़ तथा हराम) है।

[2]सहीह मुस्लिम की हदीस से ज्ञात होता है कि यह घटना मक्का के समीप वादिये नख़ला में घटी, जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने साथियों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जिन्नों को यह खोज थी कि आकाश पर हम पर अत्याधिक कड़ाई कर दी गई है तथा अब वहाँ जाना लगभग असंभव हो गया है, कोई महत्वपूर्ण घटना अवश्य हुई है जिसके कारण ऐसा हुआ है। इसलिए पूर्व एवं पश्चिम की विभिन्न दिशाओं में जिन्नों की टोलियाँ कारण की खोज में फैल गईं। उनमें से एक गिरोह ने यह क़ुरआन सुना तथा समझ लिया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भेजे जाने की घटना ही हम पर आकाश में प्रतिबंध का कारण है तथा जिन्नों का यह गिरोह आप पर ईमान लाया और जाकर अपने समुदाय को भी सूचित किया (मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाबुल जहरे बिल किराअते फिस्सुबहे वल किराअते अललजिन्न) सही बुख़ारी में भी कुछ बातों की चर्चा है किताबु मनाकिबिल अंसार बाबु ज़िक्रिल जिन्न) अन्य उदाहरणों से ज्ञात होता है कि तत्पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन्नों के आमंत्रण पर उनके पास भी गये तथा जाकर उन्हें अल्लाह का उपदेश सुनाया, तथा अनेक बार जिन्नों का प्रतिनिधि मण्डल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भी उपस्थित हुआ। (फ़तहुल बारी, तफ़सीर इब्ने कसीर आदि)

गया[1] तो अपने समुदाय को सावधान करने के लिए वापस लौट गये।

قَالُوا يٰقَوْمَنَآ إِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا أُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيٓ إِلَى الْحَقِّ وَإِلٰى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝٣٠

(३०) कहने लगे, हे हमारे समुदाय के लोगो ! हमने निश्चित रूप से वह किताब सुनी है, जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के पश्चात अवतरित की गयी है, जो अपने से पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाली है, जो सत्य धर्म एवं सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।

يٰقَوْمَنَآ أَجِيبُوا دَاعِيَ اللّٰهِ وَءَامِنُوا بِهِۦ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُجِرْكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝٣١

(३१) हे हमारे समुदाय के लोगो ! अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ[2] तो (अल्लाह) तुम्हारे कुछ पाप क्षमा कर देगा तथा तुम्हें दुखद यातना से शरण देगा।[3]

---

[1]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से क़ुरआन का पाठ समाप्त हो गया।

[2]यह जिन्नों ने अपनी जाति को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लाने का आमंत्रण दिया। इससे पहले पवित्र क़ुरआन के संबंध में बतलाया कि यह तौरात के बाद एक और आकाशीय ग्रंथ है जो सत्य धर्म तथा संमार्ग की ओर मार्गदर्शन कराता है।

[3]यह ईमान लाने के वह लाभ बताये जो आख़िरत (परलोक) में उन्हें प्राप्त होंगे مِنْ ذُنُوبِكُم में مِنْ कुछ का अर्थ देने के लिए है, अर्थात कुछ पाप क्षमा कर देगा और यह वह पाप होंगे जिनका संबंध अल्लाह के अधिकार से होगा, क्योंकि बंदों के अधिकार क्षमा नहीं किये जायेंगे। यह आयत इस बात का प्रमाण है कि पुण्य एवं दण्ड तथा आदेशों एवं निषेधों में जिन्नों के लिये भी वही नियम हैं जो इंसानों के लिए हैं।

इस विषय में विद्वानों के बीच मतभेद है कि अल्लाह तआला ने जिन्नात में जिन्नों में से रसूल (संदेष्टा) भेजे अथवा नहीं। प्रत्यक्ष क़ुरआनी आयतों से यही ज्ञात होता है कि जिन्नात में कोई रसूल (ईशदूत) नहीं हुआ, सभी अम्बिया तथा रसूल इंसानों ही में हुए हैं।

﴿ وَمَآ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوحِيٓ إِلَيْهِم مِّنْ أَهْلِ الْقُرَىٰٓ ﴾

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व भी बस्ती वालों में से हम पुरूषों को ही भेजते रहे जिनकी ओर प्रकाशना अवतरित करते थे।" (यूसुफ़-१०९)

وَمَن لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जो व्यक्ति अल्लाह की ओर आमन्त्रित करने वाले का कहा न मानेगा तो वह धरती पर कहीं (भागकर अल्लाह को) विवश नहीं सकता[1] तथा न अल्लाह के अतिरिक्त उसकी कोई सहायता करने वाला होगा,[2] यह लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾

(३३) क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आकाशों तथा धरती को पैदा किया तथा उनके पैदा करने से वह न थका, वह निःसंदेह मृतकों को जीवित करने का सामर्थ्य रखता है ? क्यों न हो ? वह निःसंदेह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखता है।[3]

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ﴾

"हमने आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से पूर्व जितने संदेष्टा भेजे सबके सब भोजन भी करते थे तथा बाज़ारों में भी चलते-फिरते थे।" (*अल-फ़ुरक़ान*-२०)

इन क़ुरआनी सूत्रों से स्पष्ट है कि जितने भी रसूल हुए वह मनुष्य थे। इसलिए के वे सब वस्ती के रहने वाले, बाज़ारों में चलने-फिरने वाले तथा सामान्य भोजन करने वाले थे जो मनुष्य की विशेषतायें हैं। इसलिए जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मानव के लिए रसूल थे तथा हैं, उसी प्रकार जिन्नों के रसूल भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही हैं तथा आपका उपदेश जिन्नों तक पहुँचाने का प्रबंध किया गया है, जैसाकि पवित्र क़ुरआन के इस स्थान से स्पष्ट है।

[1]अर्थात ऐसा नहीं हो सकता कि वह धरती के विस्तार में ऐसे गुम हो जाये कि अल्लाह की पकड़ में न आ सके।

[2]जो उसे अल्लाह की यातना से बचा लें। अर्थ यह हुआ कि न वह स्वयं अल्लाह की पकड़ से बचने पर समर्थ है न किसी दूसरे की सहायता से ऐसा संभव है।

[3]رؤيت (रूयत) से तात्पर्य मन की आँखों से देखना है। अर्थात क्या उन्होंने नहीं जाना ألم يعلموا अथवा ألم يتفكروا कि जो अल्लाह आकाश तथा धरती का रचयिता है, जिसके विस्तार तथा फैलाव की सीमा नहीं, तथा वह उनको बनाकर थका भी नहीं है क्या वह मृतकों को पुनः जीवन नहीं प्रदान कर सकता, निश्चय कर सकता है। इसलिए कि वह على كلّ شيئٍ قديرٌ के गुण से युक्त है।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۖ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा वे लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, जिस दिन नरक के समक्ष लाये जायेंगे (तथा उनसे कहा जायेगा) कि यह सत्य नहीं है ? तो उत्तर देंगे कि हाँ, क्यों नहीं ! सौगन्ध है हमारे प्रभु की ! (सत्य है) ।[1] (अल्लाह तआला) कहेगा कि अब अपने कुफ़्र के बदले यातना का स्वाद चखो ।[2]

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِل لَّهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ ۚ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) तो (हे पैग़म्बर) तुम ऐसा धैर्य रखो, जैसा धैर्य साहसी रसूलों ने रखा तथा उनके लिए (यातना माँगने में) शीघ्रता न करो, [3] यह जिस रोज़ उस यातना को देख लेंगे जिसका वचन दिये जाते हैं तो (यह प्रतीत होने लगेगा कि) दिन की एक घड़ी ही (दुनिया में) ठहरे थे, [4] यह है संदेश पहुँचा देना, [5] कुकर्मियों के अतिरिक्त कोई नष्ट न किया जायेगा ।[6]

---

[1]वहाँ पाप स्वीकार ही नहीं करेंगे अपितु इस स्वीकार पर सौगंध खाकर बल देंगे । किन्तु उस समय का यह स्वीकार व्यर्थ के अलावा क्या हो सकता है ? आँखों से देख लेने पर स्वीकार नहीं तो क्या इंकार करेंगे ?

[2]इसलिए कि जब मानने का समय था तो माना नहीं । यह यातना उसी कुफ़्र तथा इंकार का बदला है जो अब तुम्हें भुगतना ही है ।

[3]यह मक्का के काफ़िरों के दुराचार के मुक़ाबले में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिलासा दी जा रही है तथा धैर्य रखने का उपदेश दिया जा रहा है ।

[4]क़्यामत का भयानक दृश्य देखने के बाद उन्हें दुनिया का जीवन ऐसे ही प्रतीत होगा जैसे दिन की मात्र एक घड़ी यहाँ गुज़ारकर गये हैं ।

[5]यह लुप्त विषय का विधेय है, अर्थात هذا الذي وعظتهم به بلاغ यह वह सदुपदेश अथवा शिक्षा है जिसे पहुँचाना तेरा काम है ।

[6]इस आयत में भी ईमानवालों के लिए शुभसूचना तथा प्रोत्साहन है कि परलौकिक विनाश मात्र उन लोगों का भाग है जोअल्लाह के अवज्ञाकारी तथा उसकी सीमा उलंघन करने वाले हैं ।

सूरतु मोहम्मद-४७

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ

सूर: मुहम्मद* (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मदीने में अवतरित हुई इसमें अड़तीस आयतें एवं चार रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝١

(१) जिन लोगों ने कुफ्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से रोका[1] अल्लाह ने उनके कर्म व्यर्थ कर दिये ।[2]

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢

(२) तथा जो लोग ईमान लाये एवं सत्कर्म किये तथा उस पर भी विश्वास किया जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अवतरित की गयी है [3] तथा वास्तव में उनके प्रभु की ओर से सत्य (धर्म) भी वही है, अल्लाह

---

*इसका दूसरा नाम 'अलकिताल' (युद्ध करना) भी है ।

[1]कुछ ने इससे अभिप्राय कुरैश के काफिर लिये हैं तथा कुछ ने अहले किताब (यहूदियों एवं इसाईयों) को लिया है । किन्तु यह सामान्य है, इनके साथ सभी काफ़िर इसमें सम्मिलित हैं ।

[2]इसका एक अभिप्राय तो यह है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोध में जो षड़यंत्र रचे अल्लाह ने उसे विफल कर दिया तथा उन्हीं पर उसको उलट दिया । दूसरा अभिप्राय यह है कि उनमें जो कुछ नैतिक चरित्र पाये जाते थे, जैसे संबंधियों के साथ उपकार, बंदियों को स्वतंत्र करना, अतिथि-सत्कार आदि अथवा खानये काबा तथा हाजियों की सेवा । इनका कोई बदला उन्हें आख़िरत (परलोक) में नहीं मिलेगा, क्योंकि बिना ईमान कर्मों का प्रतिफल तथा पुण्य नहीं प्राप्त होता ।

[3]ईमान में यद्यपि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रकाशना अर्थात क़ुरआन पाक पर ईमान लाना भी सम्मिलित है, किन्तु उसके महत्व तथा प्रधानता को अधिक प्रत्यक्ष तथा प्रकट करने के लिए उसकी अलग से भी चर्चा कर दी ।

ने उनके पाप मिटा दिये[1] तथा उनकी अवस्था का सुधार कर दिया ।[2]

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ③

(३) यह[3] इसलिए कि काफ़िरों ने असत्य का अनुकरण किया तथा ईमानवालों ने उस सत्य (धर्म) का अनुसरण किया, जो उनके रब की ओर से है । अल्लाह (तआला) लोगों को उनके हाल इसी प्रकार बताता है ।[4]

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

(४) तो जब काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनों पर वार करो ।[5] यहाँ तक कि जब उनको भलि-भाँति कुचल डालो तो अब अत्यन्त

---

[1]अर्थात ईमान लाने के पहले की त्रुटियों तथा आलस्य को क्षमा कर दिया । जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी कथन है कि इस्लाम पहले के सभी पापों को मिटा देता है । (सहीह जामे सग़ीर, अलबानी)

[2] بَالَهُم का अर्थ है حَالَهُم ، شَأنَهُم ، أمرَهُم सभी का अर्थ लगभग एक ही है । अभिप्राय यह है कि उन्हें पापों से बचाकर भलाई तथा अच्छाई के मार्ग पर लगा दिया, एक मोमिन की स्थिति के सुधार का यही सर्वोत्तम रूप है । यह अर्थ नहीं है कि धन सम्पत्ति के द्वारा उस की दशा सुधार दी, क्योंकि प्रत्येक ईमानदार को धन मिलता भी नहीं । इसके अलावा मात्र सांसारिक वैभव तथा धन, स्थिति सुधार का निश्चित साधन भी नहीं, अपितु इससे स्थिति के बिगाड़ की अधिक संभावना है । इसीलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने धन की अधिकता को पसंद नहीं किया ।

[3] ذلك यह (विषय) है अथवा इसकी ख़बर (विधेय) लुप्त है अर्थात बात ऐसी है । यह संकेत है उन धमकियों तथा वायदों की ओर जो काफ़िरों तथा मोमिनों के लिए वर्णित हुए ।

[4]ताकि लोग उस दुषपरिणाम से बचें जो काफ़िरों का भाग्य है तथा संमार्ग अपनायें जिस पर चलकर ईमान वाले अनंत सफलता से अलिगिंत होंगे ।

[5]जब दोनों गिरोहों की चर्चा कर दिया तो काफ़िरों तथा उन किताब वालों से जिनसे संधि न हो, जिहाद करने का आदेश दिया जा रहा है । हत्या करने की जगह गर्दन मारने का आदेश दिया कि इस अभियुक्त में काफ़िरों के साथ कड़ाई तथा कठोरता का अधिक प्रदर्शन है । (फ़तहुल क़दीर)

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ ۛ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ④

सुदृढ़ बन्दीगृह में कैद करो ।[1] फिर (अधिकार है कि) उपकार करके स्वतन्त्र कर दो[2] अथवा कुछ अर्थदण्ड लेकर जब तक कि युद्ध (करने वाले) अपने हथियार रख दे ।[3] यही आदेश है[4] तथा यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं ही उनसे बदला ले लेता ।[5] परन्तु (उसकी इच्छा यह है) कि तुम में से एक की परीक्षा दूसरे से ले ले ।[6] और जो लोग अल्लाह के मार्ग में शहीद कर

---

[1]अर्थात भारी लड़ाई तथा उनको अत्याधिक हत करने के पश्चात जो उनके व्यक्ति हाथ लग जायें उन्हें बंदी बना लो तथा दृढ़ता से जकड़ कर रखो ताकि वह भाग न जायें ।

[2] مَنّ (मन्न) का अभिप्राय है बिना अर्थदण्ड लिए उपकार स्वरूप मुक्त कर देना तथा فِداء (फ़िदाअ) का भावार्थ है कुछ बदला लेकर मुक्त करना । बंदियों के विषय में अधिकार दिया गया कि स्थिति को देखते हुए जो बात इस्लाम तथा मुसलमानों के लिए अधिक उत्तम हो वह अपनाई जाये ।

[3]अर्थात काफ़िरों के साथ लड़ाई समाप्त होने पर, अथवा यह अभिप्राय है कि शत्रु पराजित होकर अथवा संधि करके हथियार रख दे अथवा इस्लाम प्रभावशाली हो जाये तथा कुफ्र का अंत हो जाये । अभिप्राय यह है कि जब तक यह स्थिति न हो जाये काफ़िरों के साथ तुम्हारा युद्ध जारी रहेगा, जिसमें तुम उन्हें हत भी करोगे । बंदियों के संबंध में तुम्हें उक्त दोनों बातों का अधिकार है । कुछ कहते हैं कि यह आयत निरस्त है तथा सिवाय हत्या करने के कोई विकल्प शेष नहीं है, किन्तु सही बात यही है कि यह आयत निरस्त नहीं, लागू है तथा समय के इमाम (प्रमुख) को चारों बातों का अधिकार है, काफ़िरों को हत करे अथवा बंदी बनाये । बंदियों में से जिसे चाहे अथवा सबको चाहे उपकारस्वरूप मुक्त कर दे अथवा अर्थ दण्ड लेकर मुक्त कर दे । (फ़तहुल क़दीर)

[4]अथवा तुम इसी तरह करो, यह करो अथवा काफ़िरों के लिए नियम यही है ।

[5]अर्थात काफ़िरों को विध्वस्त कर अथवा उन्हें यातना में डाल कर परीक्षा ले अर्थात तुम्हें उनसे युद्ध करने की आवश्यकता ही न होती ।

[6]अर्थात तुम्हें एक-दूसरे के द्वारा परीक्षा ले ताकि वह जाने ले कि तुममें से उसकी राह में लड़ने वाले कौन हैं, ताकि उनको प्रतिफल एवं पुण्य प्रदान करे तथा उनके हाथों काफ़िरों को अपमानित तथा पराजित करे ।

दिये जाते हैं अल्लाह उनके कर्म कदापि नष्ट नहीं करेगा ।[1]

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥

(५) उनका पथप्रदर्शन करेगा तथा उनकी अवस्था का सुधार कर देगा ।[2]

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦

(६) तथा उन्हें उस स्वर्ग में ले जायेगा जिससे उन्हें परिचित कर दिया गया है ।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝٧

(७) हे ईमानवालो ! यदि तुम अल्लाह (के धर्म) की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा[4] तथा तुम्हारे पग सुदृढ़ रखेगा ।[5]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ۝٨

(८) तथा जो लोग काफ़िर हो गये उनका विनाश हो, अल्लाह ने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया ।

---

[1]अर्थात उनका प्रतिकार तथा पुण्य बर्बाद नहीं करेगा ।

[2]अर्थात उनको ऐसे कर्मों का सौभाग्य देगा जिनसे उनके लिए स्वर्ग का मार्ग सरल हो जायेगा ।

[3]अर्थात जिसे वह बिना मार्गदर्शन कराये पहचान लेंगे तथा जब वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे तो स्वयं ही अपने आवासों में चले जायेंगे । इसका समर्थन उस हदीस से भी होता है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, एक स्वर्गीय (स्वर्ग के पात्र) को अपने स्वर्ग के आवास के रास्तों का उससे कहीं अधिक ज्ञान होगा जितना संसार में उसे अपने घर का था । (सहीह बुख़ारी, किताबुल रिक़ाक़, बाबुल क़िसासे यौमल क़याम:)

[4]अल्लाह की सहायता करने का अभिप्राय अल्लाह के धर्म की सहायता है, क्योंकि वह साधनों के अनुकूल अपने धर्म की सहायता मोमिन बंदों के द्वारा ही करता है । यह मोमिन बंदे अल्लाह के धर्म की रक्षा तथा उसका प्रचार-प्रसार करते हैं तो अल्लाह उनकी सहायता करता है अर्थात उन्हें काफ़िरों पर विजय तथा प्रभुत्व प्रदान करता है ।

[5]युद्ध के समय تَثْبِيتُ أَقْدَام (पगों को दृढ़ रखने) का अर्थ है रण क्षेत्रों में सहायता तथा सहयोग । कुछ कहते हैं कि इस्लाम अथवा पुल सिरात पर दृढ़ पग रखेगा ।

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

(९) यह इसलिए कि वह अल्लाह की अवतरित की हुई वस्तु से अप्रसन्न हुए,[1] तो अल्लाह (तआला) ने भी उनके कर्म नष्ट कर दिये ।[2]

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾

(१०) क्या उन लोगों ने धरती में चल-फिर कर इसका निरीक्षण नहीं किया कि उनसे पूर्व के लोगों का क्या परिणाम हुआ ?[3] अल्लाह ने उन्हें नष्ट कर दिया तथा काफ़िरों के लिए इसी प्रकार के दण्ड हैं ।[4]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾

(११) वह इसलिए कि ईमानवालों का संरक्षक स्वयं अल्लाह (तआला) है तथा इसलिए कि काफ़िरों का कोई संरक्षक नहीं ।[5]

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

(१२) जो लोग ईमान लाये तथा पुण्य के

---

[1]अर्थात क़ुरआन एवं ईमान को उन्होंने अप्रिय समझा ।

[2]कर्मों से तात्पर्य वह कर्म हैं जो रूप में अच्छे कर्म हैं किन्तु ईमान न होने के कारण अल्लाह के सदन में उनका कोई फल तथा पुण्य नहीं मिलेगा ।

[3]जिनके बहुत से अवशेष (निशान) उनके क्षेत्रों में विद्यमान हैं । क़ुरआन के अवतरण के समय कुछ विध्वस्त जातियों के खंडहर तथा अवशेष विद्यमान थे । अत: उन्हें चल-फिर कर उनके शिक्षाप्रद परिणाम को देखने के लिए ध्यान दिलाया गया कि उन्हें देखकर ही संभवत: ईमान लायें ।

[4]यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम कुफ़्र से न रूके तो तुम्हें भी ऐसी ही यातना हो सकती है तथा विगत काफ़िर समुदायों की भाँति तुम्हें भी विध्वस्त किया जा सकता है ।

[5]जैसेकि ओहुद के रण में काफ़िरों के नारों के उत्तर में मुसलमानों ने जो नारे लगाये, जैसे اُعْـلُ هُبَـل، اُعـلُ هُبَل (हुबल की जय) के उत्तर में الله أعـلى و أجلّ (अल्लाह ही सर्वोच्च तथा महान है) । काफ़िरों के इन्हीं नारों में से एक नारा لنا العُـزّى ولا عُزّى لكم के उत्तर में मुसलमानों का नारा था الله مولانا ولا مولى لكم "अल्लाह हमारा सहायक है, तुम्हारा कोई सहायक नहीं ।" (सहीह बुख़ारी, ग़ज़वतु ओहुद)

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا یَتَمَتَّعُوْنَ وَیَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿۱۲﴾

कार्य किये, उन्हें अल्लाह (तआला) निश्चित रूप से ऐसे बाग़ों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नहरें प्रवाहित हैं तथा जो लोग काफ़िर हुए वह (साँसारिक ही) लाभ उठा रहे हैं तथा पशु के समान खा रहे हैं,[1] उनका (मूल) ठिकाना नरक है।

وَكَاَیِّنْ مِّنْ قَرْیَةٍ هِیَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْیَتِكَ الَّتِیْۤ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿۱۳﴾

(१३) तथा हमने कितनी बस्तियों को जो शक्ति में तेरी इस बस्ती से अधिक थीं, जिससे तुझे निकाला। हमने उन्हें नष्ट कर दिया है, जिनकी सहायता करने वाला कोई न उठा।

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُیِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۴﴾

(१४) क्या तो वह व्यक्ति जो अपने प्रभु की ओर से प्रमाण पर हो उस व्यक्ति के समान हो सकता है, जिसके लिए उसके बुरे कार्य शोभनीय बना दिये गये हों तथा वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता हो ?[2]

---

[1]अर्थात जैसे पशुओं को आहार तथा मैथुन की आवश्यकतायें पूरी करने के सिवा कोई काम नहीं होता, यही दशा काफ़िरों की है। उनके जीवन का उद्देश्य भी खाने-पीने के सिवा कुछ नहीं, आख़िरत (परलोक) से वह निश्चिन्त हैं। इससे प्रासंगिक संकेत मिलता है कि खड़े होकर खाना निषेध है जिसका आजकल भोजों में सामान्य रिवाज है, क्योंकि इस में भी पशुओं की सी समानता है जिसे काफ़िरों का आचरण बताया गया है। हदीसों में खड़े-खड़े पानी पीने से कड़े रूप से रोका गया है, जिससे खड़े-खड़े खाने की मनाही अत्यधिक सिद्ध होती है। अत: पशुओं के समान खड़े होकर खाने से बचना अनिवार्य है।

[2]बुरे कर्म से अभिप्राय शिर्क तथा पाप है। तात्पर्य वही है जो पहले अनेक स्थान पर गुज़र चुका है कि मोमिन, काफ़िर, मुश्रिक, एकेश्वरवादी, सदाचारी एवं दुराचारी समान नहीं हो सकते। एक के लिये अल्लाह के सदन में अच्छा बदला तथा स्वर्ग के सुख हैं, जबकि दूसरे के लिए नरक का भयानक दण्ड है। आगामी आयत में दोनों का परिणाम बताया जा रहा है। पहले उस स्वर्ग की अच्छाईयाँ तथा विशेषतायें हैं जिनका वादा सदाचारियों से है।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ

(१५) उस स्वर्ग की विशेषता जिसका वायदा सदाचारियों से किया गया है, यह है कि उसमें (शीतल) जल की सरितायें प्रवाहित हैं, जो दुर्गान्धित नहीं[1] तथा दूध की नदियाँ हैं जिनका स्वाद परिवर्तित नहीं हुआ[2] तथा मदिरा की नहरें हैं, जिनमें पीने वालों के लिए अत्याधिक स्वाद है[3] तथा अत्यन्त स्वच्छ मधु की नहरें हैं[4] तथा

---

[1] آسن (आसिन) परिवर्तनशील। غير آسن अर्थात अपरिवर्तनशील। अर्थात संसार में तो पानी एक स्थान पर कुछ देर पड़ा रह जाये तो उसका रंग बदल जाता है तथा उसकी गंध एवं स्वाद में परिवर्तन आ जाता है, जिससे वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो जाता है। स्वर्ग के जल की यह विशेषता होगी कि उसमें कोई बदलाव नहीं होगा, अर्थात उसकी गंध तथा स्वाद में कोई परिवर्तन न होगा; जब पीओ ताज़ा, रूचिकर एवं स्वास्थ्य वर्धक। दुनिया का पानी जब ख़राब हो सकता है तो इसलिए धर्मविधान ने जल के विषय में कहा है कि यह उस समय तक पाक (पवित्र) है जब तक उसका रंग, स्वाद अथवा गंध न बदले, क्योंकि रंग या गंध बदलने की दशा में पानी अपवित्र (अशुद्ध) हो जायेगा।

[2]जिस प्रकार संसार में वह दूध कभी ख़राब हो जाता है जो गायों, भैंसों तथा बकरियों आदि के थनों से निकलता है, स्वर्ग का दूध चूँकि इस प्रकार जीवों के थनों से नहीं निकलेगा बल्कि उसकी नहरें होंगी, इसलिए जैसे वह अति स्वादिष्ट होगा ख़राब होने से भी सुरक्षित रहेगा।

[3]संसार में जो मदिरा मिलती है वह सामान्यत: कड़वी कटुस्वाद तथा दुर्गन्धित होती है। इसके अतिरिक्त, उसे पीकर इंसान साधारणत: भ्रांत मत हो जाता है, बकवाद करता है तथा अपने शरीर तक की सुध नहीं रखता। स्वर्ग की मदिरा देखने में सुन्दर, स्वाद में उत्तम तथा अत्यंत सुगंधित होगी, उसे पीकर कोई इंसान बहकेगा न किसी बोझ का संवेदन करेगा। बल्कि ऐसा स्वाद एवं आनन्द महसूस करेगा जिसकी कल्पना इस संसार में संभव नहीं। जैसे दूसरे स्थान पर कहा है :

﴿لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ﴾

"न उसे चक्कर आयेगा न मत मारी जायेगी।"(*अस्साफ़्फ़ात-४७*)

[4]अर्थात मधु में जिन वस्तुओं के मिश्रण की संभावना होती है जिसे दुनिया में साधारणत: देखा जाता है, स्वर्ग में ऐसी कोई संभावना न होगी, अत्यन्त साफ एवं स्वच्छ होगा, क्योंकि यह दुनिया की भाँति मधुमक्खियों से प्राप्त नहीं होगा अपितु उसकी भी नहरें

وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿١٥﴾

उनके लिए वहाँ पर हर प्रकार के मेवे (फल) हैं और उनके प्रभु की ओर से क्षमा है, क्या ये उसके समतुल्य हैं जो सदैव अग्नि में रहने वाले हैं तथा जिन्हें गर्म उबलता हुआ पानी पिलाया जायेगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।[1]

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ آنِفًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٦﴾

(१६) तथा उनमें कुछ (ऐसे भी हैं कि) तेरी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब तेरे पास से जाते हैं तो ज्ञानवालों से (आलस्य एवं भोंदेपन के कारण) पूछते हैं कि उसने अभी क्या कहा था ?[2] यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है तथा वे अपनी इच्छाओं का अनुगमन करते हैं।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى

(१७) तथा जो लोग सन्मार्ग प्राप्त हैं, अल्लाह

होंगी । इसी कारण हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम प्रार्थना करो तो "जन्नतुल फ़िरदौस" के लिए प्रार्थना करो, इसलिए कि यह स्वर्ग की मध्यम तथा सर्वोच्च श्रेणी है तथा वहीं से स्वर्ग की नहरें फूटती हैं तथा उसके ऊपर रहमान का आसन है । (सहीह बुख़ारी किताबुल जिहाद, बाबु दर्जातिल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाह)

[1]अर्थात जिनको स्वर्ग वह में उच्चतम श्रेणी प्राप्त होगी जिनका वर्णन किया गया, क्या वह ऐसे नरकवासियों के समान हैं जिनकी यह दुर्दशा होगी ? स्पष्ट बात है कि ऐसा नहीं होगा । अपितु एक उच्च स्थान में होगा तथा दूसरा नरक की तहों में, एक सुखों में आनंदित होगा तथा दूसरा नरक की कड़ी यातना भुगत रहा होगा, एक अल्लाह का अतिथि होगा जहाँ विभिन्न प्रकार की सुख-सुविधायें उनके अतिथि-सत्कार के लिए होंगी तथा दूसरा बंदी, जहाँ उसको खाने के लिए थूहड़ जैसा कड़ुवा-कसैला खाना तथा पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा ।

[2]यह मुनाफ़क़ीन (द्वयवादियों) का वर्णन है । चूँकि उनका विचार सही नहीं होता था, इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें भी उन्हें समझ में नहीं आती थीं । वह सभा से बाहर आकर प्रश्न करते कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या फ़रमाया ?

وَاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ⑰

(तआला) ने उन्हें संमार्ग में और बढ़ा दिया है तथा उन्हें उनका सदाचार प्रदान किया है ।[1]

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَاۤءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَاۤءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ⑱

(१८) तो क्या यह क़यामत की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उनके पास सहसा आ जाये। नि:संदेह उसके लक्षण तो आ चुके हैं,[2] फिर जब उनके पास क़यामत आ जाये उन्हें शिक्षा प्राप्त करना कहाँ होगा ?[3]

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

(१९) तो (हे नबी), आप विश्वास कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई (सच्चा) उपास्य नहीं[4] तथा अपने पापों की क्षमा माँगा करें तथा

---

[1]अर्थात जिनका मन संमार्ग प्राप्त करने का होता है तो अल्लाह उन्हें सन्मति भी प्रदान करता है तथा उनको उस पर अटल भी रखता है।

[2]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भेजा जाना स्वयं क़यामत के समीप होने का एक लक्षण है। जैसाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी फ़रमाया :

«بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ».

"मेरा आगमन तथा प्रलय इन दो अंगुलियों के समान हैं।" (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: नाज़िआत)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इशारा करके स्पष्ट किया कि जिस प्रकार यह दोनों अंगुलियाँ परस्पर मिली हुई हैं, इसी प्रकार मेरे तथा क़यामत के मध्य दूरी नहीं है। अथवा यह कि जैसे एक अंगुली दूसरी अंगुली से तनिक-सा आगे है इसी प्रकार क़यामत मेरे थोड़ा-सा वाद है।

[3]अर्थात जब क़यामत सहसा आ जायेगी तो काफ़िर कैसे शिक्षा ग्रहण करेंगे ? तात्पर्य यह है कि उस समय वह यदि क्षमा भी माँगेंगे तो स्वीकार्य नहीं होगी। अत: यदि तौबा (क्षमा-याचना) करनी हो तो यही समय है, नहीं तो वह समय भी आ सकता है कि उनकी तौवा भी लाभप्रद न होगी।

[4]अर्थात इस विश्वास पर अडिग तथा स्थिर रहें, क्योंकि यही तौहीद तथा अल्लाह का आज्ञापालन भलाई का मूलाधार है तथा इससे हटना अर्थात शिर्क तथा अवज्ञा बुराई का मूलाधार है।

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾

ईमानवाले पुरूषों एवं ईमानवाली महिलाओं के पक्ष में भी।[1] अल्लाह (तआला) तुम्हारे आवागमन तथा निवास स्थान को भली-भाँति जानता है।[2]

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा जो लोग ईमान लाये वे कहते हैं कि कोई सूरः क्यों अवतरित नहीं की गई,[3] फिर जब कोई स्पष्ट अर्थ वाली सूरः[4] अवतरित की जाती है तथा उसमें धर्मयुद्ध का वर्णन किया जाता है, तो आप देखते हैं कि जिनके दिलों में रोग है, वे आपकी ओर इस प्रकार देखते हैं कि जैसे उस व्यक्ति की दृष्टि होती है जो मृत्यु से मूर्छित हो गया हो,[5] बस अति उत्तम था उनके लिये।

---

[1]इसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्षमा माँगने का आदेश दिया गया है अपने लिए भी तथा ईमानदारों के लिए भी। इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगने) का बड़ा महत्व तथा प्रधानता है। हदीसों में इस पर बड़ा बल दिया गया है। एक हदीस (कथन) में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«يَاأَيُّهَا النَّاسُ! تُوبُوا إِلَى رَبِّكُمْ فَإِنِّي أَسْتَغْفِرُ اللهَ وَأَتُوبُ إِلَيهِ فِي اليَومِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً».

"लोगों, अल्लाह से तौबा एवं इस्तिग़फ़ार (क्षमा-याचना) किया करो, मैं भी अल्लाह से प्रतिदिन सत्तर बार से अधिक तौबा-इस्तिग़फ़ार करता हूँ।" (सहीह बुख़ारी, बाबु इस्तिग़फ़ारिन नबीये फिल यौमि वल लैलति)

[2]अर्थात दिन में तुम जहाँ फिरते तथा जो कुछ करते हो और रात में जहाँ विश्राम करते एवं स्थान ग्रहण करते हो, अल्लाह तआला (परमेश्वर) जानता है। अर्थ यह है कि रात-दिन की कोई गतिविधि अल्लाह से छिपी नहीं है।

[3]जब जिहाद (धर्मयुद्ध) का आदेश नहीं उतरा था तो जो मुसलमान जिहाद की भावना से पूर्ण थे, जिहाद में रूचि रखते थे तथा कहते थे कि इस विषय में कोई सूरः क्यों नहीं अवतरित की जाती ? अर्थात जिसमें जिहाद की अनुमति हो।

[4]अर्थात ऐसी सूरः जो निरस्त न हो।

[5]यह उन अवसरवादियों की चर्चा है जिनको जिहाद का आदेश बड़ा कठिन लगता था। उनमें कभी कम ईमान वाले भी सम्मिलित हो जाते थे। सूरः निसा आयत ७७ में भी यह विषय वर्णित है।

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ ۚ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾

(२१) आज्ञापालन करना तथा अच्छी बातें कहना,[1] फिर जब कार्य निर्धारित हो जाये,[2] तो यदि वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें,[3] तो उनके लिए अच्छाई है ।[4]

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِن تَوَلَّيْتُمْ أَن تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा तुमसे यह भी दूर (असंभव) नहीं कि यदि तुमको राज्य मिल जाये तो तुम धरती पर उपद्रव उत्पन्न कर दो[5] तथा रिश्ते-नाते तोड़ डालो ।

---

[1]अर्थात जिहाद के आदेश से घबराने की जगह उनके लिए उत्तम था कि सुनने तथा मानने का प्रदर्शन करते तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में असभ्य की जगह अच्छी बात कहते । यह أَوْلَىٰ (औला) أَجْدَرُ (अजदर) के अर्थ में है जिसे इब्ने कसीर ने अपनाया है । कुछ ने أَوْلَىٰ (औला) को धमकी एवं चेतावनी का शब्द अर्थात अभिशाप माना है । अर्थ है उनका विनाश निकट है, अभिप्राय है उनकी कायरता तथा अवसरवाद उनके विनाश का कारण बनेगा । इस आधार पर طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ पूर्ववर्ती वाक्य होगा तथा उसका विधेय लुप्त होगा خَيْرٌ لَّكُمْ । (फ़तहुल क़दीर, ऐसरूत्तफ़ासीर)

[2]अर्थात जिहाद की तैयारी पूरी हो जाये तथा जिहाद का समय आ जाये ।

[3]अर्थात अब भी अवसरवाद को त्याग कर अपने मन को अल्लाह के लिए शुद्ध कर लें, अथवा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जो लड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं, उसमें अल्लाह के साथ सच्चे रहें ।

[4]अर्थात अवसरवाद तथा विरोध के मुक़ाबिले में क्षमा याचना तथा विशुद्धता का प्रदर्शन उत्तम है ।

[5]एक-दूसरे की हत्या करके, अर्थात अधिकार तथा आधिपत्य का ग़लत प्रयोग करो । इमाम इब्ने कसीर ने تَوَلَّيْتُمْ का अनुवाद किया है । "तुम जिहाद (धर्मयुद्ध) से फिर जाओ तथा उससे विमुख हो जाओ" अर्थात फिर तुम मूर्खता के युग की ओर लौट जाओ तथा परस्पर रक्तपात तथा सम्बन्ध-विच्छेद करो । इसमें धरती में उपद्रव का साधारणत: तथा नाता तोड़ने का विशेष रूप से निषेध है और धरती में सुधार एवं नाता जोड़ने पर बल दिया गया है, जिसका अभिप्राय है कि संबन्धियों के साथ वचन से, कर्म से तथा धन व्यय करके अच्छा व्यवहार करो । हदीसों में भी इस पर बहुत बल दिया गया है तथा इसकी बहुत प्रधानता आयी है ।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمَىٰ أَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

(२३) यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह की धिक्कार है तथा (अल्लाह ने) जिनकी सुनने की शक्ति तथा आँखों की ज्योति छीन ली है ।[1]

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾

(२४) क्या यह क़ुरआन में चिन्तन-मनन नहीं करते ? अथवा उनके दिलों पर उनके ताले लग गये हैं ?[2]

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ﴿٢٥﴾

(२५) जो लोग अपनी पीठ के बल फिर गये इसके पश्चात कि उनके लिए मार्गदर्शन स्पष्ट हो चुका ।[3] निःसंदेह शैतान ने उन के लिए (उन के कार्यों को) शोभनीय कर दिया है तथा उन्हें ढील दे रखी है ।[4]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ

(२६) यह इसलिए[5] कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने अल्लाह की अवतरित की हुई (प्रकाशना) को बुरा समझा,[6] यह कहा कि हम भी निकट

---

[1]अर्थात ऐसे लोगों के कानों को (सत्य सुनने से) बहरा तथा आँखों को (सत्य देखने से) अंधा कर दिया है, यह परिणाम है उनके उपरोक्त कुकर्मों का ।

[2]जिसके कारण क़ुरआन के अर्थ तथा भावार्थ उनके दिलों के भीतर नहीं जाते ।

[3]इससे अभिप्राय मुनाफ़िक़ीन (द्वयवादी) ही हैं, जिन्होंने जिहाद (धर्मयुद्ध) से भाग कर अपने कुफ़्र तथा धर्म परिवर्तन को व्यक्त कर दिया ।

[4]इस क्रिया का कर्ता भी शैतान है । अर्थात مَدَّلَهُمْ فِي الأمَلِ و وَعَدهم طُولَ العُمُر अर्थात उन्हें लम्बी कामनाओं तथा इस धोखे में डाल दिया कि अभी तो तुम्हारी लम्बी आयु है, क्यों लड़ाई में अपने प्राण गंवाते हो ? अथवा कर्ता अल्लाह है, अल्लाह ने उन्हें ढील दी अर्थात तुरन्त उन्हें नहीं पकड़ा ।

[5]'ये' से तात्पर्य उनका इस्लाम धर्म से फिर जाना है ।

[6]अर्थात अवसरवादियों ने मुशरिकों से अथवा यहूदियों से कहा ।

فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾

भविष्य में कुछ कार्यों में [1] तुम्हारा कहा मानेंगे, तथा अल्लाह उनकी गुप्त बातों को भली-भाँति जानता है।[2]

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾

(२७) तो उनकी कैसी (दुर्गत) होगी, जब फ़रिश्ते उनके प्राण निकालते हुए उनके मुख तथा कमर पर मारेंगे।[3]

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾

(२८) यह इस कारण कि ये उस मार्ग पर चले जिससे (उन्होंने) अल्लाह (तआला) को क्रोधित कर दिया तथा उन्होंने उसकी प्रसन्न्ता को बुरा जाना तो अल्लाह ने उनके कर्मों को अकारत कर दिया।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

(२९) क्या उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग है, यह समझ रखा है कि अल्लाह उनके कपट को प्रकट ही न करेगा।[4]

---

[1]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा आप के लाये हुए धर्म के विरोध में।

[2]जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ﴾

"अल्लाह उनकी रातों की बात-चीत लिख रहा है।" (अन-निसा-८१)

[3]यह काफ़िरों की उस समय की स्थिति वर्णन की गई है जब फ़रिश्ते (यमदूत) उनके प्राण निकालते हैं। प्राण फ़रिश्तों से बचने के लिए शरीर में छुपते तथा इधर-उधर भागते हैं, तो फ़रिश्ते कड़ाई से उसे पकड़ते, खींचते और मारते हैं। यह विषय इससे पहले *सूर: अनआम-९३* तथा *सूर: अंफाल-५०* में भी गुज़र चुका है।

[4] أَضْغَان (अज़ग़ान) ضِغْن (ज़िग़्न) का बहुवचन है। जिसका अर्थ द्वेष, कपट तथा बैर है। मुनाफ़िकों (अवसरवादियों) के दिलों में इस्लाम तथा मुसलमानों के विरोध में जो ईर्ष्या तथा द्वेष था, उसके हवाले से कहा जा रहा है कि क्या यह समझते हैं कि अल्लाह तआला उसे व्यक्त करने पर समर्थ नहीं है?

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُم بِسِيمَٰهُمْ ۚ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِى لَحْنِ ٱلْقَوْلِ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَٰلَكُمْ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा यदि हम चाहते तो उन सबको तुझे दिखा देते तो तू उनके मुख से ही उनको पहचान लेता,[1] तथा निःसंदेह तू उन्हें उनकी बात के ढंग से पहचान लेगा,[2] तुम्हारे सारे कार्य अल्लाह को ज्ञात हैं।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ ٱلْمُجَٰهِدِينَ مِنكُمْ وَٱلصَّٰبِرِينَ وَنَبْلُوَا۟ أَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

(३१) निःसंदेह हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे ताकि तुममें से धर्मयुद्ध करने वालों तथा धैर्य रखने वालों को देख लें। तथा हम तुम्हारी अवस्थाओं का भी निरीक्षण कर लें।[3]

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَصَدُّوا۟ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ وَشَآقُّوا۟ ٱلرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ ٱلْهُدَىٰ لَن يَضُرُّوا۟ ٱللَّهَ شَيْـًٔا

(३२) निःसंदेह जिन लोगों ने कुफ्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोका तथा रसूल का विरोध किया इसके पश्चात कि उनके लिए मार्गदर्शन स्पष्ट हो चुका, यह कदापि-कदापि अल्लाह की कोई हानि न

---

[1]अर्थात एक-एक व्यक्ति का चिन्ह प्रकार बता देते कि प्रत्येक मुनाफ़िक को देखकर स्पष्ट रूप से पहचान लिया जाता। किन्तु सभी मुनाफ़िकों (द्वयवादियों) के लिए अल्लाह ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि यह अल्लाह के लिए दोषों पर पर्दा डालने के गुण के प्रतिकूल है। वह साधारणतः पर्दा डालता है, पर्दा फाश नहीं करता। दूसरे, उसने इंसानों को प्रत्यक्ष पर निर्णय करने का तथा अन्तःकरण के मामला को अल्लाह के हवाले करने का आदेश दिया है।

[2]हाँ, उसकी शैली तथा बात करने का ढंग ही ऐसा होता है जो उनके अंतःकरण का संकेत होता है, जिससे उसे पैग़म्बर तो अवश्य पहचान सकता है। यह साधारणतः देखा जाता है कि इंसान के मन में जो कुछ होता है, वह उसे लाख छुपाये किन्तु उसकी बात, चाल-चलन तथा कुछ विशेष स्थितियाँ उसके मन के भेद को व्यक्त कर देती हैं।

[3]अल्लाह तआला के ज्ञान में तो पहले ही से सब कुछ है। यहाँ ज्ञान से अभिप्राय उसका घटित एवं प्रकट होना है ताकि दूसरे भी जान लें तथा देख लें। इमाम इब्ने कसीर ने इस का भावार्थ वर्णन किया है حتى نعلم وقوعه 'हम उसके होने को जान लें।' इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हुमा इस प्रकार के शब्दों का अनुवाद करते थे لنرى 'ताकि हम देख लें' (इब्ने कसीर) और यही अर्थ अधिक शुद्ध है।

وَسَيُحۡبِطُ أَعۡمَٰلَهُمۡ ۝٣٢

करेंगे ।[1] शीघ्र ही उनके कर्म वह नष्ट कर देगा ।[2]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَطِيعُواْ ٱللَّهَ وَأَطِيعُواْ ٱلرَّسُولَ وَلَا تُبۡطِلُوٓاْ أَعۡمَٰلَكُمۡ ۝٣٣

(३३) हे ईमानवालो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो तथा रसूल का कहा मानो तथा अपने कर्मों को नाश न करो ।[3]

إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَصَدُّواْ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ مَاتُواْ وَهُمۡ كُفَّارٞ فَلَن يَغۡفِرَ ٱللَّهُ لَهُمۡ ۝٣٤

(३४) निःसन्देह जिन लोगों ने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग से (अन्यों को) रोका, फिर कुफ़्र की अवस्था में ही मर गये (विश्वास कर लो कि) अल्लाह उनको कदापि क्षमा न करेगा ।

فَلَا تَهِنُواْ وَتَدۡعُوٓاْ إِلَى ٱلسَّلۡمِ وَأَنتُمُ ٱلۡأَعۡلَوۡنَ وَٱللَّهُ مَعَكُمۡ

(३५) तो तुम क्षीण बन कर सन्धि की प्रार्थना पर न उतर आओ जबकि तुम ही (विजयी एवं) उच्च रहोगे ।[4] तथा अल्लाह तुम्हारे साथ

---

[1]बल्कि अपना ही बेड़ा डूबा देंगे ।

[2]क्योंकि ईमान के बिना अल्लाह के निकट किसी कर्म का कोई महत्व नहीं । ईमान तथा शुद्धता ही किसी भी अच्छे कर्म को इस योग्य बनाता है कि अल्लाह के पास उसका पुण्य मिले ।

[3]अर्थात मुनाफ़िक़ों तथा धर्मभ्रष्टों की भाँति द्रयवाद तथा धर्मभ्रष्ट करके अपने कर्मों को नष्ट न करो । यह मानो इस्लाम पर स्थिर (अडिग) रहने का आदेश है । कुछ ने पाप तथा कुकर्म को भी कर्म के नष्ट होने का कारण बताया है । इसीलिए मोमिनों के गुणों में एक गुण यह भी वर्णन किया गया है कि वह पाप तथा कुकर्म से बचते हैं । (*अन्नज्म*-३२) इस आधार पर इसमें पाप तथा कुकर्म से बचने पर बल है । इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि कोई कर्म कितना ही उत्तम क्यों न लगता हो यदि अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञापालन की परिधि से बाहर हो तो व्यर्थ तथा अकारथ है ।

[4]अभिप्राय यह है कि जब तुम संख्या तथा शक्ति में शत्रु पर प्रभुत्वशाली तथा उच्च हो तो ऐसी दशा में काफ़िरों के साथ संधि तथा निर्बलता का प्रदर्शन न करो, अपितु कुफ़्र पर ऐसी कड़ी मार लगाओ कि अल्लाह का धर्म ऊँचा हो जाये । प्रभुत्वशाली तथा भारी होते

وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ۝٣٥

है ।[1] (अपने ज्ञान द्वारा) असंभव है कि वह तुम्हारे कर्म नष्ट कर दे ।[2]

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْــَٔـلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ۝٣٦

(३६) वास्तव में साँसारिक जीवन तो खेलकूद है,[3] तथा यदि तुम ईमान लाओगे और संयम अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे कर्मफल देगा तथा वह तुमसे तुम्हारे धन नहीं माँगता ।[4]

اِنْ يَّسْــَٔـلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ۝٣٧

(३७) यदि वह तुम से तुम्हारा धन माँगे तथा बल देकर माँगे तो तुम उससे कंजूसी करने लगोगे तथा वह तुम्हारे खोट को प्रकट

हुए कुफ्र के साथ संधि का अभिप्राय कुफ्र के प्रभाव को बढ़ाने में सहायता देना है। यह एक बड़ा अपराध है । इसका मतलब यह नहीं कि काफिरों के साथ संधि करने की अनुमति नहीं है । यह अनुमति निश्चित रूप से है किन्तु प्रत्येक समय नहीं, मात्र उस समय जब मुसलमान संख्या में कम तथा साधनों में नीचे हों। ऐसी अवस्था में लड़ाई की अपेक्षा संधि में अधिक लाभ है ताकि इस अवसर का लाभ प्राप्त कर मुसलमान भरपूर तैयारी कर लें, जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का के नास्तिकों से युद्ध न करने का दस वर्ष के लिए समझौता किया था।

[1]इसमें मुसलमानों के लिए काफ़िरों पर भारी विजय तथा सहायता की शुभ सूचना है। जिसके साथ अल्लाह हो उसे कौन पराजित कर सकता है ?

[2]अपितु वह उस पर पूरा फल देगा तथा उसमें कोई कमी नहीं करेगा।

[3]अर्थात एक धोखा है। उसकी किसी चीज़ का आधार है न उसको स्थिरता और न उसका विश्वास।

[4]अर्थात वह तुम्हारे धनों से निस्पृह है। इसलिए उसने ज़कात (धर्मदान) में तुमसे पूरे माल की माँग नहीं की। अपितु एक अति अल्पभाग का अर्थात केवल ढाई प्रतिशत की, वह भी एक वर्ष के पश्चात अपनी आवश्यकता से अधिक होने पर। इसके अतिरिक्त उसका उद्देश्य भी, अपने ही भाई-बन्धुओं की सहायता तथा हित है, न कि अल्लाह तुम्हारे माल से अपने राज्य का ख़र्च पूरा करता है।

कर देगा ।[1]

(३८) सावधान ! तुम वह लोग हो कि अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने के लिए बुलाये जाते हो[2] तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं,[3] तथा जो कंजूसी करता है वह वस्तुत: अपने आप से कंजूसी करता है। अल्लाह (तआला) निस्पृह है तथा तुम मुहताज हो,[4] तथा यदि तुम विमुख हो जाओ[5] तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे अतिरिक्त अन्य लोगों को लायेगा जो फिर तुम जैसे न होंगे ।[6]

هَٰٓأَنتُمْ هَٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنفِقُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَمِنكُم مَّن يَبْخَلُ ۖ وَمَن يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ وَٱللَّهُ ٱلْغَنِىُّ وَأَنتُمُ ٱلْفُقَرَآءُ ۚ وَإِن تَتَوَلَّوْا۟ يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوٓا۟ أَمْثَٰلَكُم ﴿٣٨﴾

---

[1]अर्थात यदि आवश्यकता से अधिक पूरे माल की माँग करे, वह भी दुराग्रह के साथ वल देकर तो यह इंसानी स्वभाव है कि तुम भी कंजूसी करोगे तथा इस्लाम के विरूद्ध अपनी शत्रुता एवं बैर का प्रदर्शन भी।

[2]अर्थात कुछ भाग ज़कात स्वरूप तथा कुछ अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो।

[3]अर्थात स्वयं ही को अल्लाह की राह मे ख़र्च करने के पुण्य से वंचित रखता है।

[4]अर्थात अल्लाह तुम्हें ख़र्च करने का प्रलोभन (प्रोत्साहन) इसलिए नहीं देता कि उसे तुम्हारे माल की आवश्यकता है। नहीं, वह तो अपेक्षामुक्त है, निस्पृह है। वह तो तुम्हारे ही लाभ के लिए यह आज्ञा देता है कि एक तो तुम्हारे अपने मनों की शुद्धि हो। दूसरे, निर्धनों की आवश्यकता पूरी हो। तीसरे, तुम शत्रु पर प्रभावशाली तथा उच्च रहो। अत: अल्लाह की सहायता एवं दया की आवश्यकता तुमको है, न कि अल्लाह को।

[5]अर्थात इस्लाम से कुफ़्र की ओर फिर जाओ।

[6]अपितु तुमसे अधिक अल्लाह तथा रसूल के आज्ञापालक तथा अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले होंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनके विषय में पूछा गया तो आप ने आदरणीय सलमान फ़ारसी रज़ी अल्लाहु अन्हु के कंधे पर हाथ रखकर फ़रमाया : "इससे अभिप्राय यह तथा इसकी जाति है। सौगंध है उसकी जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, यदि ईमान सुरय्या (कृत्तिका) नक्षत्र (तारे) पर हो तो उसे फ़ारस के कुछ लोग प्राप्त कर लेंगे।" (तिर्मिज़ी, अलबानी ने अस्सहीहा में वर्णन किया ३\१४)

सूरतुल फ़त्ह-४८

سُوْرَةُ الْفَتْحِ

सूरः फ़त्ह * मदनी सूरः है। इसमें उन्तीस आयतें तथा चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है।

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ①

(१) नि:संदेह (हे नबी)! हमने आपको एक खुली विजय प्रदान की है।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ

(२) ताकि जो कुछ तेरे पाप पूर्व में हुए तथा

---

*६ हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा लगभग एक हज़ार चार सौ सहाबा उमरे के लिए मक्का गये। किन्तु मक्का के निकट हुदैबिया के स्थान पर काफ़िरों ने आपको रोक दिया। तथा उमरा नहीं करने दिया। आपने आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु को अपना प्रतिनिधि बनाकर मक्का भेजा ताकि वह कुरैश के प्रमुखों से बात कर के उन्हें मुसलमानों को उमरा करने की आज्ञा देने पर तैयार करें। किन्तु आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु के मक्का जाने के पश्चात उनकी शहादत (हत्या) की अफवाह फैल गई, जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से आदरणीय उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु का बदला लेने के लिए "बैअत" प्रतिज्ञा करायी। जो 'बैअते रिज़्वान' कहलाती है। यह अफ़वाह ग़लत सिद्ध हुई, फिर भी काफ़िरों ने अनुमति नहीं दी तथा मुसलमानों ने आगामी वर्ष के वचन पर वापसी का इरादा कर लिया। वहीं सिर भी मुंडा लिये तथा वलि भी कर लिया। उस के अतिरिक्त काफ़िरों से कुछ अन्य बातों पर समझौता हुआ जिन्हें सहाबा की बहुमत नापसन्द करती थी। किन्तु नबी की निगाह ने इसके दूरगामी प्रभाव का अनुमान लगाते हुए काफ़िरों की शर्तों पर ही समझौते को उत्तम समझा। हुदैबिया से मदीने की ओर वापस आते हुए मार्ग में यह सूरः अवतरित हुई, जिसमें संधि को खुली विजय कहा गया, क्योंकि यह संधि मक्का की विजय का आधार सिद्ध हुई तथा इसके दो वर्ष बाद ही मुसलमानों ने मक्का में विजेता के रूप में प्रवेश किया। इसी कारण कुछ सहाबा कहते थे कि तुम मक्का की विजय को विजय मानते हो तथा हम हुदैबिया के समझौते को विजय गिनते हैं। तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरः के संबन्ध में फ़रमाया कि आज की रात मुझ पर वह सूरत अवतरित हुई है जो मुझे संसार तथा उसकी प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रिय है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाबु ग़ज़्वतिल हुदैबिया व तफ़सीरे *सूरतिल फ़त्ह*)

مِن ذَنۢبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعۡمَتَهُۥ عَلَيۡكَ وَيَهۡدِيَكَ صِرَٰطٗا مُّسۡتَقِيمٗا ٢

जो पीछे हुए सबको अल्लाह (तआला) क्षमा कर दे[1] तथा तुझ पर अपने उपकार पूर्ण कर दे[2] तथा तुझे सीधे मार्ग पर चलाये ।[3]

وَيَنصُرَكَ ٱللَّهُ نَصۡرًا عَزِيزًا ٣

(३) तथा आपको एक शक्तिशाली सहायता प्रदान करे ।

هُوَ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ لِيَزۡدَادُوٓاْ إِيمَٰنٗا مَّعَ إِيمَٰنِهِمۡۗ وَلِلَّهِ جُنُودُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ

(४) वही है जिसने मुसलमानों के हृदय में शान्ति (एवं आत्मविश्वास) डाल दिया, ताकि वे अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें ।[4] तथा आकाशों एवं धरती की (समस्त) सेनायें अल्लाह ही की हैं,[5] तथा

---

[1]इससे तात्पर्य प्रथम त्याग के विषय अथवा वह विषय हैं जो आपने अपनी समझ तथा अनुमान से किये किन्तु अल्लाह ने उन्हें पसन्द नहीं किया, जैसे अब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम की घटना है, जिस पर सूरः 'अबस' उतरी । यह विषय तथा बातें यद्यपि गुनाह (पाप) तथा निर्दोषता के विपरीत नहीं, किन्तु आपकी मर्यादा (महानता) को देखते हुए उन्हें भी आलस्य मान लिया गया जिस पर क्षमा की घोषणा की जा रही है । لِيَغْفِرَ में लाम कारणवाची है, अर्थात यह खुली विजय उन तीन चीज़ों का कारण है जो आयत में वर्णित हैं । तथा यह पापों की क्षमा का कारण इसलिए है कि इस संधि के पश्चात इस्लाम धर्म स्वीकार करने वालों की संख्या बहुत बढ़ी, जिससे आप के भारी पुण्य में भी अधिकता हुई तथा पुण्य कर्म, कुकर्मों के लिए प्रायश्चित हैं ।

[2]उस धर्म को प्रभुत्व देकर जिसका आमंत्रण तुम देते हो अथवा विजय तथा प्रभुत्व प्रदान करके, तथा कुछ कहते हैं कि क्षमा तथा संमार्ग पर दृढ़ता यही उपहार की पूर्ति है ।

[3]अर्थात उस पर दृढ़ता सुलभ कराये । मार्गदर्शन की उत्तम श्रेणी से सम्मानित करे ।

[4]अर्थात उस व्यग्रता के पश्चात, जो मुसलमानों को हुदैबिया की शर्तों के कारण हुई, अल्लाह ने उनके दिलों को शान्ति प्रदान की जिससे उनके दिलों को अधिक संतोष तथा ईमान प्राप्त हुआ । यह आयत भी प्रमाण है कि ईमान में कमी तथा अधिकता होती है ।

[5]अर्थात यदि अल्लाह तआला चाहे तो अपनी किसी सेना (जैसे फ़रिश्तों) से काफ़िरों का विनाश करा दे, किन्तु उसने अपनी हिक्मत के कारण ऐसा नहीं किया तथा उसकी जगह मोमिनों को युद्ध तथा जिहाद का आदेश दिया । इसलिए आगे अपना गुण सर्वज्ञ عليم तत्वदर्शी حكيم बताया है । अथवा अभिप्राय है कि आकाश तथा धरती के फ़रिश्ते तथा इसी प्रकार अन्य शक्तिशाली सेना सब अल्लाह के अधीन हैं तथा उनसे जैसे चाहे काम

عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٤﴾

अल्लाह (तआला) सर्वज्ञ हिक्मत वाला है।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عِندَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٥﴾

(५) ताकि मुसलमान पुरूषों एवं महिलाओं को उन स्वर्गों में ले जाये, जिनके[1] नीचे जल स्रोत प्रवाहित हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे तथा उनसे उनके पाप को मिटा दे। तथा अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ी सफलता है।

وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّانِّينَ بِاللَّهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿٦﴾

(६) तथा ताकि उन मुनाफ़िक़ पुरूषों एवं मुनाफ़िक़ महिलाओं को तथा मूर्तिपूजक पुरूषों एवं मूर्तिपूजक महिलाओं को यातना दे, जो अल्लाह (तआला) के सम्बन्ध में कुविचार रखने वाले हैं।[2] (वास्तव में) उन्हीं पर बुराई का चक्र है।[3] अल्लाह उन पर क्रोधित हुआ तथा उन्हें धिक्कारा और उनके लिए नरक तैयार किया, तथा वह लौटने का (अत्यन्त) बुरा स्थान है।

وَلِلَّهِ جُنُودُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٧﴾

(७) तथा अल्लाह ही के लिए आकाशों एवं धरती की सेनायें हैं तथा अल्लाह शक्तिशाली

लेता है। कई बार वह एक काफ़िर समूह को दूसरे काफ़िर समूह पर प्रभुत्व देकर मुसलमानों की सहायता का मार्ग पैदा कर देता है। आशय यह वर्णन करना है कि हे मुसलमानो ! अल्लाह को तुम्हारी ज़रूरत नहीं, वह अपने पैग़म्बर तथा धर्म की सहायता का काम किसी भी गिरोह तथा सेना से ले सकता है। (इब्ने कसीर तथा ऐसरूत्तफ़ासीर)

[1]हदीस में आता है कि जब मुसलमानों ने सूरः फ़त्ह का आरम्भिक भाग सुना لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा आपको बधाई हो, हमारे लिए क्या है ? जिस पर अल्लाह ने आयत لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ अवतरित कर दी। (सहीह बुख़ारी, बाबु गज़्वतिल हुदैबियह) कुछ कहते हैं कि यह لِيَزْدَادُوا अथवा يَنصُرَكَ से संबन्धित है।

[2]अर्थात अल्लाह के आदेशों पर आरोप लगाते हैं तथा सहाबा के संबन्ध में भ्रम रखते हैं कि यह पराजित अथवा हत हो जायेंगे तथा इस्लाम धर्म समाप्त हो जायेगा। (इब्ने कसीर)

[3]यह जिस चक्र, यातना अथवा विनाश की मुसलमानों के लिए प्रतिक्षा कर रहे हैं, वह तो उन्हीं का भाग्य बनने को है।

एवं हिम्मत वाला है ।[1]

إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ شَٰهِدٗا وَمُبَشِّرٗا وَنَذِيرٗا ۝٨

(८) निःसंदेह हमने तुझे साक्षी देने वाला तथा शुभ-सूचना सुनाने वाला एवं सचेत करने वाला बनाकर भेजा है ।

لِّتُؤۡمِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكۡرَةٗ وَأَصِيلًا ۝٩

(९) ताकि (हे मुसलमानो !) तुम अल्लाह तथा उसके रसूल पर ईमान लाओ तथा उसकी सहायता करो और उसका आदर करो, तथा अल्लाह की पवित्रता का सुबह-शाम वर्णन करो ।

إِنَّ ٱلَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ ٱللَّهَ يَدُ ٱللَّهِ فَوۡقَ أَيۡدِيهِمۡۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفۡسِهِۦۖ وَمَنۡ أَوۡفَىٰ بِمَا عَٰهَدَ عَلَيۡهُ ٱللَّهَ فَسَيُؤۡتِيهِ أَجۡرًا عَظِيمٗا ۝١٠

(१०) जो लोग तुझसे बैअत (अल्लाह एवं उसके रसूल की आज्ञा तथा अनुसरण की वचन बद्धता प्रकट करना) करते हैं वह निःसंदेह अल्लाह ही से बैअत करते हैं ।[2] उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है,[3] तो जो व्यक्ति वचन तोड़े वह अपने आप पर ही वचन तोड़ता है[4] तथा जो व्यक्ति उस वचन को

[1]यहाँ उसे मुनाफ़िक़ों तथा काफ़िरों के सन्दर्भ में पुनः वर्णन किया कि अल्लाह तआला अपने इन विरोधियों को हर प्रकार से विध्वस्त करने पर समर्थ है । यह अलग बात है कि वह अपनी हिक्मत के अधीन उनको जितना चाहे अवसर दे दे ।

[2]यह बैअत वास्तव में अल्लाह ही की है, क्योंकि उसी ने जिहाद (धर्मयुद्ध) का आदेश दिया है । जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया कि यह अपने प्राणों तथा मालों का स्वर्ग के बदले अल्लाह से सौदा है । (*अत्तौबा*-१११) यह इसी प्रकार है, जैसे ﴿مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدۡ أَطَاعَ ٱللَّهَ﴾ (अन-निसा-८०)

[3]आयत से वही 'बैअते रिज्वान' अभिप्राय है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय उस्मान की शहादत (हत्या) की सूचना सुनकर उनका बदला लेने के लिए हुदैबियह में उपस्थित १४या १५ सौ मुसलमानों से ली थी ।

[4] نَكَثَ (वचन भंग करने) से तात्पर्य यहाँ बैअत तोड़ देना अर्थात प्रतिज्ञानुसार युद्ध में भाग न लेना है । अर्थात जो व्यक्ति ऐसा करेगा तो उसका वबाल उसी पर पड़ेगा ।

पूरा करे जो उसने अल्लाह के साथ किया है[1] तो उसे शीघ्र ही अल्लाह बहुत बड़ा बदला (पुण्य) देगा।

(११) देहातियों में से जो पीछे छोड़ दिये गये थे वे अब तुझसे कहेंगे कि हम अपने धन तथा संतान में लगे रह गये तो आप हमारे लिए क्षमा की प्रार्थना कीजिए,[2] ये लोग अपने मुखों से वह कहते हैं जो उनके हृदय में नहीं है।[3] आप उत्तर दे दीजिए कि तुम्हारे लिए अल्लाह की ओर से किसी बात का भी अधिकार कौन रखता है यदि वह तुम्हें हानि पहुँचाना चाहे,[4] अथवा तुम्हें कोई लाभ

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١١﴾

---

[1]कि वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता करेगा, उनके साथ होकर युद्ध करेगा यहाँ तक कि अल्लाह मुसलमानों को विजय तथा प्रभुत्व प्रदान करे।

[2]इससे मदीने के आसपास आबाद जातियाँ गिफ़ार, मुज़ैनह, जुहैनह, अस्लम तथा अन्य जातियाँ अभिप्राय हैं। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वप्न देखने के पश्चात (जिसका विवरण बाद में आयेगा) उमरे के लिए मक्का जाने की आम घोषणा करा दी। उक्त जातियों ने सोचा कि वर्तमान स्थिति तो मक्का जाने के लिए अनुकूल नहीं। वहाँ अभी काफ़िरों का प्रभुत्व है तथा मुसलमान निर्बल हैं, तथा मुसलमान उमरे के लिए शस्त्र धारण करके नहीं जा सकते। यदि ऐसे में काफ़िरों ने मुसलमानों से युद्ध करने का निर्णय ले लिया तो निहत्थे मुसलमान उनका मुक़ाबला कैसे करेंगे ? इस समय मक्का जाने का अर्थ स्वयं का विनाश करना है। इसलिए यह लोग आप के साथ उमरे के लिए नहीं गये। अल्लाह तआला उनके विषय में फ़रमा रहा है कि यह तुझ से कामों का बहाना करेंगे तथा क्षमा-याचना के लिए प्रार्थनायें करेंगे।

[3]अर्थात मुखों पर तो यह है कि हमारे पीछे हमारे घरों तथा बाल-बच्चों का संरक्षक कोई नहीं था। अत: हमें स्वयं ही रूकना पड़ा, किन्तु वास्तव में उनका पीछे रहना निफ़ाक़ (अवसरवाद) तथा मृत्यु के भय के कारण था।

[4]अर्थात यदि अल्लाह तुम्हारे माल ध्वस्त करने तथा तुम्हारे परिवार को विनाश करने का निर्णय कर ले तो क्या तुममें से कोई ऐसा है जो उसे ऐसा न करने दे।

पहुँचाना चाहे ।[1] बल्कि तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह (तआला) भली-भाँति परिचित है ।[2]

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ إِلَىٰٓ أَهْلِيْهِمْ أَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِىْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُوْرًا ﴿١٢﴾

(१२) (नहीं) बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि पैग़म्बर एवं मुसलमानों का अपने घरों की ओर लौट आना पूर्णत: असंभव है तथा यही विचार तुम्हारे दिलों में बस गया था; तुमने कुविचार कर रखा था ।[3] (वास्तव में) तुम लोग हो भी नष्ट होने वाले ।[4]

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَإِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾

(१३) तथा जो व्यक्ति अल्लाह पर तथा उसके रसूल पर ईमान न लाये तो हमने भी ऐसे काफ़िरों के लिए दहकती (प्रज्वलित) अग्नि तैयार कर रखी है ।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾

(१४) तथा आकाशों एवं धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है, जिसे चाहे क्षमा कर दे तथा जिसे चाहे यातना दे, तथा अल्लाह तआला अत्यन्त क्षमाशील कृपालु है ।[5]

---

[1]अर्थात तुम्हें सहायता पहुँचाना तथा ग़नीमत प्रदान करना चाहे तो कोई रोक सकता है? यह वास्तव में उपरोक्त पीछे रह जाने वालों का खंडन है, जिन्होंने यह अनुमान कर लिया था कि यदि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ नहीं गये तो हानि से सुरक्षित तथा लाभ से लाभान्वित होंगे, जबकि लाभ तथा हानि का सर्वाधिकार अल्लाह ही के हाथ में है ।

[2]अर्थात तुम्हें तुम्हारे कर्मों का पूरा फल देगा ।

[3]तथा वह यही था कि अल्लाह अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता नहीं करेगा । यह वही प्रथम अनुमान है, यहाँ बल देने के लिए दुहराया गया है ।

[4]بُوْرٌ - بَائِرٌ का बहुवचन है, नाशवान, अर्थात यह वह लोग हैं जिनका भाग्य विनाश है । यदि यह संसार में अल्लाह के प्रकोप से बच गये तो परलोक में बच कर नहीं जा सकते, वहाँ तो दण्ड अवश्य भुगतना है ।

[5]इसमें पिछड़ने वालों के लिए क्षमा माँगने तथा अल्लाह की ओर ध्यान करने का

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوهَا ذَرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۖ يُرِيدُونَ أَن يُبَدِّلُوا كَلَامَ اللَّهِ ۚ قُل لَّن تَتَّبِعُونَا كَذَٰلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِن قَبْلُ ۖ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥﴾

(१५) जब तुम (युद्ध में प्राप्त) परिहार लेने जाने लगोगे तो तुरन्त ये पीछे छोड़े हुए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने की आज्ञा दीजिए,[1] वे चाहते हैं कि अल्लाह (तआला) के कथन को बदल दें।[2] (आप) कह दें कि अल्लाह (तआला) पूर्व ही में कह चुका है कि तुम कदापि हमारा अनुगमन न करोगे।[3] तो वे उसका उत्तर देंगे (नहीं-नहीं) बल्कि तुम हमसे द्वेष रखते हो।[4] (वास्तविक बात यह है) कि वे लोग बहुत ही कम समझते है।[5]

प्रलोभन है कि यदि वह द्वयवाद से तौबा कर लें तो अल्लाह तआला उन्हें क्षमा कर देगा। वह अति क्षमावान दयानिधि है।

[1]इसमें ख़ैबर के युद्ध की चर्चा है, जिसकी विजय की शुभसूचना अल्लाह ने हुदैबियह में दी थी, तथा अल्लाह ने यह भी फ़रमाया था कि यहाँ से जितना भी धन प्राप्त होगा वह केवल हुदैबियह में सम्मिलित लोगों का भाग है। जैसाकि हुदैबियह से वापसी के पश्चात जब आप ने यहूदियों के निरन्तर वचन भंग करने के कारण ख़ैबर पर चढ़ाई की योजना बनाई तो उपरोक्त पिछड़ों ने भी मात्र युद्ध-धन प्राप्त करने के लिए साथ जाने का विचार प्रकट किया, जिसे स्वीकार नहीं किया गया। आयत में मग़ानिम से अभिप्राय ख़ैबर में प्राप्त माल ही है।

[2]अल्लाह के वचन से अभिप्राय अल्लाह का ख़ैबर से प्राप्त माल (ग़नीमत) को हुदैबियह वालों के लिए विशेष करने का वचन है। मुनाफ़िक़ीन (अवसरवादी) इसमें भाग लेकर अल्लाह के वचन को बदलना चाहते थे।

[3]यह नकार निषेधाज्ञा के अर्थ में है, अर्थात तुम्हें हमारे साथ चलने की अनुमति नहीं है। अल्लाह का आदेश भी यही है।

[4]अर्थात यह पिछड़े लोग कहेंगे कि तुम ईर्ष्या के कारण हमें साथ ले जाने से भाग रहे हो ताकि ग़नीमत के माल में हम तुम्हारे साझी न हों।

[5]अर्थात बात यह नहीं है जो वह समझ रहें, अपितु यह प्रतिबंध उनके पीछे रहने के दण्ड स्वरूप है। किन्तु वास्तविक बात उनकी समझ में नहीं आ रही है।

قُل لِّلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلَىٰ قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۖ فَإِن تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۖ وَإِن تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُم مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾

(१६) (आप) पीछे छोड़े हुए देहातियों से कह दीजिए कि शीघ्र ही तुम एक अत्यन्त योद्धा समुदाय की ओर बलाये जाओगे कि तुम उनसे युद्ध करोगे अथवा वे मुसलमान हो जायेंगे ।[1] तो यदि तुम आज्ञापालन करोगे[2] तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अति उत्तम बदला देगा,[3] तथा यदि तुमने मुख फेर लिया जैसाकि तुम इससे पूर्व मुख फेर चुके हो, तो वह तुम्हें कष्टदायी यातना देगा ।[4]

لَّيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۗ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي

(१७) अन्धे पर कोई पाप नहीं, न लंगड़े पर कोई पाप है तथा न रोगी पर कोई पाप है ।[5] और जो कोई अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करे, उसे अल्लाह ऐसे स्वर्ग में प्रवेश देगा जिसके (वृक्षों के) नीचे से सरितायें

---

[1]इस योद्धा समुदाय के निश्चितता में मतभेद है । कुछ व्याख्याकारों ने इससे अरब ही की कुछ जातियाँ तात्पर्य ली हैं, जैसे हवाज़िन अथवा सकीफ़, जिनसे हुनैन के स्थान पर मुसलमानों से युद्ध हुआ अथवा मुसैलमा कज़्ज़ाब की जाति बनू हनीफ़ा । कुछ ने फ़ारस तथा रोम के अग्निपूजक एवं इसाई तात्पर्य लिये हैं । उन पीछे रह जाने वाले देहातियों से कहा जा रहा है कि शीघ्र ही एक लड़ाकू जाति से युद्ध करने के लिए तुम्हें बुलाया जायेगा । यदि वे मुसलमान न हुए तो उनके तथा तुम्हारे बीच युद्ध होगा ।

[2]अर्थात शुद्ध मन से मुसलमानों के साथ मिलकर लड़ोगे ।

[3]दुनिया में ग़नीमत (परिहार) तथा आख़िरत में पापों की क्षमा एवं स्वर्ग ।

[4]अर्थात जिस प्रकार हुदैबियह के अवसर पर मुसलमानों के साथ मक्का जाने से भागे थे, उसी प्रकार अब भी तुम जिहाद से भागोगे तो फिर अल्लाह की दुखद यातना तुम्हारे लिये तैयार है ।

[5]अंधेपन तथा लंगड़ेपन के कारण चल फिर न सकना, यह दोनों तो अवश्य विवशता है । ऐसे विवश अथवा उनके समान अन्य लाचारों को जिहाद से अलग कर दिया गया । حرج (हरज) का अर्थ दोष है । इनके अलावा जो रोग हैं वह सामयिक विवशता हैं । जब तक वह वास्तव में रोगी हैं जिहाद में भाग लेने से अलग हैं । रोग दूर होते ही वह जिहाद में दूसरे मुसलमानों के साथ भाग लेंगे ।

مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَمَن يَتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٧﴾

प्रवाहित हैं, तथा जो मुख फेर ले उसे कष्टदायी यातनायें देगा।

لَّقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَنزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾

(१८) नि:संदेह अल्लाह (तआला) ईमानवालों से प्रसन्न हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तुझसे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे।[1] उनके दिलों में जो कुछ था उसे उसने ज्ञात कर लिया[2] तथा उन पर शान्ति अवतरित किया[3] तथा उन्हें निकट की विजय प्रदान की।[4]

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٩﴾

(१९) तथा बहुत से परिहार जिन्हें वे प्राप्त करेंगे,[5] तथा अल्लाह प्रभावशाली हिक्मत वाला है।

وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً

(२०) अल्लाह तआला ने तुमसे बहुत सारी

---

[1]यह उन बैअते रिज़्वान में सम्मिलित सहाबा के लिए अल्लाह की प्रसन्नता तथा उनके पक्के-सच्चे मोमिन होने का प्रमाण है, जिन्होंने हुदैबियह में एक पेड़ के नीचे इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) की कि वह मक्का के कुरैश से लड़ेंगे तथा भागेंगे नहीं।

[2]अर्थात उनके दिलों में जो सच्चाई तथा सफ़ाई की भावनायें थीं, अल्लाह उनसे भी परिचित है। इससे सहाबा के उन शत्रुओं का खंडन हो गया जो कहते हैं कि उनका ईमान ऊपरी था, वह दिल से मुनाफ़िक़ (अवसरवादी) थे।

[3]अर्थात वह निहत्थे थे, युद्ध के विचार से नहीं गये थे इसलिए अस्त्र-शस्त्र उचित मात्रा में नहीं थे। फिर भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदरणीय उस्मान का प्रतिशोध लेने के लिए उनसे जिहाद की बैअत (वचन) लिया तो बिना सोचे सब लड़ने को तैयार हो गये। अर्थात हमने मौत का डर उनके दिलों से निकाल दिया तथा उसके स्थान पर शान्ति तथा धैर्य उन पर उतार दिया, जिसके कारण उन्हें लड़ने का उत्साह हुआ।

[4]इससे अभिप्राय वही ख़ैबर की विजय है, जो यहूदियों का गढ़ था तथा हुदैबियह से वापसी पर मुसलमानों ने उसे विजय किया।

[5]यह वह ग़नीमतें (परिहार) हैं जो ख़ैबर में प्राप्त हुई। यह अति उपजाऊ तराई का क्षेत्र था। इसी हिसाब से यहाँ से मुसलमानों को अत्याधिक माल ग़नीमत में प्राप्त हुआ, जिसे केवल हुदैबियह वालों में वितरण किया गया।

تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ ﴿٢٠﴾

ग़नीमतों (परिहारों) का वायदा किया है[1] जिन्हें तुम प्राप्त करोगे, बस यह तो तुम्हें शीघ्र ही प्रदान कर दी[2] तथा लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये[3] ताकि ईमानवालों के लिए यह एक निशानी हो जाये[4] तथा ताकि वह तुम्हें सीधे मार्ग पर चलाये।[5]

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾

(२१) तथा तुम्हें अन्य (ग़नीमते परिहार) भी दे जिन पर अब तक तुमने नियन्त्रण नहीं पाया। अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपने नियन्त्रण में रखा है,[6] तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है।

---

[1]यह अन्य विजयों में प्राप्त ग़नीमतों की शुभसूचना है जो क़यामत तक के लिए मुसलमानों को प्राप्त होने वाली हैं।

[2]अर्थात ख़ैबर की विजय और हुदैबियह समझौता, क्योंकि यह दोनों तो शीघ्र रूप से मुसलमानों को प्राप्त हो गयीं।

[3]हुदैबियह में काफ़िरों के हाथ तथा ख़ैबर में यहूदियों के हाथ अल्लाह ने रोक दिये, अर्थात उन्हें निरूत्साह कर दिया तथा वे मुसलमानों से लड़ न सके।

[4]अर्थात लोग इस घटना के वर्णन का अध्ययन करके यह अनुमान लगा लेंगे कि अल्लाह तआला कम संख्या रहते हुए भी मुसलमानों का संरक्षक तथा उन्हें शत्रुओं पर विजय प्रदान करने वाला है, अथवा यह रोक लेना सभी वचन दी गयी बातों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सत्यता का लक्षण है।

[5]अर्थात संमार्ग पर दृढ़ता प्रदान करे अथवा इस प्रतीक से तुम्हें मार्गदर्शन में और अधिक करे।

[6]यह आगामी विजय तथा उनके द्वारा प्राप्त होने वाली ग़नीमतों की ओर सकेंत है। जिस प्रकार चार दिवारी करके किसी वस्तु को अपने नियन्त्रण में कर लिया जाता है और फिर उसके विषय में निश्चिन्तता हो जाती है, इसी प्रकार अल्लाह तआला ने इन विजयों को अपने अधिकार के घेरे में ले लिया है। अर्थात यद्यपि अभी तुम्हारी विजय की परिधि वहाँ तक विस्तृत नहीं हुई है किन्तु अल्लाह ने उसे तुम्हारे लिए अपने नियन्त्रण में कर रखा है, वह जब चाहेगा उस पर तुम्हें प्रभुत्व प्रदान करेगा, जिसमें कोई संदेह की बात नहीं, इसलिए कि वह प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है। कुछ ने घेरने का अर्थ ज्ञान किया है अर्थात उसे ज्ञात है कि वह क्षेत्र भी तुम विजय करोगे।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَن يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوهُمْ أَن تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُم مِّنْهُم مَّعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِّيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٢٥﴾

(२५) यही वे लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया तथा तुमको मस्जिदे हराम से रोका तथा बलि के लिए रूके हुए पशुओं को उसके स्थान तक पहुँचने से (रोका),[1] तथा यदि ऐसे (बहुत-से) मुसलमान पुरूष तथा (बहुत-सी) मुसलमान महिलायें न होतीं, जिनकी तुमको सूचना न थी[2] कि तुम उनको रौंद दोगे जिस पर उनके कारण तुमको भी अनजाने में हानि पहुँचती[3] (तो तुम्हें लड़ने की आज्ञा दे दी जाती[4] परन्तु ऐसा नहीं किया गया)[5] ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा में जिसको चाहे सम्मिलित कर ले तथा यदि ये अलग-

---

[1] هَدْيٌ (हदी) उस पशु को कहा जाता है जिसे हज अथवा उमरा करने वाला अपने संग मक्का ले जाता है। مَحِلٌّ (महिल्ल) से अभिप्राय बलि का स्थान है जहाँ उनको ले जाकर वध किया जाता है। यह स्थान उमरा करने वालों के लिए अज्ञानता काल में 'मर्वह' पहाड़ी के पास तथा हाजियों के लिए 'मिना' था।इस्लाम में बलि का स्थान मक्का, मिना और पूर्ण हरम है। مَعْكُوفًا (माकूफ़न) स्थिति-वाचक है, अर्थात यह पशु इस प्रतीक्षा में रूके थे कि मक्के में प्रवेश करें ताकि उन्हें वध किया जाये। तात्पर्य यह है कि इन काफ़िरों ने ही तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था तथा जो पशु तुम्हारे साथ थे उन्हें भी बलि स्थल तक नहीं पहुँचने दिया।

[2]अर्थात मक्के में अपना ईमान छिपा कर रह रहे थे।

[3]काफ़िरों के साथ लड़ाई की दशा में संभव था कि यह भी मारे जाते तथा तुम्हें नुकसान पहुँचता। مَعَرَّةٌ का मूल अर्थ दोष है। यहाँ तात्पर्य प्रायश्चित तथा वह बुराई तथा लज्जा है जो काफ़िरों के कारण तुम्हें उठानी पड़ती। अर्थात एक तो ग़लती से हत्या की दियत (अर्थदण्ड) देना पड़ता, दूसरे काफ़िरों का यह व्यंग सुनना पड़ता कि यह अपने मुसलमान साथियों को भी मार डालते हैं।

[4]यह لَوْلَا (लौला, यदि) का लुप्त उत्तर है, अर्थात यदि यह बात न होती तो तुम्हें मक्का में प्रवेश करने तथा कुरैश से लड़ने की अनुमति दे दी जाती।

[5]बल्कि मक्कावासियों को अवसर दे दिया गया ताकि जिसे अल्लाह चाहे इस्लाम का सौभाग्य प्रदान कर दे।

अलग होते तो उनमें जो काफ़िर थे, हम उनको कष्टदायी दण्ड देते ।[1]

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ

(२६) जबकि उन[2] काफ़िरों ने अपने दिलों में पक्षपात (भावना) को स्थान दिया तथा पक्षपात भी अज्ञानता का, तो अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल पर तथा ईमान वालों पर अपनी ओर से शान्ति (संतोष) अवतरित किया[3] तथा

---

[1] تَزَيَّلُوا यह تَمَيَّزُوا के अर्थ में है। अभिप्राय यह है कि मक्का के निवासी मुसलमान यदि काफ़िरों से अलग रहते तो हम तुम्हें मक्कावासियों से लड़ने की अनुमति दे देते तथा तुम्हारे हाथों उन्हें वध कराते तथा इस प्रकार उन्हें दुखदायी यातना देते। عذاب اليم से तात्पर्य यहाँ हत्या, बंदी बनाना तथा प्रकोप एवं प्रभुत्व है।

[2] إِذْ का संबंध لَعَذَّبْنَا से है अथवा وَاذْكُرُوا से, जो लुप्त है। अर्थात उस समय को याद करो जब इन काफ़िरों ने ....

[3] काफ़िरों की इस अज्ञानतापूर्ण भावना (अहंकार एवम् पक्षपात) से अभिप्राय मक्कावासियों का मुसलमानों को मक्का में प्रवेश से रोकना है। उन्होंने कहा कि इन्होंने हमारे पुत्रों तथा बापों की हत्या किया है। लात तथा उज़्ज़ा की सौगन्ध कि उन्हें हम कभी यहाँ प्रवेश नहीं करने देंगे, अर्थात उन्होंने इसको अपनी मर्यादा तथा सम्मान की समस्या बना लिया। इसी को अज्ञानता का पक्षपात कहा गया, क्योंकि काबा में उपासना के लिए आने से रोकने का किसी को अधिकार प्राप्त नहीं था। कुरैश की इस कटुता की नीति से यह भय था कि मुसलमानों की भावनायें भी भड़क जातीं तथा वह भी इसे अपनी मर्यादा की समस्या बनाकर मक्का जाने पर अड़ जाते, जिससे दोनों में लड़ाई छिड़ जाती तथा यह लड़ाई मुसलमानों के लिए बड़ी ख़तरनाक रहती (जैसाकि पहले संकेत दिया जा चुका है) इसलिए अल्लाह ने मुसलमानों के दिलों में शान्ति उतार दी अर्थात उनमें धैर्य तथा सहनशीलता पैदा कर दी तथा वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथनानुसार हुदैबिया ही में रूके रहे। आवेश तथा जोश में आकर मक्का जाने का प्रयास नहीं किया। कुछ कहते हैं कि इस अज्ञानता के पक्षपात से अभिप्राय कुरैश का वह आचरण है जो उन्होंने समझौते के लिए तथा संधि के समय अपनाया। यह आचरण तथा संधि दोनों मुसलमानों के लिए प्रत्यक्ष रूप से असहनीय था। किन्तु परिणाम के आधार पर चूँकि इसमें इस्लाम तथा मुसलमानों का अत्योत्तम लाभ था, इसलिए अल्लाह ने मुसलमानों को अति अप्रियता तथा बोझ के उपरान्त भी उसे स्वीकारने का साहस दिया। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का के कुरैश

وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوٓا۟ أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٦﴾

मुसलमानों को संयम की बात पर दृढ़ रखा[1] तथा वे इसके योग्य तथा अधिक पात्र थे तथा अल्लाह (तआला) प्रत्येक वस्तु को भली-भाँति जानता है।

के भेजे हुए प्रतिनिधियों की यह बात मान ली कि इस वर्ष मुसलमान उमरे के लिए मक्का नहीं जायेंगे तथा यहीं से वापस हो जायेंगे तो फिर आपने आदरणीय अली रज़ी अल्लाहु अन्हु को संधि पत्र लिखने का आदेश दिया। उन्होंने आपके आदेश से बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर रहीम लिखा। उन्होंने इस पर आलोचना की कि रहमान, रहीम (दयावान, कृपानिधि) को हम नहीं जानते। हमारे यहाँ जो नाम प्रयुक्त हो उसके साथ अर्थात बेइस्मिक अल्लाहुम्म (हे अल्लाह, तेरे नाम से) लिखो। आपने ऐसे ही लिखवाया। फिर आपने लिखवाया, "यह वह संधि पत्र है जिस पर मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) (ईशदूत) ने मक्कावासियों से समझौता किया है।" कुरैश के प्रतिनिधियों ने कहा कि मतभेद का आधार तो आपकी रिसालत (ईशदूत होना) ही है। यदि हम आपको अल्लाह का संदेशवाहक मान लें तो इसके पश्चात झगड़ा ही क्या रह जाता है ? फिर हमें आपसे लड़ने तथा बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) से रोकने की आवश्यकता ही क्या है ? यहाँ आप मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की जगह मोहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह लिखें। आपने आदरणीय अली को ऐसा ही लिखने का आदेश दिया। यह मुसलमानों के लिए अति उत्तेजना का विषय था। यदि अल्लाह मुसलमानों पर शान्ति न उतारता तो वह कभी सहन न कर सकते थे। आदरणीय अली रज़ी अल्लाहु अन्हु ने अपने हाथ से मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के शब्द मिटाने तथा काटने से इंकार कर दिया, जिसे स्वयं आपने मिटाया तथा उस स्थान पर पवित्र हाथ से मोहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह लिखवाया। समझौते अथवा संधि में तीन बातें लिखी गयीं। १- मक्कावासी जो आपके पास मुसलमान होकर आयेगा उसे वापस कर दिया जायेगा। २- जो मुसलमान मक्कावासियों से जा मिलेगा वह उसे वापस करने पर बाध्य न होंगे। ३- मुसलमान आगामी वर्ष मक्का आयेंगे तथा यहाँ तीन दिन रह सकेंगे किन्तु शस्त्र साथ लाने की अनुमति न होगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाबु सुल्हिल हुदैबियह फिल हुदैबियह) तथा इसके साथ दो बातें और लिखी गयीं (१) दस (१०) वर्ष लड़ाई स्थगित रहेगी। (२) कबायेल में से जो चाहे मुसलमानों के साथ तथा जो चाहे कुरैश के साथ हो जाये।

[1]इससे अभिप्राय तौहीद तथा रिसालत का सूत्र "ला एलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसुलुल्लाह" है। जिसे हुदैबियह के दिन मुशरेकीन (बहुदेववादियों) ने इंकार किया। (इब्ने कसीर) अथवा वह धैर्य तथा शान्ति (सम्मान) है जिसका प्रदर्शन उन्होंने हुदैबियह में किया, अथवा वह प्रतिज्ञा का पालन तथा उस पर दृढ़ता है, जो संयम का परिणाम है। (फ़तहुल क़दीर)

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۖ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ ۖ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِن دُونِ ذَٰلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿٢٧﴾

(२७) वास्तव में अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल को स्वप्न सत्य दिखाया कि यदि अल्लाह ने चाहा तो तुम अवश्य पूर्ण शान्ति-सुरक्षा के साथ मस्जिदे हराम में प्रवेश करोगे, सिर मुंडवाते हुए तथा सिर के बाल कटवाते हुए (शान्ति के साथ) निर्भीक होकर,[1] वह उन बातों को जानता है जिन्हें तुम नहीं जानते,[2] तो उसने उससे पहले एक निकट की विजय तुम्हें प्रदान की ।[3]

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ

(२८) वही है जिसने अपने रसूल को पथ-प्रदर्शन एवं सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभावी[4] करे तथा अल्लाह (तआला)

---

[1]हुदैबिया की घटना से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को स्वप्न में मुसलमानों के साथ बैतुल्लाह (अल्लाह के घर काबा) में जाकर परिक्रमा तथा उमरह करते दिखाया गया । नबी का सपना प्रकाशना के बराबर होता है । फिर भी इस सपने में यह निश्चित नहीं था कि यह इसी वर्ष होगा, किन्तु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा मुसलमान इसे बड़ी शुभसूचना समझते हुए उमरे के लिए तुरन्त तैयार हो गये, इसके लिए जनसाधारण में घोषणा करा दी तथा चल पड़े, अन्त में हुदैबियह में वह समझौता हुआ, जिसका विवरण अभी गुज़रा जबकि अल्लाह के ज्ञान में यह स्वप्न आगामी वर्ष साकार होना था । जैसाकि आगामी वर्ष मुसलमानों ने अति शान्ति के साथ यह उमरह किया तथा अल्लाह ने अपने पैग़म्बर के सपने को सच कर दिया ।

[2]अर्थात यदि हुदैबियह के स्थान पर संधि न होती तो मक्के में आबाद निर्बल मुसलमानों को हानि पहुँचती । संधि के इन लाभों को अल्लाह ही जानता था ।

[3]इससे ख़ैबर तथा मक्का की विजय के अतिरिक्त संधि के परिणाम स्वरूप जो अधिकांश मुसलमान हुए वह भी तात्पर्य है, क्योंकि वह भी विजय का एक महान रूप है । हुदैबियह समझौते के अवसर पर मुसलमान डेढ़ हज़ार थे । इसके दो वर्ष बाद जब मुसलमान मक्के में विजेता स्वरूप प्रवेश किये तो उनकी संख्या दस हज़ार थी ।

[4]इस्लाम का यह प्रभाव तो अन्य धर्मों पर प्रमाणों के आधार पर तो हर समय मान्य है । फिर भी सांसारिक तथा फ़ौजी आधार पर भी प्रथम युग में तथा उसके पश्चात जब तक मुसलमान अपने धर्म पर कार्यरत रहे उनका प्रभुत्व रहा, तथा आज भी यह भौतिक

كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

पर्याप्त है साक्षी देने वाला।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِى التَّوْرٰىةِ ۚۖۛ وَمَثَلُهُمْ فِى الْاِنْجِيْلِ ۚۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ

(२९) मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं तथा जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों पर कठोर हैं आपस में दयालु हैं, तू उन्हें देखेगा कि रूकूअ तथा सजदे कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) की कृपा तथा प्रसन्नता की कामना में हैं। उनका निशान उनके मुख पर सजदों के प्रभाव से है, उनका यही गुण (उदाहरण) तौरात में है तथा उनका उदाहरण इंजील[1] में है उस खेती के समान जिसने अपना अंकुर निकाला, [2] फिर उसे मज़बूत किया तथा वह मोटा हो गया, फिर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया तथा किसानों को प्रसन्न करने लगा[3] ताकि उनके

प्रभुत्व संभव है जबकि मुसलमान, मुसलमान बन जायें।

﴿وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾

"तुम ही प्रभावशाली (एवं उच्च) रहोगे यदि तुम ईमानदार हो।" (*आल-इमरान-१३९*)

यह धर्म प्रभावी होने के लिए ही आया है, पराजित होने के लिए नहीं।

[1] إِنجِيل (इंजील) पर वक्फ़ (रूकने) की दशा में यह अर्थ होगा कि उनके जो यह गुण क़ुरआन में वर्णित हैं, उनके यही गुण तौरात तथा इंजील में भी उल्लेख हैं। तथा आगे كَزَرْعٍ में इससे पहले هُمْ (हम) लुप्त होगा, तथा कुछ فِي التَّوراة पर वक्फ़ करते (रूकते) हैं अर्थात उनका उपरोक्त गुण तौरात में है तथा مَثَلُهُم فِي الإِنجِيل को كَزَرْعٍ के साथ मिलते हैं। अर्थात इंजील में उनका उदाहरण उस खेती के समान है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] شَطْأَه पौधे का वह प्रथम प्रकटन है जो दाना फाड़ कर अल्लाह की शक्ति से (अल्लाह के सामर्थ्य से) बाहर निकलता है।

[3] यह सहाबा केराम का दृष्टान्त (मिसाल) वर्णन किया गया है। आरम्भ में वह कम थे, फिर अधिक तथा शक्तिशाली हो गये, जैसे खेती आरम्भ में क्षीण होती है, फिर दिन

مَّغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

कारण काफ़िरों को चिढ़ाये,[1] तथा ईमान-वालों तथा सत्कर्मियों से अल्लाह ने क्षमा का तथा बहुत बड़े पुण्य का वायदा किया है ।[2]

सूरतुल हुजुरात-४९

سُورَةُ الْحُجُرَاتِ

सूर: हुजुरात* मदीने में अवतरित हुई, इसमें अट्ठारह आयतें तथा दो रूकूअ हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु एवं अत्यन्त कृपालु है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ وَرَسُولِهِ

(१) हे ईमान वालो ! अल्लाह तथा उसके रसूल से आगे न बढ़ो[3] तथा अल्लाह से डरते रहा

प्रतिदिन दृढ़ होती जाती है यहाँ तक कि दृढ़ तने पर खड़ी हो जाती है ।

[1]अथवा काफ़िर क्रोध में ग्रस्त हों । अर्थात सहाबा केराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम का बढ़ता प्रभाव तथा उनकी प्रतिदिन बढ़ती शक्ति एवं बल काफ़िरों के लिए क्रोध तथा रोष का कारण था, क्योंकि इससे इस्लाम का क्षेत्र बढ़ रहा था तथा कुफ़्र सीमित हो रहा था । इस आयत से तर्क देते हुए कुछ धर्मविद्वानों ने सहाबये केराम से ईर्ष्या तथा शत्रुता रखने वालों को काफ़िर सिद्ध किया है ।

[2]इस पूरी आयत का एक-एक भाग सहाबा केराम की प्रतिष्ठा एवं प्रधानता, पारलौकिक मोक्ष तथा महान पुण्य को स्पष्ट कर रहा है । इसके बाद भी सहाबा (नबी के साथियों) के ईमान में संदेह करने वाला मुसलमान होने का दावा करे तो उसे मुसलमान होने के दावे में कैसे सच्चा समझा जा सकता है ?

*यह तिवाले मुफ़स्सल (विस्तृत) की प्रथम सूरह है, हुजोरात से नाज़िआत तक की सूरतें तिवाले मुफ़स्सल कहलाती हैं । कुछ ने सूरह 'काफ़' को प्रथम सूरह कहा है । (इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर) इनका फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में पढ़ना मस्नून तथा मुस्तहब (उत्तम) है । सूरह अबस से सूरहतुश्शम्स तक औसाते मुफ़स्सल (मध्यम) तथा सूरह ज़ुहा से अन्नास तक क़िसारे मुफ़स्सल (अल्प) हैं । ज़ोहर तथा ईशा में औसात तथा मग़रिब में किसार पढ़नी मुस्तहब (उत्तम) हैं । (ऐसरूत्तफ़ासीर)

[3]इसका अभिप्राय है कि धर्म के विषय में स्वयं कोई निर्णय न करो, न अपनी समझ तथा विचार को प्रधानता दो, अपितु अल्लाह तथा रसूल की आज्ञा का पालन करो । अपनी ओर से धर्म में अधिकता या बिदआत (नई बातें) बनाना अल्लाह एवं रसूल से आगे बढ़ने

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ①

करो । नि:संदेह अल्लाह (तआला) सुनने जानने वाला है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ②

(२) हे ईमानवालो ! अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से उच्च न करो तथा उनसे उच्च स्वर में बात न करो जैसे आपस में एक-दूसरे से करते हो। (कहीं ऐसा न हो) कि तुम्हारे कर्म व्यर्थ हो जायें तथा तुम्हें पता भी न हो।[1]

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

(३) वास्तव में जो लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के समक्ष अपनी आवाज़ धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने सदाचार के लिए जाँच लिया है। उनके लिए क्षमा है तथा बड़ा पुण्य है।[2]

का दुस्साहस है, जो किसी भी ईमान वाले के लिए योग्य नहीं। इसी प्रकार कोई फतवा (धर्माज्ञा) क़ुरआन तथा हदीस में विचार किये बिना न दिया जाये तथा देने के बाद यदि धार्मिक सूत्रों (क़ुरआन तथा हदीस) के विपरीत होना स्पष्ट हो जाये तो उस पर अड़े रहना भी इस आयत में दी गई आज्ञा के प्रतिकूल है। मुसलमान का आचरण तो अल्लाह एवं रसूल के आदेशों के आगे समर्पण तथा अनुपालन के लिए सिर झुका देना है, न कि उनके मुक़ाबले में अपनी बात अथवा किसी इमाम के विचार पर अड़े रहना।

[1]इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये आदर-सम्मान का वर्णन है, जिसकी प्रत्येक मुसलमान से माँग है। प्रथम सम्मान यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति में जब बात करो तो तुम्हारी आवाज़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ से ऊँची न हो। दूसरा सम्मान है, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बात करो तो अति गंभीरता तथा शान्ति से करो। ऐसी ऊँची-ऊँची आवाज़ से न करो जैसे आपस में बेधड़क एक-दूसरे से करते हो। कुछ ने कहा कि हे मोहम्मद ! हे अहमद न कहो, अपितु आदर से 'हे अल्लाह के रसूल' कहकर सम्बोधित करो। यदि आदर तथा सम्मान की इन माँगों को ध्यान में न रखोगे तो निरादर की संभावना है, जिससे असावधानी में तुम्हारे कर्म अकारथ हो सकते हैं। इस आयत के अवतरण के कारण के लिए देखिए सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल हुजुरात। फिर भी आदेशानुसार यह आयत सामान्य है।

[2]इसमें उन लोगों की प्रशंसा है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मान-मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपनी आवाज़ धीमी रखते थे।

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ④

(४) नि:सन्देह जो लोग आप को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें से अधिकतर (पूर्णत:) बुद्धिहीन हैं ।[1]

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑤

(५) तथा यदि ये लोग यहाँ तक धैर्य रखते कि आप (स्वयं) उनके पास आ जाते तो यही उनके लिए श्रेष्ठकर होता,[2] तथा अल्लाह (तआला) क्षमावान दयावान है ।[3]

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا

(६) हे ईमानवालो ! यदि तुम्हें कोई भ्रष्टाचारी सूचना दे तो तुम उसकी भली-भाँति छानबीन कर लिया करो,[4] (ऐसा न हो) कि अनभिज्ञता

---

[1]यह आयत क़बीला बनू तमीम के कुछ आराबियों (गँवार लोगों) के विषय में अवतरित हुई, जिन्होंने एक दिन दोपहर के समय जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विश्राम का समय था, कमरे से बाहर खड़े होकर जन-साधारण के अंदाज़ में हे मुहम्मद, हे मुहम्मद की आवाज़ लगायी, ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर आयें। (मुसनद अहमद ३\४८८-६\३९४) अल्लाह ने फ़रमाया कि इनमें अधिकतर बुद्धिहीन हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रताप तथा आपकी मान-मर्यादा की माँगों का ध्यान न रखना मूर्खता है ।

[2]अर्थात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकलने की प्रतीक्षा करते तथा आपको पुकारने में शीघ्रता न करते तो धर्म तथा संसार दोनों रूप से उत्तम होता।

[3]इसलिए पकड़ नहीं की अपितु भविष्य के लिए आदर एवं सम्मान करने पर बल दे दिया।

[4]यह आयत अधिकतर भाष्यकारों के विचार में आदरणीय वलीद बिन उक्बा के संबंध में अवतरित हुई है, जिन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू मुस्तलिक के सदके (धर्मदान) वसूल करने के लिए भेजा था। किन्तु उन्होंने आकर सूचना दी कि उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया है, जिस पर आपने उन पर आक्रमण करने का इरादा किया, फिर पता लग गया कि यह बात ग़लत थी तथा वलीद रज़ी अल्लाहु अन्हु वहाँ गये ही नहीं । किन्तु प्रमाण तथा घटना दोनों के आधार पर यह कथन सहीह नहीं। इसलिए इसे एक सहाबी पर थोपना सहीह नहीं है। फिर भी अवतरण के कारण की बहस से अलग होकर इसमें एक अति महत्वपूर्ण नियम वर्णन किया गया है, जिसका व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों सतहों पर बड़ा महत्व है । प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रशासन का यह उत्तरदायित्व है कि उसके पास जो भी सूचना आये विशेष रूप से कुकर्मी, दुराचारी तथा उपद्रवी प्रकार के लोगों की ओर से तो पहले उसका पता लगाया जाये ताकि भ्रान्ति में

قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ⑥

के कारण किसी समुदाय को हानि पहुँचा दो, फिर अपने किये पर पछतावो।

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ۚ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّاشِدُونَ ⑦

(७) तथा जान रखो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं,[1] यदि वह बहुत-सी बातों में तुम्हारा कहा करते रहें तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ, परन्तु अल्लाह (तआला) ने ईमान को तुम्हारे लिए प्रिय बना दिया है तथा उसे तुम्हारे हृदय में सुशोभित कर दिया है और कुफ़्र को एवं कुकर्मों को तथा अवज्ञाकारिता को तुम्हारी दृष्टि में अप्रिय बना दिया है। यही लोग मार्ग प्राप्त हैं।

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑧

(८) अल्लाह के उपकार एवं अनुग्रह से,[2] तथा अल्लाह जानने वाला तथा हिक्मत वाला है।

وَإِن طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا ۖ

(९) तथा यदि मुसलमानों के दो गुट आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मेल-मिलाप करा दिया करो।[3] फिर यदि उनमें से एक-दूसरे पर

किसी के विपरीत कोई कार्यवाही न हो।

[1]जिसकी माँग यह है कि उनका आदर तथा अनुगमन करो, क्योंकि वह तुम्हारा हित अधिक जानते हैं, इसलिए कि उन पर प्रकाशना अवतरित होती है। अत: तुम उनका अनुगमन करो, उनको अपना अनुगामी बनाने का प्रयास न करो, क्योंकि यदि वह तुम्हारे पसन्द की बातें मानना आरम्भ कर दें तो तुम स्वयं ही विपदा में पड़ जाओगे। जैसे दूसरे स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ وَمَن فِيهِنَّ ﴾

"यदि सत्य ही उनके स्वार्थों का अनुपालनकर्त्ता हो जाये तो धरती तथा आकाश एवं उनके मध्य की सभी चीज़ें अस्त-व्यस्त हो जायें।" (*अल-मोमिनून-७१*)

[2]यह आयत भी सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम की प्रतिष्ठा तथा उनके ईमान तथा सुधार एवं संमार्ग पर होने का खुला प्रमाण है।

[3]इस संधि (सुलह) का ढंग यह है कि उन्हें कुरआन तथा हदीस की ओर बुलाया जाये अर्थात उनके प्रकाश में उनके मतभेद का समाधान किया जाये।

فَإِنْۢ بَغَتْ إِحْدَىٰهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَٰتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيٓءَ إِلَىٰٓ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِن فَآءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوٓا ۖ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝٩

अत्याचार करे तो तुम (सब) उस गुट से जो अत्याचार करता है लड़ो यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आये।[1] यदि लौट आये तो न्याय के साथ उनके बीच संधि करा दो[2] तथा न्याय करो। नि:संदेह अल्लाह (तआला) न्याय करने वालों से प्रेम करता है।[3]

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝١٠

(१०) (याद रखो) समस्त मुसलमान भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो।[4] तथा अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर कृपा की जाये।[5]

---

[1]अर्थात अल्लाह तथा रसूल के आदेशानुसार अपना मतभेद दूर करने को तैयार न हो तथा विद्रोह की नीति अपनाये तो दूसरे मुसलमानों का दायित्व है कि सब मिलकर विद्रोहियों से लड़ाई करें यहाँ तक कि वह अल्लाह के आदेश को मानने के लिए तैयार हो जाये।

[2]अर्थात विद्रोही गिरोह विद्रोह से रुक जाये तो फिर न्याय के साथ अर्थात क़ुरआन तथा हदीस के प्रकाश में दोनों गिरोहों के बीच सुलह करा दी जाये।

[3]तथा प्रत्येक विषय में न्याय करो, इसलिए कि अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है, तथा यह पसंद इस बात को आवश्यक बनाती है कि वह न्याय करने वालों को उत्तम फल प्रदान करेगा।

[4]यह पूर्व के आदेश पर ही बल दिया गया है। अर्थात जब मुसलमान आपस में भाई हैं तो सबका मूल ईमान हुआ। अत: मूल के महत्व की माँग है कि एक ही धर्म पर विश्वास रखने वाले आपस में न लड़ें वरन् परस्पर हितैषी, सहयोगी तथा शुभ-चिन्तक रहें। कभी ग़लती तथा भ्रम से उनमें दूरी एवं घृणा पैदा हो जाये तो उसे दूर करके आपस में पुन: जोड़ दिया जाये। (देखिए सूरह *तौबा आयत* न॰ ७१ की व्याख्या)

[5]तथा प्रत्येक मामले में अल्लाह से डरो, संभवत: उसके कारण तुम अल्लाह की दया के पात्र बन जाओ। (आशा की बात) संबोधित के आधार पर है। अन्यथा अल्लाह की दया तो ईमान वालों तथा सदाचारियों के लिए निश्चित है।

इस आयत में विद्रोही गिरोह से लड़ने का आदेश है जबकि हदीस में मुसलमान से युद्ध को कुफ्र कहा गया है। तो यह कुफ्र उस समय होगा जब मुसलमानों से अकारण युद्ध किया जाये। किन्तु इस युद्ध का आधार विद्रोह है तो यह युद्ध न केवल उचित है अपितु इसका आदेश दिया गया है, जो बल देने तथा उत्तम होने का संकेत है। इसी प्रकार

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُونُوا۟ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّن نِّسَآءٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا۟ بِٱلْأَلْقَٰبِ ۖ بِئْسَ ٱلِٱسْمُ ٱلْفُسُوقُ بَعْدَ ٱلْإِيمَٰنِ ۚ وَمَن لَّمْ

(११) हे ईमानवालो ! पुरूष दूसरे पुरूषों का उपहास न करें, संभव है कि यह उनसे श्रेष्ठ हों[1] तथा न महिलायें महिलाओं का उपहास करें, संभव है कि ये उनसे श्रेष्ठ हों, तथा आपस में एक-दूसरे पर आक्षेप (त्रुटि) न लगाओ[2] तथा न किसी को बुरी उपाधि दो ।[3] ईमान के पश्चात अपशब्द बुरा नाम है,[4] तथा

विद्रोही गिरोह को क़ुरआन ने मोमिन ही कहा, जिसका अभिप्राय यह है कि केवल विद्रोह के कारण जो महापाप है, वह ईमान से निकलेगा नहीं, जैसाकि ख़्वारिज तथा कुछ मुअतज़िला का भ्रम है कि महापापी ईमान से निकल जाता है । अब कुछ अति महत्वपूर्ण नैतिक शिक्षायें मुसलमानों को दी जा रही हैं ।

[1]एक व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति का परिहास अर्थात उपहास उस समय करता है जब वह अपने को उससे उत्तम तथा उसे हीन एवं पतित समझता है । हालाँकि अल्लाह के समक्ष कौन कर्म तथा ईमान में उत्तम है तथा कौन नहीं, इसको मात्र अल्लाह ही जानता है । अत: स्वयं को श्रेष्ठ तथा अन्य को पतित समझने का कोई औचित्य ही नहीं है । इस कारण से आयत में उससे रोका गया है । कहते हैं कि स्त्रियों में यह नैतिक रोग अधिक होता है । इसलिए स्त्रियों का अलग से वर्णन करके विशेष रूप से उन्हें भी उससे रोक दिया गया है । तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन में लोगों को हीन समझने को अहंकार बताया गया है । «اَلْكِبْرُ بَطَرُ الحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ». (अबू दाऊद, किताबुल लिबास, बाबु मा जाअ फिल किब्रे) तथा घंमड अल्लाह को अत्यन्त अप्रिय है ।

[2]अर्थात एक-दूसरे पर कटाक्ष मत करो, जैसे तू अमुक का पुत्र है, तेरी मां ऐसी-वैसी है, तू अमुक वंश का है आदि ।

[3]अर्थात अपनी ओर से उपहास तथा अपमानित करने के लिये ऐसे नाम रख लेना जो उन्हें अप्रिय हों । अथवा अच्छे-भले नामों को बिगाड़ कर बोलना यह تنابز بالألقاب है जिससे रोका गया है ।

[4]अर्थात इस प्रकार नाम बिगाड़ कर, अथवा बुरे नाम रखकर बुलाना, अथवा इस्लाम लाने तथा तौबा कर लेने के बाद उसे पूर्व धर्म अथवा पाप से संबन्धित करके संबोधित करना, जैसे हे काफ़िर, हे व्यभिचारी, हे शराबी आदि, बुरा काम है । الإسم यहां الذكر के अर्थ में है, अर्थात بئس الاسم الذي يذكر بالفسق بعد دخولهم في الإيمان (फ़तहुल क़दीर) हां, कुछ वह नाम जो विशेष गुण के कारण हों, कुछ के निकट इससे अलग हैं जो किसी के लिए विख्यात हो जायें तथा वह इस पर अपने मन में दुखी न हों, जैसे लंगड़ा

يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّٰلِمُونَ ۝١١ يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ

जो क्षमा न माँगे वही अत्याचारी लोग हैं।

(१२) हे ईमानवालो ! अधिकांश बुरे अनुमानों (धारणाओं) से बचो; विश्वास करो कि कुछ बुरे अनुमान पाप हैं,[1] तथा भेद न टटोला करो[2] और न तुममें से कोई किसी की बुराई (पीठ पीछे) चुग़ली करे।[3] क्या तुममें से कोई

होने के कारण किसी का नाम लंगड़ा पड़ जाये, काला रंग होने के कारण कालिया अथवा कालू प्रख्यात हो जाये आदि। (क़ुर्तबी)

[1] ظَـــن (ज़न्न) का अर्थ है गुमान करना। अभिप्राय है कि सदाचारियों तथा सत्कर्मियों के विषय में ऐसे गुमान रखना जो निर्मूल हों तथा आरोप एवं आक्षेप के अंतर्गत आते हों, इसीलिए इसका अनुवाद बुरा अनुमान किया जाता है तथा इसे हदीस में «أَكْذَبُ الْحَدِيث» (सबसे बड़ा झूठ) कहकर इससे बचने पर बल दिया गया है। «إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ» (बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब (يا أيها الذين آمنوا اجتنبوا كثيراً من الظن) (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे बाबु तहरीमिज़्ज़न्ने वत् तजस्सुस) अन्यथा दुष्कर्मियों तथा दुराचारियों से उनके पापों के कारण तथा उनके पापों पर बदगुमानी (बुरी धारणा) रखना यह वह बदगुमानी नहीं जिसे यहाँ पाप कहा गया है तथा उससे बचने पर बल दिया गया है (إن الظَّنَّ القَبِيح بِمَنْ ظَاهِرُهُ الْخَيْرُ لَا يَجُوزُ؛ وإنَّه لَا حَرَجَ فِي الظَّن القَبِيح بِمَنْ ظَاهِرُهُ القَبِيحُ). "जो ऊपर से अच्छा हो उसके संबंध में बदगुमानी बुरी है तथा जो ऊपर से बुरा हो उसके विषय में वदगुमानी बुरी नहीं।" (अल क़ुर्तबी)

[2] अर्थात इस खोज में रहना कि कोई दोष मिल जाय ताकि उसे बदनाम किया जाये, यह तजस्सुस है जिससे रोका गया है। हदीस में भी इससे रोका गया है, बल्कि कहा गया है कि यदि किसी का दोष अथवा त्रुटि तुम्हारे ज्ञान में आ जाये तो उसे छिपाओ, न कि लोगों से चर्चा करते फिरो। वर्तमान युग में स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता की बहुत चर्चा है इस्लाम ने भी टटोलने से रोक कर मानव की स्वतन्त्रता एवं स्वाधीनता को स्वीकार किया है। परन्तु उस समय तक जब तक कि वह सामान्य रूप से निर्लज्जा का काम न करे अथवा जब तक दूसरों के लिए दुख का कारण न बने। पश्चिम ने खुली स्वाधीनता की शिक्षा देकर लोगों को साधारण बिगाड़ की अनुमति दे दी है जिससे सामाजिक शान्ति का विनाश हो गया है।

[3] غِيـبَة (ग़ीबः) का अर्थ है दूसरे लोगों के समक्ष किसी की बुराईयों तथा दोषों की चर्चा की जाये, जिसे वह बुरा समझे। यदि उससे ऐसी बातें जोड़ी जायें जो उसमें हों ही नहीं तो वह आरोप (आक्षेप) है। अपनी-अपनी जगह दोनों ही घोर अपराध हैं।

مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

भी अपने मरे भाई का माँस खाना प्रिय समझता है ? तुम को उस से घृणा होगी ।[1] तथा अल्लाह से डरते रहो नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमा स्वीकार करने वाला कृपालु है ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

(१३) हे लोगो ! हमने तुम्हें एक (ही) पुरूष-स्त्री से जन्म दिया है [2] तथा इसलिए कि तुम आपस में एक-दूसरे को पहचानो जातियाँ तथा प्रजातियाँ बना दी हैं,[3] अल्लाह की दृष्टि में तुम सब में वह सम्मानित है जो सबसे अधिक डरने वाला है ।[4] विश्वास करो कि अल्लाह जानने वाला भली-भाँति परिचित है ।

---

[1]अर्थात किसी मुसलमान भाई की किसी के सामने बुराई करना ऐसे ही है जैसे मुर्दार भाई का माँस खाना । मृत भाई का माँस खाना तो कोई पसन्द नहीं करता किन्तु ग़ीबत लोगों का अति रूचिकर आहार है ।

[2]अर्थात आदम तथा हव्वा (अलैहिमस्सलाम) से । अर्थात तुम सबका मूल एक ही है, एक ही माँ-बाप की संतान हो । अभिप्राय यह है कि किसी के मात्र जाति तथा वंश के आधार पर कोई गर्व करने का अधिकार नहीं, क्योंकि प्रत्येक का वंश-क्रम आदरणीय आदम ही से मिलता है ।

[3]شُعُوبٌ (शुऊब) شَعْبٌ (शाब) का बहुवचन है, जाति अथवा बड़ी उप जाति شعب (शाब) के बाद قبيلة (क़बीला) फिर عُمارة (उमारा) फिर بطن (बत्न) फिर فصيلة (फ़सीला) फिर عشيرة (अशीरा) है । (फ़तहुल क़दीर) अर्थ यह है कि अनेक जातियों, उपजातियों तथा परिवारों का विभाजन मात्र पहचान के लिये है ताकि आपस में नाते जोड़ो । इसका उद्देश्य परस्पर प्रधानता दिखाना नहीं, जैसाकि दुर्भाग्य से जाति तथा वंश को प्रतिष्ठा का कारण तथा आधार बना लिया गया है, जबकि इस्लाम ने आकर इसे मिटाया था तथा इसे मूर्खता कहा था ।

[4]अर्थात अल्लाह के समक्ष प्रधानता का माप परिवार, जाति तथा वंशक्रम नहीं, जो किसी इंसान के अधिकार ही में नहीं है अपितु यह माप तक़्वा (संयम) है, जिसे अपनाना इन्सान के इरादे तथा वश में है । यही आयत उन ज्ञानियों का तर्क है जो विवाह में जाति तथा वंश की बराबरी को आवश्यक नहीं समझते तथा मात्र धर्म (दीन) के आधार पर विवाह को पसंद करते हैं (इब्ने कसीर)

قَالَتِ الْأَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾

(१४) ग्रामीण लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये। (आप) कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये परन्तु तुम यों कहो कि हम इस्लाम लाये (विरोध छोड़कर आज्ञाकारी हो गये) हालाँकि अभी तक ईमान तुम्हारे हृदय में प्रवेश ही नहीं हुआ।[1] तुम यदि अल्लाह तथा उसके रसूल की आज्ञा का पालन करने लगोगे तो अल्लाह तुम्हारे कर्मों में से कुछ भी कम न करेगा। नि:संदेह अल्लाह (तआला) क्षमा करने वाला दयालु है।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾

(१५) ईमानवाले तो वे हैं जो अल्लाह पर तथा उसके रसूल पर (दृढ़) ईमान लायें, फिर शंका-संदेह न करें तथा अपने धन से और अपने प्राण से अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करते रहें। (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे (तथा सत्यवादी) हैं।[2]

قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

(१६) कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को अपनी धार्मिकता से परिचित करा रहे हो ?[3]

---

[1]कुछ भाष्यकारों के विचार से इन أعراب (आराब) से अभिप्राय बनू असद तथा ख़ुज़ैमा के अवसरवादी (मुनाफ़िक़) हैं जिन्होंने अकाल में सदक़ों (दानों) की प्राप्ति के लिए अथवा हत्या तथा बंदी होने के भय से मुख से इस्लाम व्यक्त किया था। उनके दिल ईमान, सत्य विश्वास एवं शुद्ध मन से शून्य थे। (फ़तहुल क़दीर) किन्तु इमाम इब्ने कसीर के निकट इससे वह गाँववासी अभिप्राय हैं जो नये मुसलमान हुए थे तथा ईमान अभी उनमें पूर्णत: दृढ़ नहीं हुआ था किन्तु दावा उन्होंने अपनी वास्तविकता से अधिक ईमान का किया था, जिस पर उन्हें यह शिक्षा दी गई कि प्रथम बार में ही ईमान का दावा सही नहीं, धीरे-धीरे उन्नति के बाद तुम ईमान के दर्जे तक पहुँचोगे।

[2]न कि वह जो केवल मुख से ईमान व्यक्त कर देते हैं तथा उपरोक्त कर्मों का मूल से कोई प्रयोजन ही नहीं करते।

[3]تعليم तालीम (शिक्षा) यहाँ सूचना तथा ख़बर देने के अर्थ में है। अर्थात آمنّا (हम ईमान लाये) कहकर तुम अपने धर्म तथा विश्वास से अल्लाह को सूचित कर रहे हो ? अथवा अपने हृदयों की स्थिति अल्लाह को बता रहे हो ?

وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ⑯

अल्लाह प्रत्येक उस वस्तु से जो आकाशों में तथा धरती में है भली-भाँति अवगत है। तथा अल्लाह प्रत्येक वस्तु का जानने वाला है।[1]

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَامَكُم ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ⑰

(१७) वे अपने मुसलमान होने का आप पर आभार जताते हैं, (आप) कह दीजिए कि अपने मुसलमान होने का आभार मुझ पर न रखो, अपितु अल्लाह का तुम पर उपकार है कि उसने तुम्हें ईमान की ओर मार्गदर्शन किया यदि तुम सत्यवादी हो।[2]

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ⑱

(१८) विश्वास करो कि आकाशों एवं धरती की छिपी हुई बातें अल्लाह भली-भाँति जानता है, तथा जो कुछ तुम कर रहे हो उसे अल्लाह भली-भाँति देख रहा है।

सूरतु क़ाफ़-५०

سُورَةُ قٓ

सूर: क़ाफ़* मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें पैंतालीस आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

---

[1] तो क्या वह तुम्हारे दिलों की स्थिति अथवा तुम्हारे ईमान की हक़ीक़त से सूचित नहीं है ?

[2] यहीं गाँववासी (बद्दू) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते थे कि देखिये हम मुसलमान हो गये तथा आप की सहायता की, जबकि दूसरे अरब आप से लड़ रहे हैं। अल्लाह ने उनका खण्डन करते हुए फ़रमाया कि तुम अल्लाह पर ईमान लाने का एहसान न जताओ क्योंकि यदि तुम विशुद्धता से मुसलमान हुए हो तो इसका लाभ तुम्हें ही मिलेगा, न कि अल्लाह को। इसलिए यह अल्लाह का तुम पर उपकार है कि उसने तुम्हें इस्लाम स्वीकार करने का सौभाग्य प्रदान कर दिया न कि तुम्हारे अल्लाह पर उपकार हैं।

*नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईद की नमाज़ में सूरह क़ाफ़ तथा इक़तरबतिस्साअ: पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, बाबु मा युक़रअ बिहि फी सलातिल ईदैन) प्रत्येक जुमे के ख़ुतबे (भाषण) में भी पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:, बाबु तख़फ़ीफ़िस्सलाते वल ख़ुत्बा) इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि दोनों ईदों तथा जुमे में पढ़ने का अभिप्राय यह है कि बड़े जनसमूहों में आप यह सूरह पढ़ा करते थे, क्योंकि इसमें उत्पत्ति के आरम्भ, पुनर्जीवन, परलोक, हिसाब, स्वर्ग-नरक, पुण्य तथा दण्ड एवं प्रोत्साहन तथा चेतावनी का वर्णन है।

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

قٓۚ وَٱلۡقُرۡءَانِ ٱلۡمَجِيدِ ۝١

(१) क़ाफ़ ! अत्यन्त महान (गरिमा वाले) इस क़ुरआन की सौगन्ध है।[1]

بَلۡ عَجِبُوٓاْ أَن جَآءَهُم مُّنذِرٞ مِّنۡهُمۡ فَقَالَ ٱلۡكَٰفِرُونَ هَٰذَا شَيۡءٌ عَجِيبٌ ۝٢

(२) बल्कि उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक सचेतक आया तो काफ़िरों ने कहा कि यह एक आश्चर्यजनक वस्तु है।[2]

أَءِذَا مِتۡنَا وَكُنَّا تُرَابٗاۖ ذَٰلِكَ رَجۡعُۢ بَعِيدٞ ۝٣

(३) क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जायेंगे। फिर यह वापसी दूर की बात है।[3]

قَدۡ عَلِمۡنَا مَا تَنقُصُ ٱلۡأَرۡضُ مِنۡهُمۡۖ وَعِندَنَا كِتَٰبٌ حَفِيظُۢ ۝٤

(४) धरती जो कुछ उनमें से घटाती है वह हमें ज्ञात है तथा हमारे पास सब याद रखने वाली किताब है।[4]

بَلۡ كَذَّبُواْ بِٱلۡحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمۡ فَهُمۡ فِيٓ أَمۡرٖ مَّرِيجٍ ۝٥

(५) बल्कि उन्होंने सत्य बात को झूठ कहा, जबकि वह उनके पास पहुँच चुकी तो वे एक उलझन में पड़ गये हैं।[5]

---

[1]इसका उत्तर लुप्त है لَتُبۡعَثُنَّ (तुम निश्चित क़यामत के दिन उठाये जाओगे)। कुछ कहते हैं कि इसका उत्तर बाद का विषय-वस्तु है जिस में नबूवत (दूतत्व) और पुर्नजन्म का प्रमाण है। (फ़तहुल क़दीर व इब्ने कसीर)

[2]हालांकि इसमें कोई विचित्र बात नहीं थी। प्रत्येक नबी उसी जाति का एक व्यक्ति होता था जिसमें उसे भेजा जाता था। इसी हिसाब से मक्का के क़ुरैश को डराने के लिए उन ही में से एक व्यक्ति को संदेशवाहक (रसूल) चुन लिया गया।

[3]हालांकि बौद्धिक आधार पर इसमें कोई असंभावना नहीं है। आगे इसका कुछ स्पष्टीकरण है।

[4]अर्थात धरती इंसान के मांस, आस्थि तथा बाल आदि को गलाकर खा जाती है अर्थात उसे खंडित कर देती है, वह न केवल हमारे ज्ञान में है बल्कि हमारे पास लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पुस्तक) में भी अंकित है। अत: इन सभी अंशों को एकत्र कर पुन: जीवन प्रदान कर देना हमारे लिए कुछ कठिन काम नहीं।

[5]हक़ (सत्य बात) से अभिप्राय पवित्र क़ुरआन, इस्लाम अथवा मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

(६) क्या उन्होंने आकाश को अपने ऊपर नहीं देखा कि हमने उसे किस प्रकार बनाया है[1] तथा उसे शोभा प्रदान की है ?[2] उसमें कोई दरार नहीं ।[3]

أَفَلَمْ يَنظُرُوٓا۟ إِلَى ٱلسَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَـٰهَا وَزَيَّنَّـٰهَا وَمَا لَهَا مِن فُرُوجٍ ۝٦

(७) तथा धरती को हमने बिछा दिया है तथा उस पर हमने पर्वत डाल दिये हैं तथा उसमें हमने नाना प्रकार की सुन्दर वस्तुयें उगा दी हैं ।[4]

وَٱلْأَرْضَ مَدَدْنَـٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَٰسِىَ وَأَنۢبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ۝٧

(८) ताकि प्रत्येक (अल्लाह की ओर) लौटने वाले भक्त के लिए दृष्टि एवं बुद्धि का साधन हो ।[5]

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝٨

(९) तथा हमने आकाश से शुभ पानी बरसाया तथा उससे बाग़ एवं कटने वाले खेत के अन्न पैदा किये ।[6]

وَنَزَّلْنَا مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً مُّبَـٰرَكًا فَأَنۢبَتْنَا بِهِۦ جَنَّـٰتٍ وَحَبَّ ٱلْحَصِيدِ ۝٩

वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) है । भावार्थ सबका एक ही है । مَّرِيجٍ (मरीज) का अर्थ उलझाव, असमंजस्य अथवा संदेह है, अर्थात ऐसा विषय जो उन पर उलझ गया है, जिससे वे उलझाव में हैं कभी उसे जादूगर कहते हैं, कभी कवि तथा कभी भविष्यवक्ता ।

[1]अर्थात बिना स्तम्भ के जिनका उसे कोई सहारा हो ।

[2]अर्थात तारों से उसे सुशोभित किया ।

[3]इसी प्रकार कोई अंतर तथा भिन्नता भी नहीं है । जैसे दूसरे स्थान पर कहा :

﴿ ٱلَّذِى خَلَقَ سَبْعَ سَمَـٰوَٰتٍ طِبَاقًا ۖ مَّا تَرَىٰ فِى خَلْقِ ٱلرَّحْمَـٰنِ مِن تَفَـٰوُتٍ ۖ فَٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۞ ثُمَّ ٱرْجِعِ ٱلْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ ٱلْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ﴾

"जिसने सात आकाश ऊपर-नीचे बनाये । (तू ऐ देखने वाले) अल्लाह दयालु की उत्पत्ति में कोई अनियमितता न देखेगा, पुन: (दृष्टि डालकर) देख ले क्या कोई चीर भी दिखाई दे रही है ।" (*अल-मुल्क-३,४*)

[4]कुछ ने زوج (जौज) का अर्थ जोड़ा किया है, अर्थात सभी प्रकार की वनस्पतियाँ तथा वस्तुयें जोड़ा-जोड़ा (नर-मादा) बनाईया है । بَهِيجٍ (बहीज) का अर्थ सुदृश्य, हरी-भरी तथा सुंदर ।

[5]अर्थात आकाश तथा धरती की रचना तथा अन्य वस्तुओं का दर्शन तथा उनका ज्ञान प्रत्येक उस व्यक्ति की आँख खोलने तथा समझने एवं शिक्षा ग्रहण करने हेतु है, जो अल्लाह की ओर ध्यान देने वाला है ।

[6]कटने वाले अन्न से अभिप्राय वह खेतियाँ हैं जिनसे गेहूँ, मकई, ज्वार, बाजरा, दालें तथा

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۝١٠

(१०) तथा खजूरों के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष जिनके गुच्छे तह पर तह हैं ।[1]

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ۝١١

(११) भक्तों की जीविका के लिए, तथा हमने पानी से मृत नगर को जीवित कर दिया। इसी प्रकार (क़ब्रों से) निकलना है ।[2]

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۝١٢

(१२) उनसे पूर्व नूह के समुदाय ने तथा 'रस्स' वालों ने[3] तथा समूदियों ने झुठलाया था।

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۝١٣

(१३) तथा आद ने एवं फ़िरऔन ने तथा लूत के भाईयों ने।

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ۝١٤

(१४) तथा ऐका वालों[4] ने तथा तुब्बअ के समुदाय ने[5] (भी झुठलाया था) । सब ने पैग़म्बरों को झुठलाया [6] तो मेरी यातना का

चावल आदि उपजते हैं तथा फिर उनका भंडार कर लिया जाता है।

[1] باسقات (बासिकात) का अर्थ طوالاً شاهقات अर्थात ऊँचे-लम्बे, طَلْعٌ (तलअ) खजूर का वह गदरा-गदरा फल जो पहले निकलता है। نَضِيدٌ (नजीद) का अर्थ तह पर तह। बाग़ों में खजूर का फल भी आ जाता है किन्तु उसे अलग विशेष रूप से वर्णन किया गया है, जिससे खजूर का वह महत्व स्पष्ट है जो अरब में उसे प्राप्त है।

[2] अर्थात जैसे वर्षा से मृत धरती को जीवन प्रदान कर देते तथा हरी-भरी बना देते हैं, इसी प्रकार क़यामत के दिन हम क़ब्रों से मनुष्यों को जीवित करके निकालेंगे।

[3] रस्स के वासियों के निर्धारण के सम्बन्ध में भाष्यकारों में बड़ा मतभेद है। इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इस कथन को अधिमान दिया है जिसमें उन्हें अस्हाबे उखदूद (खाइयों वाले) कहा गया है, जिनकी चर्चा सूरह बुरूज में है। (विवरण के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर, सूरह *अल-फ़ुरक़ान*-३८)।

[4] أَصْحَابُ الايكة (अस्हाबुल ऐका) के लिए देखिये सुरतुश्शुअरा आयत १७६ का तटलेख।

[5] तुब्बअ जाति के लिए देखिये सुर: अद्दुख़ान आयत ३७ का तटलेख।

[6] अर्थात उनमें से प्रत्येक ने अपने-अपने पैग़म्बर को झुठलाया। इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए सांत्वना है। मानो आपको कहा जा रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने समुदाय के झुठलाने पर शोकग्रस्त न हों, इसलिए कि यह कोई नई

वा दा उन पर सत्य हो गया।

(१५) क्या हम प्रथम बार पैदा करने से थक गये ?[1] बल्कि ये लोग नये जीवन की ओर से संदेह में हैं।[2]

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ﴿١٥﴾

(१६) हमने मनुष्य को पैदा किया है तथा उसके हृदय में जो विचार उत्पन्न होते हैं हम उनसे परिचित हैं [3] तथा हम उसके प्राणनाड़ी से भी

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ

बात नहीं है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के साथ उनके समुदायों का यही आचरण रहा है। दूसरे, मक्कावासियों को चेतावनी है कि विगत समुदायों ने अम्बिया को झुठलाया तो देख लो कि उनका क्या दुष्परिणाम हुआ ? क्या तुम भी अपने लिए यही परिणाम पसंद करते हो ? यदि नहीं तो झुठलाने का मार्ग त्याग दो तथा ईशदूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति विश्वास कर लो।

[1]कि क़ियामत के दिन फिर से जीवन प्रदान करना हमारे लिए कठिन होगा। अर्थ यह है कि जब पहली बार पैदा करना हमारे लिए कठिन नहीं था तो दूसरी बार जीवित करना तो पहली बार पैदा करने से सरल है। जैसे अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَهُوَ الَّذِي يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ﴾

"वही है जो प्रथम बार सृष्टि की उत्पत्ति करता है, पुनः दोबारा पैदा करेगा तथा यह तो उस पर अत्यन्त ही सहज है।" (*अर्रूम*-२७)

सूरः यासीन ७८,७९ में भी यह विषय वर्णन किया गया है तथा क़ुदसी हदीस में है, अल्लाह तआला फ़रमाता है : "आदम का पुत्र मुझे यह कहकर दुख देता है कि अल्लाह कदापि मुझे पुनः पैदा करने पर सामर्थ्यवान नहीं जैसे मुझे पहले पैदा किया। हालांकि पहली बार पैदा करना दूसरी बार पैदा करने से अधिक सरल नहीं।" अर्थात यदि कठिन है तो पहली बार पैदा करना, न कि दूसरी बार पैदा करना। (बुख़ारी, तफ़सीर *सुरतैल एख़्लास*)

[2]अर्थात यह अल्लाह के सामर्थ्य का इंकार नहीं करते, अपितु तथ्य यह है कि उन्हें प्रलय के होने तथा पुनर्जीवन में शंका है।

[3]अर्थात इंसान जो कुछ गुप्त रखता तथा मन में छिपा रखता है। वह सब हम जानते हैं। वस्वसा मनोगत विचारों को कहा जाता है जिसका ज्ञान उस मनुष्य के सिवा किसी को नहीं होता परन्तु अल्लाह इन विचारों को भी जानता है। इसीलिए क़ुदसी हदीस में आता है। "मेरे अनुगामियों के मनोगत विचारों को अल्लाह ने क्षमा कर दिया है, अर्थात उन पर पकड़ नहीं करेगा जब तक उसे मुख से व्यक्त न करे अथवा उसके अनुसार कर्म न

اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ⑯

अधिक उसके निकट हैं ।[1]

اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ⑰

(१७) जिस समय दो लेने वाले जा लेते हैं, एक दायीं ओर तथा दूसरा बायीं ओर बैठा हुआ है ।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ⑱

(१८) (मनुष्य) मुख से कोई शब्द निकाल नहीं पाता परन्तु उसके निकट रक्षक (पहरेदार) तैयार है ।[2]

وَجَاۤءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۗ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ⑲

(१९) तथा मृत्यु की बेहोशी सत्य लेकर आ पहुँची,[3] यही है जिससे तू कतराता फिरता था ।[4]

करे" (अल-बुख़ारी किताबुल ईमान, बाबु इज़ा हनस नासियन फिल ऐमान, मुस्लिम बाबु तजावुज़िल्लाहे अन हदीसिन नफ्से वल ख्वातिरे बिल कल्बे इज़ा लम तस्तक़िर्र)

[1] وريـــد शहेरग, अथवा प्राण नाड़ी को कहा जाता है जिसके कटने से मौत हो जाती है । यह रग (नाड़ी) गले के एक किनारे से इंसान के कंधे तक होती है । इस निकटता से तात्पर्य ज्ञान के आधार पर निकटता है । अर्थात ज्ञान से हम इंसान के इतने समीप हैं कि उसके मन की बातों को भी जानते हैं । इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि 'हम' से अभिप्राय फ़रिश्ते हैं, अर्थात हमारे फ़रिश्ते इंसान की प्राण नाड़ी से भी निकट हैं, क्योंकि इंसान के दायें-बायें दो फ़रिश्ते प्रत्येक क्षण मौजूद रहते हैं, वह इंसान की प्रत्येक बात तथा काम को लिखते हैं ﴿يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ﴾ का अर्थ है ग्रहण करते तथा लिखते हैं । इमाम शौकानी ने इसका भावार्थ लिया है कि हम इंसान की सभी स्थितियों को जानते हैं बिना इसके कि हम उन फ़रिश्तों के मुहताज हों जिनको हमने इंसान के कथनों तथा कर्मों के लिखने पर नियुक्त किया है । दो फ़रिश्तों से अभिप्राय कुछ के विचार में एक नेकी लिखने तथा दूसरा बुराई लिखने के लिये है । कुछ के निकट रात-दिन के फ़रिश्ते अभिप्राय हैं । रात के दो फ़रिश्ते अलग तथा दिन के दो फ़रिश्ते अलग । (फ़तहुल क़दीर)

[2] رقيب (रक़ीब) फ़रिश्ते निरीक्षक तथा इंसान के कथन तथा कर्म की प्रतीक्षा करने वाला । عتيد (अतीद) उपस्थित तथा तैयार ।

[3] इसका दूसरा अर्थ 'मौत की कठिनाई सत्य के साथ आयेगी' है अर्थात मृत्यु के समय सत्य प्रकट तथा उन वचनों की सत्यता स्पष्ट हो जाती है जो क़यामत (प्रलय) तथा स्वर्ग एवं नरक के विषय में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम करते रहे हैं ।

[4] تَحِيدُ तू इस मौत से भड़कता तथा भागता था ।

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾

(२०) तथा नरसिंघा फूँक दिया जायेगा। यातना के वादे का दिन यही है।

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾

(२१) तथा प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार आयेगा कि उसके साथ एक हाँक लाने वाला होगा तथा एक गवाही देने वाला।[1]

لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾

(२२) वस्तुत: तू इससे असावधान था, परन्तु हमने तेरे सामने से पर्दा हटा दिया तो आज तेरी दृष्टि अति तीव्र है।

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾

(२३) उसके साथ रहने वाले (फ़रिश्ते) कहेंगे यह उपस्थिति है, जो कि मेरे पास था।[2]

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾

(२४) दोनों डाल दो नरक में प्रत्येक काफ़िर उद्दण्ड को।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾

(२५) जो पुण्य कार्य से रोकने वाला, सीमा उलंघन करने वाला तथा संदेह करने वाला था।

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾

(२६) जिसने अल्लाह के साथ अन्य देवता बना लिया था, तो उसे कठोर यातना में डाल दो।[3]

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِن كَانَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾

(२७) उसका साथी (शैतान) कहेगा कि हे हमारे प्रभु ! मैंने इसे मार्ग से भटकाया नहीं था, बल्कि यह स्वयं ही दूर के भटकावे में था।[4]

---

[1] سَائِقٌ (हाँकने वाला) तथा شَهِيدٌ (गवाह) के संबंध में मतभेद है। इमाम तबरी के विचार से यह दो फ़रिश्ते हैं, एक इंसान को महशर (एकत्रित किये जाने वाले स्थान) तक हाँकने वाला तथा दूसरा गवाही देने वाला।

[2] अर्थात फ़रिश्ता इंसान का पूरा रिकार्ड सामने रख देगा कि यह तेरा कर्मपत्र है जो कि मेरे पास था।

[3] अल्लाह तआला कर्मपत्र के अनुसार न्याय तथा निर्णय करेगा। أَلْقِيَا (अल्केया) से الشَّدِيد (अश्शदीद) तक अल्लाह का कथन है।

[4] इसलिए उसने तुरन्त मेरी बात मान ली। यदि यह तेरा विशुद्ध भक्त होता तो मेरे

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُم بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾

(२८) (अल्लाह तआला) कहेगा कि बस मेरे समक्ष झगड़े की बात न करो। मैं तो पूर्व ही में तुम्हारी ओर यातना का वादा भेज चुका था।[1]

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾

(२९) मेरे पास बात बदलती नही[2] तथा न मैं अपने भक्तों पर तनिक भी अत्याचार करने वाला हूँ।[3]

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾

(३०) जिस दिन हम नरक से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी ? वह उत्तर देगी कि क्या कुछ और अधिक भी है ?[4]

बहकावे में ही न आता। यहाँ قَرِينٌ (साथी से तात्पर्य शैतान है।

[1]अर्थात अल्लाह काफ़िरों तथा उनके साथी शैतानों से कहेगा कि यहाँ हिसाब के स्थान तथा न्यायालय में लड़ने-झगड़ने की आवश्यकता नहीं, न इसका कोई लाभ ही है। मैंने तो पहले ही ईशदूतों तथा धर्मशास्त्रों के द्वारा इन धमकियों से तुम्हें सूचित कर दिया था।

[2]अर्थात जो वचन मैं ने दिये थे उनके विपरीत नहीं होगा, बल्कि प्रत्येक दशा में पूरे होंगे तथा इसी नियमानुसार तुम्हारा निर्णय मेरी ओर से हुआ है, जिसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

[3]कि बिना अपराध के जो उन्होंने किया हो तथा निर्दोष जो उन्होंने किया हो, मैं उनको दण्ड दे दूँ ? अथवा वाकशैली (मुहावरा) के रूप में बोला गया है। जैसे साधारणतः कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति अपने दासों पर अत्याचार करता है, अमुक बड़ा क्रूर है, इसका उद्देश्य अतिश्योक्ति नहीं है, अर्थात तात्पर्य है कि मैं अपने बन्दों पर तनिक भी अत्याचारी नहीं हूँ।

[4]अल्लाह ने फ़रमाया है :

﴿لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ﴾

"मैं नरक को इंसानों तथा जिन्नों से भर दूँगा।" (*अलिफ़॰लाम॰मीम अस्सजदा-१३*)

यह वचन जब पूरा हो जायेगा तथा अल्लाह काफ़िर जिन्न तथा इंसान को नरक में डाल देगा, तो नरक से पूछेगा कि तू भर गया है या नहीं ? वह उत्तर देगा कि क्या कुछ और भी है ? अर्थात यद्यपि मैं भर गया हूँ परन्तु हे अल्लाह तेरे विरोधियों के लिये मुझमें अब

(३१) तथा स्वर्ग सदाचारियों के लिए पूर्ण निकट कर दी जायेगी, तनिक भी दूर न होगी।[1]

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

(३२) यह है जिसका वादा तुमसे किया जाता था प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो ध्यानमग्न तथा आबद्ध हो।[2]

هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾

(३३) जो दयालु का गुप्त रूप से भय रखता हो तथा आकर्षित होने वाला दिल लाया हो।[3]

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ ﴿٣٣﴾

(३४) तुम इस स्वर्ग में शान्ति के साथ प्रवेश कर जाओ। यह सदैव रहने का दिन है।

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾

भी जगह है। नरक से अल्लाह की यह बात तथा नरक का उत्तर देना अल्लाह के सामर्थ्य से कदापि असंभव नहीं। हदीस में भी आता है कि आग में लोग डाले जायेंगे तथा नरक कहेगा هَلْ مِنْ مَزِيدٍ क्या कुछ और भी है? यहाँ तक कि अल्लाह नरक में अपना पैर रख देगा जिससे नरक पुकार उठेगा, 'क़त, क़त' अर्थात बस, बस (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरह क़ाफ़)। जन्नत (स्वर्ग) के सम्बंध में आता है कि स्वर्ग में अभी जगह रह जायेगी तो अल्लाह उसके लिए नई सृष्टि पैदा करेगा जो वहाँ आबाद होगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न:, बाबुन्नारे यदख़ुलुहा अल-जब्बाररून वल जन्नते यदख़ुलुहा अज़्ज़ुअफाऊ)

[1]तथा कुछ ने कहा है कि क़यामत के दिन जब स्वर्ग समीप कर दिया जायेगा दूर नहीं है, क्योंकि उसे अवश्य व्याप्त होना है तथा «كُلُّ مَا هُوَ آتٍ فَهُوَ قَرِيبٌ». जो भी आगामी वस्तु है वह समीप है, दूर नहीं। (इब्ने कसीर)

[2]अर्थात जब ईमान वाले स्वर्ग तथा उसकी सुख-सुविधाओं का समीप से दर्शन करेंगे तो कहा जायेगा कि यही वह स्वर्ग है जिसका वादा प्रत्येक अल्लाह में ध्यानमग्न तथा उसकी आज्ञा पालन करने वाले से किया गया था। أَوَّابٌ (अव्वाब) अल्लाह में ध्यान करने वाला अर्थात अधिक तौबा (क्षमा-याचना) करने वाला तथा अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) तथा स्मरण करने वाला, एकान्त में अपने पापों को याद करने वाला। حَفِيظٌ (हफ़ीज़) अपने पापों को याद करके उनसे क्षमा माँगने वाला, अथवा अल्लाह के अधिकार तथा उसके उपकारों को याद रखने वाला, अथवा अल्लाह की आज्ञा तथा निषेध को याद रखने वाला। (फ़तहुल क़दीर)

[3]مُنِيبٌ (मुनीब) अल्लाह की ओर ध्यान करने वाला तथा उसका आज्ञाकारी दिल अथवा शिर्क तथा पाप के दोषों से पवित्र दिल।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾

(३५) ये वहाँ जो कुछ चाहें उन्हें मिलेगा (बल्कि) हमारे पास और भी अधिक है।[1]

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ۖ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

(३६) तथा उनसे पूर्व भी हम बहुत से समुदायों को नष्ट कर चुके हैं, जो उनसे शक्ति में अत्याधिक थे, वे नगरों में फिरते ही रह गये[2] कि कोई भागने का ठिकाना है ?

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾

(३७) इसमें प्रत्येक उस व्यक्ति के लिये सदुपदेश है जिस के दिल[3] हो अथवा कान धरे[4] तथा वह उपस्थित हो।[5]

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ۖ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾

(३८) निःसन्देह हम ने आकाशों तथा धरती एवं दोनों के मध्य की जो कुछ वस्तुयें हैं सबको (मात्र) छः दिन में पैदा कर दिया तथा हमें थकान ने स्पर्श तक नहीं किया।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ

(३९) अतः आप उन बातों पर धैर्य धारण करें तथा अपने प्रभु का पवित्रतागान प्रशंसा के साथ सूर्य निकलने से पहले भी तथा

---

[1]इस से अभिप्राय अल्लाह का दर्शन है जो स्वर्गवासियों को प्राप्त होगा, जैसा कि ﴿لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ﴾ (यूनुस-२६) की तफ़सीर (व्याख्या) में गुज़रा।

[2] ﴿فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ﴾ (नगरों में चले-फिरे) का एक और भावार्थ यह वर्णन किया गया है कि वह मक्कावासियों से अधिक व्यवपार तथा व्यवसाय के लिए विभिन्न नगरों में फिरते थे, परन्तु हमारा प्रकोप आया तो उन्हें कहीं शरण तथा भागने का मार्ग नहीं मिला।

[3]अर्थात जागृत हृदय जो सोच-विचार करके वास्तविकताओं का बोध कर लें।

[4]अर्थात ध्यान से वह अल्लाह की वाणी (प्रकाशना) सुने जिसमें विगत समुदायों की घटनाओं का वर्णन किया गया है।

[5]अर्थात मन तथा चेतना से उपस्थित हो, इसलिए कि जो बात ही न समझे वह उपस्थित होते हुए भी ऐसे है जैसे नहीं है।

डूबने[1] से पहले भी करें। وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝٣٩

(४०) तथा रात के किसी समय [2] भी महिमा-गान करें तथा नमाज़ के बाद भी।[3] وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝٤٠

(४१) तथा सुन रखें[4] कि जिस दिन एक पुकारने[5] वाला समीप ही के स्थान से पुकारेगा।[6] وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝٤١

---

[1]अर्थात प्रातः एवं संध्या समय अल्लाह की तस्बीह (पवित्रतागान) करो अथवा अस्र तथा फ़ज्र की नमाज़ पढ़ने पर बल दिया गया है।

[2] مِـنْ कुछ का अर्थ देने के लिए है। अर्थात रात के कुछ भाग में भी अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) करें अथवा रात की नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ें, जैसे दूसरे स्थान पर कहाः

﴿ وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ﴾

"रात जो उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें जो आप के लिये अधिक पुण्य का कारण है।" (*बनी इस्राईल-७९*)

कुछ कहते हैं कि मेराज से पहले मुसलमानों पर केवल फ़ज्र तथा अस्र की नमाज़ तथा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तहज्जुद की नमाज़ भी फ़र्ज (अनिवार्य) थीं। मेराज के अवसर पर पाँच नमाज़ें अनिवार्य कर दी गयीं। (इब्ने कसीर)

[3]अर्थात अल्लाह की तस्बीह करें। कुछ ने इससे वह तस्बीहें अभिप्राय ली हैं, जिनके पढ़ने पर फ़र्ज (अनिवार्य) नमाज़ों के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बल दिया है जैसे سُبْحانَ الله (सुब्हानल्लाहे) ३३ बार, الْحمدُ لله (अल्हम्दो लिल्लाहे) ३३ बार, الله أكبر (अल्लाहो अकबर) ३४ बार आदि। (अल-बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाबुज़ ज़िक्रे बादस सलाति, मुस्लिम बाबु इस्तिहबाबिज़्ज़िक्रे, बादस सलाति व बयानु सिफ़तिही) कुछ ने कहा है कि أدبار السجود से अभिप्राय मग़रिब की नमाज़ के बाद की दो रकअतें हैं। कुछ ने कहा कि उपरोक्त तस्बीहें आयत के उतरने के बहुत समय बाद बताई गई थीं।

[4]अर्थात क़यामत के जो समाचार (अहवाल) प्रकाशना (वह्यी) के माध्यम से वर्णन किये जा रहे हैं, इन्हें ध्यान से सुनें।

[5]यह पुकारने वाला इस्राफ़ील फ़रिश्ता होगा अथवा जिब्रील तथा यह वह पुकार होगी जिससे लोग मैदाने महशर में एकत्र हो जायेंगे, अर्थात दूसरी फूँक।

[6]इससे कुछ ने बैतुल मोकद्दस के समीप का सख़रः (चट्टान) तात्पर्य लिया है। कहते हैं कि यह आकाश से निकटतम स्थान है। कुछ के निकट इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾

(४२) जिस दिन उस कड़ी आवाज़ को सविश्वास सुनेंगे, यही निकलने का दिन होगा।[1]

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾

(४३) हम ही जीवित करते तथा मारते हैं[2] तथा हमारी ओर ही फिर कर आना[3] है।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾

(४४) जिस दिन धरती फट पड़ेगी तथा यह दौड़ते[4] हुए (निकल पड़ेंगे), यह एकत्रित कर लेना हम पर बहुत ही सरल है।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

(४५) हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ यह कह रहे हैं तथा आप उन्हें बलपूर्वक[5] मनवाने वाले नहीं, बस आप उन्हें क़ुरआन के द्वारा समझाते रहें जो मेरी धमकी से डरते हों।[6]

व्यक्ति यह आवाज़ इस प्रकार सुनेगा जैसे उसके समीप ही से आवाज़ आ रही है। (फ़तहुल क़दीर) तथा यही सही लगता है।

[1]यह चीख़ अर्थात यह क़यामत की फूँक निश्चय होगी, जिसमें वह जगत में शंका करते थे, तथा यही दिन क़ब्रों से निकलने का दिन होगा।

[2]अर्थात संसार में मौत की गोद में डाल देना तथा परलोक में जीवनदान हमारा ही काम है। इसमें कोई हमारा साझी नहीं।

[3]वहाँ हम प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मानुसार फल देंगे।

[4]अर्थात उस पुकारने वाले की ओर दौड़ेंगे जिसने पुकारा होगा। (फ़तहुल क़दीर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब धरती फटेगी तो सबसे पहले जीवित होकर मैं ही निकलूँगा, «أَنَا أَوَّلُ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الأَرْضُ». (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ायेल, बाबु तफ़ज़ीले नबियेना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अला जमीइल ख़लायेक़)

[5]अर्थात आप पर इसका भार नहीं कि उनको ईमान लाने पर बाध्य कर दें, अपितु आप का कर्तव्य केवल उपदेश देना तथा आमंत्रण है, आप यह काम करते रहें।

[6]अर्थात आपकी दावत तथा सदुपदेश से वही शिक्षा ग्रहण करेगा जो अल्लाह तथा उसकी धमकियों से डरता तथा उसके वचन पर विश्वास रखता होगा। इसीलिए आदरणीय

सूरतुज़ ज़ारियात-५१

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ

सूर: ज़ारियात मक्का में अवतरित हुई तथा इसमें साठ आयतें एवं तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त दयालु तथा अत्यन्त कृपालु है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) सौगंध है उड़ाकर बिखेरने वालियों की,[1]

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۝

(२) फिर बोझ उठाने वालियों की,[2]

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۝

(३) फिर धीमी गति से चलने वालियों की,[3]

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۝

(४) फिर काम का विभाजन करने वालियों की।[4]

فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۝

कतादा यह दुआ किया करते थे।

«اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يَخَافُ وَعِيدَكَ، وَيَرْجُو مَوْعُودَكَ، يَابَارُّ ! يَارَحِيمُ !».

हे अल्लाह हमें उनमें से कर जो तेरी धमकियों से डरते तथा तेरे वचनों से आशा रखते हैं। हे कल्याण करने वाले, हे दया करने वाले। (इब्ने कसीर)

[1]इससे अभिप्राय वायु है जो धूल उड़ाकर तितर-बितर कर देती है।

[2]"وِقْـر" (वक्र) अर्थात हर वह भार जिसे कोई प्राणी लेकर चले। अभिप्राय वह हवायें हैं जो बादलों को लादे हुए हैं अथवा वह बादल जो जल का बोझ लादे हुए हैं, जैसे पशु गर्भ का का बोझ उठाते हैं।

[3]"جارِيات" (जारियात) पानी में चलने वाली नवकायें, يُسْرًا (युस्रन) आसानी से सरलता से।

[4]"مُقَسِّـمات" इससे अभिप्राय वह फ़रिश्ते हैं जो कार्यों को विभाजित कर लेते हैं, कोई दया का फ़रिश्ता है तो कोई प्रकोप का, कोई जल का, तो कोई अकाल का, कोई वायु का है, तो कोई मृत्यु एवं घटनाओं का। कुछ ने इन सबसे अभिप्राय हवायें ली हैं तथा इन सबको वायु का विशेषण बनाया है। जैसे अनुवादक विशेषज्ञ ने भी इसी के अनुसार अनुवाद किया है। परन्तु हमने इमाम इब्ने कसीर तथा इमाम शौकानी की व्याख्यानुसार व्याख्या की है। शपथ का आशय, जिसकी शपथ ली जाये, उसकी सत्यता का वर्णन करना होता है अथवा कभी-कभी केवल बल देना अभिप्राय होता है तथा कभी जिसकी शपथ ग्रहण की जाये, उसे प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत करना होता है, यहां शपथ की यही

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ۝٥
(५) विश्वास करो कि तुमसे जो वचन दिये जाते हैं (सब) सत्य हैं ।

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۝٦
(६) तथा नि:संदेह न्याय होने वाला है ।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝٧
(७) सौगन्ध है मार्गों वाले आकाश की ।[1]

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨
(८) निश्चित रूप से तुम विभिन्न बातों में पड़े हुए हो ।[2]

يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ۝٩
(९) उससे वही फेरा (रोका) जाता है[3] जो फेर दिया गया हो ।

قُتِلَ الْخَرَّاصُونَ ۝١٠
(१०) निर्मूल बातें करने वाले नाश कर दिये गये ।

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۝١١
(११) जो अचेत हैं तथा भूले हुए हैं ।

तीसरी क़िस्म है, आगे शपथ का उत्तर यह वर्णन किया गया है कि तुमको जो वचन दिये जाते हैं वह निश्चय सच्चे हैं तथा क़यामत (प्रलय) होकर रहेगी जिसमें न्याय किया जायेगा । यह हवाओं का चलना, बादलों का जल लादना, साग़रों में नवकाओं का चलना तथा फ़रिश्तों का विभिन्न कार्य करना क़यामत के होने का प्रमाण है, क्योंकि जो अल्लाह यह सब कुछ करता है जो प्रत्यक्ष रूप से अत्यन्त कठिन तथा सामान्य साधनों के विपरीत हैं । वही क़यामत के दिन सभी मानव को पुन: जीवन भी प्रदान कर सकता है ।

[1]दूसरा अनुवाद सुंदर तथा शोभामान किया गया है । चाँद, सूर्य, नक्षत्र एवं प्रकाशमान तारे उसकी ऊँचाई तथा विस्तार, यह सब आसमान की शोभा तथा सुंदरता का कारण हैं ।

[2]अर्थात हे मक्कावासियो ! तुम किसी एक बात पर सहमत नहीं हो । हमारे पैग़म्बर को तुममें से कोई जादूगर कहता है, कोई कवि, कोई भविष्यवेत्ता तथा कोई झूठा कहता है । इसी प्रकार कोई क़यामत को नहीं मानता तथा कोई संदेह करता है । इसके सिवा एक ओर अल्लाह के विधाता तथा जीविका दाता होने को स्वीकार करते हो तथा दूसरी ओर दूसरों को भी पूज्य बना रखा है ।

[3]अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने से अथवा सत्य से, अथवा पुनर्जीवन तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) से, अथवा अभिप्राय है कि उपरोक्त मतभेद से वह व्यक्ति फेर दिया गया जिसे अल्लाह ने अपनी सन्मति से फेर दिया । प्रथम भाव में निंदा है, दूसरे में प्रशंसा ।

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿۱۲﴾

(१२) पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा ?

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾

(१३) (हाँ) यह वह दिन है कि ये आग पर तपाये जायेंगे ।[1]

ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾

(१४) (कहा जायेगा) अपने उपद्रव का स्वाद चखो,[2] यही है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे ।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿۱۵﴾

(१५) नि:संदेह अल्लाह से भय रखने वाले स्वर्गों एवं (शीतल) जल स्रोतों में होंगे ।

اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ؕ﴿۱۶﴾

(१६) उनके प्रभु ने जो कुछ उनको प्रदान किया है उसे ले रहे होंगे, वे तो उससे पूर्व ही सदाचारी थे ।

كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾

(१७) वे रात्रि को बहुत कम सोया करते थे ।[3]

وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

(१८) तथा वे रात्रि के अन्तिम पहर (भोर) में क्षमा-याचना किया करते थे ।[4]

---

[1] يُفْتَنُوْنَ का अर्थ है يُحَرَّقُوْنَ و يُعَذَّبُوْنَ जिस प्रकार सोने को अग्नि में डालकर जाँचा परखा जाता है इसी प्रकार यह आग में डाले जायेंगे ।

[2] فِتْنَةٌ (फ़ितन:) का अर्थ है यातना अथवा आग में जलना ।

[3] هُجُوْعٌ (हुजूअ) का अर्थ है रात में सोना । مَا يَهْجَعُوْن में مَا बल के लिए है । वह रात में कम सोते थे । अर्थ है पूरी रात सोकर ग़फ़लत तथा आनंद में नहीं गुज़ार देते थे बल्कि रात का कुछ भाग अल्लाह की याद में तथा उसके सदन में रोते गिड़गिड़ाते गुज़ारते थे । जैसाकि हदीसों में भी क़्यामुल्लैल (रात की नमाज़) पर बल दिया गया है । जैसे एक हदीस में फ़रमाया, "लोगो ! लोगों को खाना खिलाओ, नाते जोड़ो, सलाम फैलाओ तथा रात में जागकर नमाज़ पढ़ो जबकि लोग सोये हों, तुम शान्ति के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे ।" (मुसनद अहमद ५\४५१)

[4] भोर का समय प्रार्थना की स्वीकृति का अति उत्तम समय है । हदीस में आता है कि जब रात का तिहाई भाग शेष रह जाता है तो अल्लाह संसार के आकाश पर उतर आता है तथा आवाज़ देता है कि कोई प्रायश्चित करने वाला है कि उसका प्रायश्चित स्वीकार करूँ, कोई क्षमा माँगने वाला है कि मैं उसे क्षमा करूँ, कोई भिखारी है कि मैं उसकी माँग पूरी कर दूँ, यहाँ तक कि फ़ज्र (प्रभात) उदय हो जाती है । (सहीह मुस्लिम, किताबु

وَفِيٓ أَمۡوَٰلِهِمۡ حَقّٞ لِّلسَّآئِلِ وَٱلۡمَحۡرُومِ ١٩

(१९) तथा उनके माल में माँगने वालों का तथा प्रश्न करने से बचने वालों का अधिकार था।[1]

وَفِي ٱلۡأَرۡضِ ءَايَٰتٞ لِّلۡمُوقِنِينَ ٢٠

(२०) तथा विश्वास करने वालों के लिए तो धरती पर बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِيٓ أَنفُسِكُمۡۚ أَفَلَا تُبۡصِرُونَ ٢١

(२१) तथा स्वयं तुम्हारे अस्तित्व में भी, तो क्या तुम नहीं देखते हो।

وَفِي ٱلسَّمَآءِ رِزۡقُكُمۡ وَمَا تُوعَدُونَ ٢٢

(२२) तथा तुम्हारी जीविका तथा जो तुमको वचन दिया जाता है सब आकाश में है।[2]

فَوَرَبِّ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ إِنَّهُۥ لَحَقّٞ مِّثۡلَ مَآ أَنَّكُمۡ تَنطِقُونَ ٢٣

(२३) तो आकाश तथा धरती के प्रभु की सौगन्ध ![3] यह पूर्णत: सत्य है ऐसा ही जैसे कि तुम बातें करते हो।

هَلۡ أَتَىٰكَ حَدِيثُ ضَيۡفِ إِبۡرَٰهِيمَ ٱلۡمُكۡرَمِينَ ٢٤

(२४) क्या तुझे इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के सम्मानित अतिथियों की सूचना भी पहुँची है ?[4]

إِذۡ دَخَلُواْ عَلَيۡهِ فَقَالُواْ سَلَٰمٗاۖ

(२५) वे जब उनके यहाँ आये तो सलाम किया, (इब्राहीम) ने सलाम का उत्तर दिया

सलातिल मुसाफिरीन बाबुत तरगीबे फिद दुआये वज़ ज़िक्रे फी आखिरिल लैले वल एजाबति फीहि)

[1] محروم (महरूम) से अभिप्राय वह है जो आवश्यकता होने पर भी नहीं माँगता, तो उसके योग्य होते हुए भी उसे लोग नहीं देते। अथवा वह व्यक्ति है जिसका सब कुछ आकाश तथा धरती की आपदा के कारण नाश हो जाये।

[2] अर्थात वर्षा भी आकाश से होती है जिससे तुम्हारी जीविका पैदा होती है तथा स्वर्ग-नरक तथा पुण्य एवं दण्ड भी आकाशों में है जिनका वादा किया जाता है।

[3] إِنَّهُ में सर्वनाम संकेत है उन विषयों तथा निशानियों की ओर जो वर्णित हुई।

[4] هَل प्रश्नवाची शब्द है, जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चेतावनी (सूचना) है कि इस कथा का ज्ञान तुझे नहीं, अपितु हम तुझे प्रकाशना द्वारा सूचित कर रहे हैं।

قَالَ سَلٰمٌ قَوْمٌ مُّنكَرُونَ ﴿٢٥﴾

(तथा कहा ये तो) अपरिचित लोग हैं ।[1]

فَرَاغَ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٦﴾

(२६) फिर (चुपचाप जल्दी-जल्दी) अपने परिवार वालों की ओर गये तथा एक मोटे बछड़े का (माँस) लाये ।

فَقَرَّبَهُۥٓ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

(२७) तथा उसे उनके पास रखा और कहा आप खाते क्यों नहीं ?[2]

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا۟ لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَٰمٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

(२८) फिर दिल ही दिल में उनसे भयभीत हो गये,[3] उन्होंने कहा कि आप भयभीत न हों,[4] तथा उन्होंने (आदरणीय) इब्राहीम को एक ज्ञानी पुत्र के होने की शुभसूचना दी ।

فَأَقْبَلَتِ ٱمْرَأَتُهُۥ فِى صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

(२९) तो उनकी पत्नी ने आश्चर्य में आकर[5] अपने मुख पर हाथ मार कर कहा कि मैं तो बुढ़िया हूँ, साथ ही बाँझ ।

قَالُوا۟ كَذَٰلِكِ قَالَ رَبُّكِ ۖ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلْحَكِيمُ ٱلْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

(३०) उन्होंने कहा कि हाँ तेरे प्रभु ने इसी प्रकार कहा है, नि:संदेह वह हिक्मत वाला एवं जानने वाला है ।[6]

---

[1]यह अपने मन में कहा, उनको संबोधित करके नहीं कहा ।

[2]अर्थात खाना सामने रखने पर भी उसकी ओर हाथ ही नहीं बढ़ाया तो पूछा ।

[3]भय का संवेदन इसलिए किया कि आदरणीय इब्राहीम ने सोचा कि यह आने वाले किसी अच्छे विचार से नहीं आये हैं बल्कि बुरे इरादे से आये हैं ।

[4]आदरणीय इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मुख पर भय के चिन्ह देखकर फ़रिश्तों ने कहा ।

[5] صَرَّةٍ (सर्रतिन) का दूसरा अर्थ है चीख़ तथा पुकार अर्थात चीख़ते हुए कहा ।

[6]अर्थात जैसे हमने तुझसे कहा है, यह हमने अपनी ओर से नहीं कहा है अपितु तेरे प्रभु ने इसी प्रकार कहा है, जिससे हम तुझे सूचित कर रहे हैं । इसलिए इसमें न आश्चर्य की आवश्यकता है न संदेह की, क्योंकि जो अल्लाह चाहता है अवश्य होकर रहता है ।